



# महात्मा गान्धी

(पाँच अंका में एक जीवनी नाटक)

गोविन्ददास

१९१२

भारतीय विश्व प्रकाशन

फर्रार—बिन्सी

मुख्य विज्ञेया

भारती साहित्य मन्दिर

(एस० एन्ड एन्ड कम्पनी से सम्बद्ध)

आतकप्रती रोड

नई दिल्ली

दम्बारा

दिल्ली

माहिरी गेट

आतकप्रती

आतकप्रती

लखनऊ

मूल्य २२०

---

मुख्य कार्यालय श्री बहादुरगढ़ रोड दिल्ली

## निवेदन

घनन पञ्चमी नाटक को समाप्त कर जब पन्द्रह घोर लिखकर अपने नाटकों का सतक पूर्ण करने का मेरे मकल किया उस समय ही मोर्बा नाटक महात्मा गांधी की जीवनी पर निर्गुणा यह मेने निदधय कर मिया था । परन्तु इसी बीच बुद्ध-जयन्ती के लिए कुछ मित्रों की सगवान बुद्ध के जीवन पर एकाकी नाटकों की मांग हुई । यां तो मैं फरमाइश पर क्वचित् ही विग पाता हूँ परन्तु यह विषय ऐसा था कि तिम पर मेने एक दो नाटक लिग्ने का निगय किया और दो एकाकी नाटक मिला ही डाले । इसमिए गांधीजी पर जो मैं घपना मोर्बा नाटक लिग्ने वाला था उमका नम्बर एवमी दो होमया ।

इपर मेने एक नया प्रयाग कर कुछ जीवनी नाटक मिला है जिनमें प्रमुग है—भारतेन्दु रहीम और महाप्रभु बल्नभाचार्य । भारतेन्दु बाबू हरिश्चर घरुम रहीम गानगाना और बल्नभाचार्यजी की पूरी जीवनियां इन तीनों नाटकों में घायी है । उमी प्रकार महात्मा गांधी की पूरी जीवनी पर ही मैं यह नाटक लिग्ना चाहता था परन्तु मैं देखा कि गांधीजी की पूरी जीवनी पर मेरे लिए नाटक लिग्ना मरम काम न था । मेरे मानन पहली कटिना यह घायी कि उनके जीवन में सम्बन्ध रगन वाली जिन घटनाओं को हम नाटक में मिया जाय और जिनको छोडा जाय । गांधीजी की जीवनी हम देश के जीवन के हर शत्रु से इनका सम्बन्ध रगनी है और हम देश के मानव-जीवन के प्रत्येक शत्रु को उगहन इनका घबिह प्रभावित किया है कि उनके जीवन की सब क्या प्रभाव प्रयाग घटनाओं को भी एक ही नाटक में लाना कटिन नहीं घम म्बक है । फिर उन्हें शृंगमाकड बनना भी घपयिक कटिन जाय है । दूसरी कटिनाई मेरे मानने यह घायी कि गांधीजी से सम्बन्ध रगने वाली घटनाओं को घटिन हुए घकी इनका कम समय बीता है और मेरा क्यलि नन सम्बन्ध भी उन बननाघा से इनका घपिक रहा है कि मारिशियक

मुख्य विक्रता

भारती साहित्य मन्दिर

(एस० अन्ड एण्ड कम्पनी से सम्बद्ध)

आतफगली रोड

नई दिल्ली

कनारा

दिल्ली

माईहीरां गेट

आतन्वर

आतबाय

सबगढ

मूल्य २-३०

---

मुद्रक चरभी प्रेस बहादुरपुर रोड दिल्ली

## निवेदन

घरने पञ्चमी नाटकों को समाप्त कर जब पन्द्रह घीर निकलकर अपने नाटकों का एक पूरा करने का मेरे संकल्प किया उस समय ही मोर्चा नाटक महात्मा गांधी की जीवनी पर निर्गुणा यह मेरा निरूपण कर दिया था। परन्तु इसी बीच बुद्ध-जयन्ती के लिए कुछ मित्रों की भगवान बुद्ध के जीवन पर एकदली नाटकों की माँग हुई। यों तो मैं फरमाइश पर सब चिन्त ही विन पाता हूँ परन्तु यह विषय ऐसा था कि जिन पर मेरे एक या नाटक मिलने का निर्णय किया और दो एकदली नाटक मिल ही जाने। इसलिये गांधीजी पर जो मैं अपना मोर्चा नाटक मिलने वाला था उसका नम्बर एकदली का हो गया।

इसपर मेरे एक नया प्रयोग कर कुछ जीवनी नाटक मिले हैं जिनमें प्रमुग है—भागेन्दु रहीम और महाप्रभु बन्धुभाषार्य। भागेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र अष्टम रहीम गानगाना और बन्धुभाषार्य की पूरी जीवनीयों इन तीनों नाटकों में छापी है। उसी प्रकार महात्मा गांधी की पूरी जीवनी पर ही मैं यह नाटक लिखना चाहता था परन्तु मन देना कि गांधीजी की पूरी जीवनी पर धरे लिए नाटक लिखना असम्भव था। मेरे मायन पहली बटिनाई यह छापी कि उनके जीवन में सम्बन्ध रखन वाली चिन घटनाओं को एक नाटक में लिया जाय और चिनको छोडा जाय। गांधीजी की जीवनी हम देश के जीवन के हर क्षेत्र में इतना सम्बन्ध रखती है और हम देश के मानव-जीवन के प्रत्येक टुक को उन्हाइ इतना अधिक प्रभावित किया है कि उनके जीवन को सब क्या प्रदान प्रदान घटनाओं का भी एक हा नाटक में वाला बलि नहीं घन शक है। फिर उन्हें अंगुणाबद्ध करना भी अत्यधिक कठिन कार्य है। दूसरी बटिनाई मेरे मानने यह छाया कि गांधीजी से सम्बन्ध रखन वाली घटनाओं को घटित हुए घपी इतना कम समय बीता है और मेरा व्यक्ति मन सम्बन्ध भी उन घटनाओं न इतना अधिक रहा है कि कारिणिक

कृतियों के लिए जिस निरपेक्ष दृष्टि की आवश्यकता होती है वह इन कृति में भी पायी जाय। मेरे लिए तीसरी कठिनाई यह उपस्थित हुई कि गान्धीजी के मुँह ने कही हुई बातें इतनी अधिक हैं और सार की दृष्टि से भी उनमें इतना अधिक सार भरा हुआ है कि उनके कथनों में से किन कथनों को नाटक में रखा जाय और किन को छोड़ा जाय।

फिर गान्धीजी पर एक नाटक तभी लिखा जा सकता है जब उन पर अब तक जो कुछ लिखा जा चुका है उनका सम्मेलन किया जाय और मुझे उनके सम्पर्क के तथा उनके कार्य में सहयोग देने के जो अनुभव हुए हैं उनका भी मैं विवेचन कर सकूँ।

इन समस्त कठिनाइयों को दूर करने का मैंने प्रयत्न किया है साथ ही उन पर अब तक जो कुछ लिखा गया है उसके सम्मेलन तथा मुझे उनके सम्पर्क के और उनके कार्यों में सहयोग देने के जो अनुभव हुए हैं उन पर ही यह नाटक प्रवर्तित है।

इस नाटक में मैंने अपनी दृष्टि से उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को छाँटकर उन्हें श्रुतमात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। घटनाओं के घटाने में निराले होने पर भी तथा उनके साथ व्यवहार में सम्पर्क रहने पर भी एक ग्राह्यदृष्टि के नाट्य मूल निराले रहने की कोशिश की है। उनके कथनों में जो ही कुछ महत्त्वपूर्ण कथनों को चुनकर मैंने उन्हें इस नाटक में रखा है और यह स्पष्ट किया है कि कोई भी बात उनके मूल से ऐसी न बहना जाय जो कथनों में या भाषणों में उक्ताने न बनी हो। हाँ इनका प्रयत्न हुआ है कि उनसे किसी स्थान के कथनों को किसी अन्य स्थान पर भी रखा गया है बिना इसके नाटक का गठन ही होना असम्भव था। सम्भव है मैंने अपनी दृष्टि से उनके जीवन की किन घटनाओं को महत्त्वपूर्ण माना है उनसे कथनों का सम्बन्ध हो और कथनों की दृष्टि से या घटनाओं के प्रति महत्त्वपूर्ण हाँ न हो गया है। यही बात उनके कथनों के सम्बन्ध में भी हो सकती है। परन्तु इन मामलों में मेरे कथनों को घटाने दृष्टिकोण में ही कथनावली है।

मैंने घटाने का नाम ही भूमिका में लिखा है कि नाटक और

मिनेमा का सम्मिश्रण आवश्यक है। इस प्रकार का सुकृत सम्मिश्रण मैने स्वयं मुगल और अमेरिका में देखा है। अपने भूदान नाटक में मैं कुछ जोड़ित पात्रों का भी साया हूँ। 'मरुषप' नाटक यह सभी भाँति किया जा सकता है। यह भी मैने अमेरिका में देखा है और इस टीक्नीक का बर्ता मैं अपने भूदान-यज्ञ नाटक के अपने निवेदन में ध्यायेवार कर चुका हूँ।

इस नाटक में नाटक और निवेदन का सुब सम्मिश्रण हुआ है और जोड़ित अथवा पाँके दिन पूर्व हो गये हुए पात्र साये गये हैं। जब महात्मा गांधी का ही नाटक में साया गया है तब जिस प्रकार वे साये जा सकते हैं उन्ही प्रकार अन्य ऐसे पात्र भी।

मग यह दावा रहा है कि मेरे अधिकांश नाटक रंगमंच पर खड़े जा सकते हैं। भिन्न भिन्न स्थानों पर वे गये गये हैं। यह नाटक भी रंग मंच पर साया जा सकता है। इस नाटक में मैं एक प्रयत्न और भी किया है। वह यह कि मधुवा नाटक मय मिनेमा के कुर्जों के गाना जा सक मिनेमा के गाना का छोटा-सा भी कबल युग नाटक रंगमंच पर साया जा सक और नाटक के अधिकांश दृश्य एकाधिया के स्था में भी गये जा सके।

इस नाटक के गीतों का सम्बन्ध मैं भी बहुत देना आवश्यक है।

- (१) यह नाटक भारत की स्वतन्त्रता के युग का एक प्रकार का 'निर्माण' नाटक कारण 'म' मय के गीतों गौरीय गीत 'अर्थात् 'बन्धुमात्रम्' 'जन गण मन और 'सन्डे का गान' 'म' नाटक में साये है।
- (२) अगतयोग आगानत और अमर' मयापण के समय का पाठ बहुत प्रचलित है उनमें से दो गीत इसमें रख गये हैं।
- (३) गांधीजी का प्रायः भाषण मैं आ गान गान बात है और उन गीतों में आ गुरु बहुत शिव के जैसे "बन्धु जन तो तने बहिन" ऐसे बात गीत 'म' है।
- (४) मरुषप जन में गांधीजी के प्रसिद्ध उतराम का मरुषप के समय का गीत मुगल स्वतन्त्रताप टावरु के गाना या बर इसमें साया है।



(१) इतिहास घण्टीका के एक जुलूस में जो एक मीठ इस नाटक में रखा गया है वह उस समय के बाद मोहनदासजी त्रिवेदी ने रखा था परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उस काम का कोई मीठ न मिलने पर इसे वहाँ रख दिया गया। इस मीठ को न रखकर यदि इन स्थान के लिए कोई नया मीठ तैयार करवाया जाता तो भी वह उस काम का तो होता नहीं। इसलिए यह मीठ प्रसंग के अनुकूल होने के कारण ही इसे इस स्थान पर रखना अनुचित नहीं समझा।

मुझे इस नाटक के मिलने में जिन हिन्दी-भाषेजी लोगों ने सहायता मिली है उनका उस्तख कर लेना भी आवश्यक है—

महात्मा गांधी कृत—पारमरुमा टू न इज नाइ हिन्द-स्वराज्य घन-  
 टचबिलिटी माई रिनीशन सरयाप्रह इन साठव घण्टीका घम परबदा  
 मंदिर, मिनीकिटड सैटम अहिंसक समाजवाद की घोर तर्बोदय देहली-  
 डायरी टिम्हूमकर कृत—महात्मा गांधी रोमा रामा कृत—महात्मा  
 गांधी मुई फिसर कृत—दि लाइफ घाफ महात्मा गांधी प्यारेमान  
 कृत—महात्मा गांधी (दि सेटर फम) पणिक फास्ट गांधियन टैक्नीकल  
 इन माइर्न बफड पदटाभि नीतारम्मेया कृत—बापम का इतिहास  
 निर्मलकमार बोस कृत—मिनेषघम्म घाय गांधी बालाजी मोविन्दजी  
 देमाई कृत—ए गांधी ण्यासाजी कापी एड धाई म्यू हिम—एरीटिड  
 बाई मी० एम० गुक्ता बनमासापरील और मुसीला नय्यर कृत—हमापी  
 'बा' बिन्दुभारती का 'गांधी घक' भी महादेव देमाई की डायरी  
 थी जबाहरमान नहुम घोर डाक्टर राजगुरुप्रसाद की पारमरुमा।

—शोविम्बदास

मुख्य पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र :— (नाटक में प्रवेश के अनुसार जिन्होंने नाटक में संभाषण किया है।)

- १-मोहनदास गांधी
- २-पुतली बाई
- ३-कस्तूरबा
- ४-योग मेहता

नाटक के नायक  
मोहनदास की माँ  
मोहनदास की पत्नी  
मोहनदास का बाल्यकाल का एक मित्र

- ५-बरमचन्द
- ६-बारा घण्टुम्मा

मोहनदास के पिता  
दक्षिण घन्टीवा क एक भारतीय  
व्यापारी जिसके एक मुबद्दम क  
सए गांधीजी दक्षिण घन्टीवा  
गये थे

७-तैयब

दारा घण्टुम्मा मठ के मुबद्दम के  
प्रतिवादी

- ८-भाषटम
- ९-हरिताम
- १०-मणिनाम
- ११-बैतन बैक

दारा घण्टुम्मा मठ के गारे बराम  
गांधीजी क बड़े पुत्र  
गांधीजी क द्वितीय पुत्र  
गांधीजी के दक्षिण घन्टीवा  
जमन गांधी मायी  
गांधीजी के दक्षिण घन्टीवा  
घर का मायी  
दक्षिण घन्टीवा क प्रयाण मन्त्री

१२-पोतक

१३-जवरल रमदुल

(२) दक्षिण अफ्रीका के एक जुजूम में जो एक चीज इस मातृक में रखा गया है वह उस समय के बाद माहममामजी द्विबरी न रखा या परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उस काम का कोई चीज न मिलने पर इसे वहीं रख दिया गया । इस चीज का न रखकर यदि इस स्वान के लिए कोई नया चीज तैयार कठपया जाता तो भी वह उस काम का तो होता नहीं । इसलिए यह चीज समय के अनुकूल हान के कारण बने इसे इस स्थान पर रखना अनुचित नहीं समझा ।

मुझे इस मातृक के विस्तृत दै जिन हिन्दी-बपारी लोगों में सहायता मिली है उनका उल्लेख कर देना भी आवश्यक है—

महात्मा गान्धी कृत—आत्मकथा टूथ इव पाठ हिन्दु-स्वराज्य धन टबबिनिटी माई रिमीशन सन्पादक हन मातृक अफ्रीका प्रथम बरबदा-बहिर मिनीकिल्ड नैटर्न अहिंसक समाजवाद की ओर, सर्वोदय अह्नी-बापरी टिडुनकर कृत—महात्मा गान्धी रोमा रोना कृत—महात्मा गान्धी मुर्क प्रियार कृत—दि नाइल घाए महात्मा गान्धी प्यारेमान कृत—महात्मा गान्धी (दि नेटर फम) एरिक फास्ट, गान्धिपन टेक्नीकल इन माइल बन्ड पदुयमि मीनारम्मिया कृत—बापिम का इतिहास निर्मनकनार बोय कृत—विमरपन्ड फाम गान्धी बालाशो बोपिन्दी देनाई कृत—ए गान्धी गन्धानाशो गान्धी एव फाई मू हिम—एडीटिड बाई श्री० एम० मुक्ता बननामा पठित और मुगीमा मल्पर कृत—हमाटी 'बा' विरुधभापरी का 'गान्धी अंक' श्री महारज देनाई की बापरी श्री जवाहरलाल नेहरू और डाक्टर उबेन्द्रप्रसाद की आत्मकथा ।

—गोविन्ददास

## पहला प्रश्न

### पहला बृहस्पति

स्वान पौरवन्दर में कर्मबन्ध के मन्वान के बाह्य वा शौगान

ममय मग्घ्या के मदीन

[आकाश बादलों से घाफटावित है। पीछे की ओर कर्मबन्ध गांधी के तिमंगले मन्वान के बाहरी भाग का कुछ हिस्सा दिखता है। शौगान में मोहनदास गांधी अग्य बासकों के साथ गिम्सो-डग्घा ऐस रहे हैं। मोहनदास की प्रबस्या छ-सान बय की है, ये गेहुँए रग के बुबसे-मतसे बामक हैं। पीतो घोर कुरता पहने हैं। सिर लुसा है और सिर के बास सम्भे नहीं हैं। कुछ बेर ऐस बसता रहता है और ऐस में बासकों की बिसबारियाँ। एकाएक आकाश में मूय का प्रकाश दिमायी बेता है। मोहनदास का ध्यान एबबम ऐस से उषटकर मूय के प्रकाश की ओर जाता है।]

मोहनदास दगो, देगा मूरज निकमा है। वा का माहर मूरज के दान बगना है क्योंकि मूरज के दान बिना तो वह भुगी ही रह जायगी।

[मोहनदास बोड़ते हुए अपने घर के भीतर जाने हैं। इधर रस बसता रहता है और उधर मोहनदास पुनमीबाई की सेकर बाहर निबसते हैं। पुनमीबाई बुडाबस्या के समीप जाती हुई

## सहायता गान्धी

१४-तिलक	}	भारत के प्रसिद्ध नेता बिनका १९१८ की अमृतसर कांग्रेस में सर्वोपरि स्थान था
१५-बिप्लवजी दास		
१६-मुहम्मद अली जिन्ना		
१७-अडालम्ब		
१८-मदन मोहन मालवीय		
१९-मोतीलाल नेहरू		
२०-राजेश्वर प्रसाद		
२१-नरसिंह बितावण्डि केसकर		
२२-सरोजिनी नायडू		
२३-देवदास गान्धी		
२४-महादेव माई देसाई		
२५-प्यारेलाल		
२६-मीरा बहिन		
२७-रवीन्द्रनाथ ठाकुर		
२८-जवाहरलाल नेहरू		
२९-बसन्त भाई पटेल		

### स्थान

पोरबन्दर, राजकोट डरजन—इलियन अण्ड्रीका में मैदान प्राप्त का एक  
नगर, जिनिकस—इलियन अण्ड्रीका के मैदान प्राप्त का एक नगर, प्रेयो  
रिया—इलियन अण्ड्रीका की राजधानी अमृतसर, नागपुर, बारदोली  
अहमदाबाद लाहौर, लखन पूना बम्बई नयी दिल्ली

### समय

सन् १८७५ ईस्वी से सन् १९५८ की १२ फरवरी तक ।

पुतसीबाई भगवान् की यही इच्छा है कि आज मुझे मोहन न मिले।

मोहनदास (उसी मुद्रा में) भगवान् ! उनकी इच्छा !

पुतसीबाई हेय माह्नियाँ मेरा इस बात पर अखण्ड विश्वास है कि इस मृष्टि में भगवान् की इच्छा बिना एक पसा तक नहीं हिमना।

मोहनदास (उसी प्रकार बिचारते हुए) विश्वास ! भगवान् की इच्छा में विश्वास !

[ दोनों कुछ बेर तक धाकाग की घोर बेसते रहते हैं। ऊपर सड़कों का गिस्सी डप्टे का सेस चलता रहता है घोर किस कारियाँ भी। ]

सधु यदनिका

दूसरा दृश्य

स्थान रात्रकोट में लम्बेड हाईस्क्रून का धामय

नमन गोमय पहर

[ धामय में इस समय बेचस मोहनदास और उनके गिअक है। मोहनदास की धपस्या धर १२ यय की है। शरीर पर बे एक सम्बा-सा बोट और घोती पहने ह। सिर पर खरी के काम की टोपी है। उनका गिअक प्रौढ़ धबस्या का है। वह भी बोट और घोती पहने है, सिर पर बाठियाबाड़ी दग की पगड़ी बंधी है। ]

प्रौढ़ा महिला हैं। बर्ण गेहुँआ, क्षरीर न बुबसा न मोटा। बेशभूषा गुजराती महिलाओं के सबूबा साड़ी और धोली। थोड़े से भूषण, लसाट पर लाल टिकसी। मोहनबास और पुतलीबाई के घर से आते आते सूप को फिर से चावस ठक सेते हैं।]

मोहनबास (आकाश की ओर देखकर धिस्ताकुल स्वर में) फिर बादलों ने ढाँक लिया सूरज को वा मने अभी अभी उसे देखा था।

पुतलीबाई छेने देखने से क्या होगा दर्शन ता सूर्य के मुम्के करना है।

मोहनबास पर, वा में निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि सूरज आकाश में है।

पुतलीबाई (हँसते हुए) मैं यह कहाँ कहती हूँ कि नहीं है।

मोहनबास फिर जब तुम मनती हो कि यह आकाश में है तब माजन क्यों न करोगी ?

पुतलीबाई माहनियाँ ये बातें तक की नहीं होतीं थडा की हाती ह।

मोहनबास (विचारते हुए गम्भीरता से) तक ! थडा !

पुतलीबाई थटा मैने नियम सिया है इस चातुर्मास में सूर्य के दर्शन के बिना भोजन न करना। जीवन में जो भी प्रतिज्ञा करसी जाय उस निमाना ही सब्बा धर्म है।

मोहनबास (और भी गम्भीर हो विचारते हुए) प्रतिज्ञा ! धर्म !

पुतलीबाई प्रतिज्ञा और धर्म पर बसना ही नैतिकता है।

मोहनबास (उसी तरह विचारते हुए) नैतिकता !

पुतसीबाई भगवान् की यही इच्छा है कि आज मुझे भोजन न मिले।

मोहनदास (उसी मुद्रा में) भगवान् ! उनकी इच्छा !  
पुतसीबाई दस माहिनियाँ भरा इस बात पर अक्षण्ड विश्वास है कि इस सृष्टि में भगवान् की इच्छा बिना एक पत्ता तक नहीं हिलता।

मोहनदास (उसी प्रकार विचारते हुए) विदवास ! भगवान् की इच्छा में विदवास !

[दोनों कुछ देर तक धाकाग की ओर बोलते रहते हैं। ऊपर सड़कों का गिल्ली डण्डे का खेल चलता रहता है और किस-कारियाँ भी।]

सद्यः यवमिका

दूसरा दृश्य

स्थान गाबरोट में एमरुड हार्डिन्स का आलय

समय तीसरा पहर

[आलय में इस समय बस मोहनदास और उनके शिष्य हैं। मोहनदास की अवस्था अब १२ घण्टे की है। दारीर पर वे एक सम्भ्रान्त बोट और घोती पहने हैं। सिर पर खरी के काम की टोपी है। उनका गिलहर प्रौढ़ अवस्था का है। यह भी कोट और घोती पहने हैं सिर पर बाठियाबाड़ी टंग की पगड़ी बंधी है।]



शिक्षक (उत्तेजनापूर्वक) यह क्या किया सुने ! मैंने तुम्हें इशारा भी किया कि केटिस का के ई टी टी एस ई स्प्रेडिंग गसत है और तू पास के विद्यार्थी की स्मेट से नकल कर ले । पर -पर क्या कहूँ तूने मेरे इशारे को गहीं समझा या तुम्हें अपने साथी की पट्टी दिखायी न दे रही थी ?

मोहनदास नहीं मैंने आपका इशारा समझ लिया था और मुझे अपने साथी की पट्टी भी दिख रही थी ।

शिक्षक तब ?

मोहनदास मने नकल करना अनैतिक समझ ।

शिक्षक (श्रेष्ठ से) नैतिक और अनैतिक ! जमीन म से तो उगा नहीं है और नैतिकता और अनैतिकता की व्याख्या करता है । मूर्ख कहीं का !

मोहनदास (विचारते हुए) मूर्ख ! मूर्ख तो मैं जरूर हूँ बुद्धि मन्द है और स्मरण-शक्ति कच्ची ।

शिक्षक तभी तो केटिस के सदुदा सामान्य शब्द का भी स्पर्श गमत सिखा । दूसरे किसी लड़के ने किसी शब्द के हिज्जे में गसती नहीं की । सेरी मूर्खता को जबह से मेरी कक्षा का सारा गिर्बाई खराब हो गया । स्कूल के इन्स्पेक्टर मिस्टर गिल्स (Giles) मेरी कक्षा के विषय में जानने जब क्या लिखेंगे !

सधु यबमिका

## तीसरा दृश्य

म्यान राजकाट में कर्मचान्द्र के मकान का एक कमरा

समय रात्रि

[साधारण-सा कमरा है, थोड़ा-सा सामान। दो पर्तें बिछे हुए हैं। पर्तों के पास भूमि पर एक गद्दी बिछी है, जिस पर मोहनदास और कस्तूरबा बठे हुए हैं। मोहनदास की अवस्था अब बौद्धिक रूप की है। वे लगभग बसे हो हैं, जैसे इसके पहले के दृश्य में हमने उन्हें उनके विद्यालय में देखा था। इस समय के कुरता और धोती पहने हैं, सिर खुला है। कस्तूरबा की अवस्था भी मोहनदास के बराबर ही है। ये गौरवण की सुन्दर बालिका हैं। साड़ी और धोती पहने हैं, दारीर पर कुछ भूषण भी हैं। मोहनदास कस्तूरबा की ओर पीठ किए हुए हैं और कस्तूरबा मोहनदास की ओर। कुछ बेर इसी अवस्था में निस्तब्धता रहती है।]

मोहनदास (धीरे-धीरे अपने घाय से) इसके पहने मरी दो, हाँ, दो बार मगार्न हुई थी उन दाना में से अगर वार्ड भी घाती तो इस इमम ठा बही अच्छी होगी। मरा बहना माननी जहाँ म बहना यहाँ जाती, जहाँ म न बहना वहाँ न जाती। जिसमे बहना उमम घोमनी, जिसमे म बहना उममे न माननी।

कस्तूरबा (तमबकर उठकर मोहनदास के सामने धा) यह कार्ड पर है या बहना ' म अपनी ममुगान में घायी है या अमगाने में ' यहाँ जाऊँ यहाँ न जाऊँ इममे बामू उमसे

न बोमू कोई बात हुई ! एक बार नहीं सौ बार, हजार बार, सास बार, करोड़ बार सुन तो इस तरह मैं बंदी के समान नहीं रह सकता। जहाँ इच्छा होगी जाऊँगी, जिससे इच्छा होगी बोमूंगी जो इच्छा होगी करूँगी।

मोहनबास (जसी तरह तमककर) देखें कैसे जाती है जहाँ इच्छा होती है वहाँ, देखें कैसे बोलती है जिससे इच्छा होती है उससे, देखें कैसे करती है जो करना चाहती है वह। सुन से, तू भी सुन से मैं हूँ तेरा पति ! भारत में स्त्री के लिए पातिव्रत-धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं। मेरी आज्ञा ही तेरे लिए सब कुछ है। इस लोक की दृष्टि से भी और परलोक की दृष्टि से भी।

कस्तूरबा चौदह बय की अवस्था में तुम यदि धरम-धर्म जानते हो तो मेरी उमर भी तुम्हारे जितनी ही है। मैं भी अपना धरम-धर्म जानती हूँ।

मोहनबास मैं हूँ पढ़ा-लिखा और तू है अपढ़ ठोठ।

कस्तूरबा बड़े पढ़े-लिखे ! उस दिन तो कह रहे थे गधा विद्यार्थी हैं। अपने साधियों तक स ता बात करने की हिम्मत नहीं, कोई मजाक न उड़ा वे इसके लिए काँपा करते हो मुझ पर बसाते हो ये रोब-दाब।

मोहनबास क्योंकि तू है मेरी पत्नी और मैं हूँ तेरा पति।

[कुछ बेर निस्तब्धता।]

कस्तूरबा (मोहनबास के कंधे पर हाथ रखकर कुछ प्रेम भरे शब्दों में) न जाने कितने दिन तक तो योस नहीं और आज बोमे तो फिर भगड़ा हो गया।

मोहनबास (कस्तूरबा के कंधे पर पर हाथ रख) म नही बोना  
तो तुम्हीं कहीं बोमीं तुम्ही बोस सेतीं ।

कस्तूरबा तो धात्म-सम्मान का तुम्हीं न ठका से लिया है ।  
दूसरों की ता कोई इज्जत भावरू है ही नहीं । मैं पत्नी-सिगी  
नही हूँ तो क्या हुआ, मेरे बापू और बा मे बिना पढ़ाये  
निगाय ही मुझे जो शिक्षा दी है वह जीवन भर मुझे मही  
गन्ना दिगानी रहगी ।

मोहनबास (हंसते हुए) और पढ़ने मिलन की जो बगर रह  
गयी है वह म पूरी कर दूंगा ।

कस्तूरबा (बीच निश्वास छोड़कर) कहीं पढ़ाते हो तुम दिन  
गन मढ़ा करत हो ।

मोहनबास (अपने दोनों हाथ कस्तूरबा के दोनों कंधों पर रख  
कर अत्यन्त प्रमत्त बृष्टि से कस्तूरबा की ओर देखते हुए)  
मढ़ना ही है प्यार नही करना ?

कस्तूरबा (हंसते हुए) वह भी करते हो ।

मोहनबास देगो अब हम में मढ़ा नही होनी चाहिए ।

कस्तूरबा यदि तुम मेरी स्वतन्त्रता में बाधा डालाग और कदी  
बनाकर स्वयंभू तो मगड़ा जन्म होगा ।

मोहनबास अच्छा अच्छा । छोटी अब य बातें, हम अब मगड़ा  
न कर मरुधे प्रेमियों के समान रहेंग ।

[दोनों एक दूसरे की अत्यन्त प्रेम भरी बृष्टि से देखते ह ।  
कुछ देर निस्तम्भता ।]

कस्तूरबा : अरुण तो अब बापी रात बीत गयी, माया न आय ?  
यसो बुझानी है ।

मोहनबास धमी से ? और यत्नी बुझाने की क्या जरूरत है ?

कस्तूरबा (ठठाकर हँसकर) हाँ धेरेरे में कहीं कोई साँप

निकल आया तो ! भूत भी आ सकते हैं और चोर भी !

मोहनबास आसिर, साँप भूत चोर होते ही हैं।

[कस्तूरबा फिर जोर से हसती है।]

### सद्यु पबनिका

#### बीबा बुध

स्वान राजकोट में एक बेरया के मकान का कमरा

समय रात्रि

[छोटा-सा कमरा है। उसकी दीवारों पर दीशे, तस्वीरें आदि लगी हैं। छत से कुछ हाँकियाँ और मोले सटक रहे हैं। भूमि पर बरी बिछी है जिस पर सफेद कपड़े से ढकी गद्दी है और गद्दी पर तकिये लगे हैं। मोहनबास और शोक मेहताब का प्रवेश। मोहनबास की अवस्था अब लगभग पन्द्रह वर्ष की है। शोक मेहताब उनसे कुछ बड़ी उम्र का है। मोहनबास कीट और घोसी पहने हैं, सिर पर अब वे काठियावाड़ी पगड़ी बाँधे हैं। शोक मेहताब सूब लगाई है। कुरता और डोसा पाजामा पहने हैं, सिर पर बौहरों के सबूत टोपी लगाये हैं।]

शोक मेहताब धुनियाँ में डर से ज्यादा बुरी बीज कोई नहीं।

कितनी कोशिश करता हूँ तुम्हारे दिम से इस बेहूवे डर को निकालने की।

मोहनदास चायद ही कोई इतनी कोशिश करे, भाई, जितनी तुम करते हो !

[बोनों गद्दी पर बैठ जाते हैं।]

दोस मेहताब इमीलिए आज तुम्हें राजकोट की घेंघरी-से-घेंघरी गलियो में स लेकर यहाँ आया । कहो कहीं कोई माँप, भूत खोर मिला ?

मोहनदास आज में उतना डरा भी तो नहीं ।

दोस मेहताब इसका तो एक सबब यह भी है कि तुमने गोस्त पाना शुरू कर दिया । मने तुम्हें अंग्रेजी का जा घर रटाया है वह बिनाकुन सम्झा समझा । कहो तो उसे एक दफा फिर ।

मोहनदास

Behold the mighty Englishman  
He rules the Indian small  
Because being the meat-eater  
He is five cubits tall

दोस मेहताब ठीक ।

मोहनदास पर एक बात जानते हो ?

दोस मेहताब क्या ?

मोहनदास पहल भा बहा है और फिर कहना है पहल दिन जब मन माँप गया मुझे जान पटा जैसे मैं बाई सूना बमड़ा पडा रहा है । बड़ी मुश्किल में उस चाब-आयकर गन स उतारा । जो मैं मबनाहट हुई और रात्र को मपन में लिगा कि मेरे पैर में एक मेमना म-म कर रहा है ।

[शेख मेहताब का प्रवृत्तास । कुछ बेर निस्तम्बता ।]

शेख मेहताब भय तो वैसे नहीं होता न ?

मोहनबास किसी भी बात की आदत जो हो जाती है ।

शेख मेहताब यकीन रखना गोदत खाने की बजह से तुम भी खूब ढँचे-पूरे और ताकतवर हो जाओगे ।

मोहनबास तुम्हें उम्मीद है कि मैं तुम्हारे माफिक हो जाऊँगा ? उसी तरह दौड़ और कूद में भी प्रवीण ? इतना ठिगना और दुबसा-पतला न रहूँगा ?

शेख मेहताब उम्मीद नहीं, कहा म यकीन है । अभी तुम पन्द्रह-सोलह साल के होंगे क्यों ?

मोहनबास और क्या ।

शेख मेहताब इन्सान अठारह साल तक बढ़ता है और मोटा-ताजा तो उसने बाद मरते तक होता रहता है । तुम सानों में जितने ढँचे नहीं हुए हो गोदत खाकर वो सास में हो जाओगे । और जहाँ आज लाया हूँ, रात को ही यहाँ घाना हो सकता है । यहाँ घान की आदत होने पर अँधेरे-से-अँधेरे में भी म कही साँप बिलेंगे न कहीं भूत, और म चोर । इस तरह सपकते हुए यहाँ आओगे कि क्या कहूँ ।

मोहनबास पर यह जगह कौनसी है ?

शेख मेहताब यह ऐसी जगह है जो निस को कुम्बत और राहत दोनों देती है । मुना है कभी मुमने हिन्दुओं का ही मफज मंगसमुती ?

मोहनबास (कुछ अकपकाकर) हाँ, हाँ मुना है । मंगसमुती पाने बेदया । तो-तो यह बेदया ना मकान है ?

दोस मेहताब बेदया का मजान न कह इस भगवन्मुखी का मन्दिर  
 बहो । (मोहनदास की घोर घूरकर देखता है ।) घरे तुम  
 तो धबड़ाये आते हो ! क्यों, तुम सोच जिन गुमाइयों के  
 पागिद हा उनका मन्दिर इकती कहलाने हे म ?

मोहनदास हाँ हबेमी ।

दोस मेहताब घोर य गुमाइ किरमन के मानने वाले हे ?

मोहनदास हाँ हमारे सम्प्रदाय का नाम बम्बन-सम्प्रदाय है  
 घोर हम भगवान् वृष्ण क पूजक ह ।

दोस मेहताब बह किरमन क्या था उसके हालात महीं मुने  
 पड़े ? गापिया के घर में पूजा करना था, उन्हीं क साथ  
 पूजा करना था नाचा करना था घोर न जाने क्या-क्या  
 किया करता था ।

मोहनदास बह बिसकुम दूसरी बात थी दग मेहताब । ( कुछ  
 खबर ) य ममभना है हम लाग बबली जगह नहीं घाय ।

दोस मेहताब घरी बुजदिनी वही तुम्हारी पुरानी बुज-  
 निना फिर उभर रही है । मभी मभी भाई जी घानी  
 हांगी । म उन्हें मीयार हान का बहकर तुम्हें लन घाया  
 था । उगरे घोर उनका साथ दग यह तयाम हिषकिवाहट  
 बापूर हा जायगी ।

[मोहनदास सिर झुका सेने ह । कुछ बेर निस्तरप्यता ।  
 थोड़ी ही बेर में एक दरवाजे मे देगावाज पहने हुए एक बेण्या  
 का प्रवेग । उसके पीछे एक लकसबी, दो सारणी वाले घोर एक  
 मजोरे वाला आते हैं । बह बेण्या आवाज बजाती है । मोहनदास  
 का सिर नहीं उठता ।]



शोक मेहताब : (वेश्या के आबाब का उत्तर देते हुए) सीजिए, वार्डजी। बादे के मुताबिक में से आया मज्जीर करमचन्द के छोटे साहबबादे मोहनदास को।

वेश्या पर इनका तो सिर ही जमीन में घुसा जाता है।

शोक मेहताब पहने-पहन आये हैं आपके दोसतखाने पर। धीरे धीरे ठीक हो जायेंगे। कोई घञ्छा-सा नाच दिखाइए।

[तबला ठनकता है, सारंगी और मज्जीरे बजते हैं, नाच होता है।]

[शोक मेहताब बीच-बीच में "वाह-वाह" करता है। मोहनदास यद्यपि सिर झुकाये ही रहते हैं, फिर भी कभी-कभी आँसू उठा इस नाच को देखते हैं। नाच पूरा होने पर शोक मेहताब, तबसखी, सारंगी वाले और मज्जीरे वाले को जाने का संकेत करता है और ये जाते हैं।]

शोक मेहताब (मोहनदास से) कहो कैसा नजारा रहा ?

[मोहनदास कोई उत्तर नहीं देते। कुछ बेर तक निस्तब्धता।]

शोक मेहताब घञ्छा, म धमो आया।

[शोक मेहताब का भी प्रस्थान। अब उस कमरे में मोहनदास और वेश्या बौ ही रह जाते हैं। फिर निस्तब्धता। मोहनदास को पसीना आ जाता है और वे बेब से जमास निकाल उस पसीने को पोंछते हैं। उनके चेहरे पर उड़ती हुई हवाइयाँ बेल वेश्या का घट्टहास। वेश्या का घट्टहास मुम मोहनदास की बुष्टि उसकी ओर उठती है। वेश्या उनके निगट आ जाती है।]

वेश्या यह गर्मी का मौसम तो नहीं है आपको पसीना बंसे आ

रखा है ?

मोहनदास पसीना पसीना !

वेश्या आप अपने हाथ में तिये क्याम स अपना पसीना पाछे रहे ह और यह भी नहीं मानूम कि आपकी पसीना आ रहा है ?

[वेश्या का पुन अट्टहास। वह मोहनदास के और निकट बढ़ अपना हाथ उनकी टुडडो में लगा उनका मुँह ऊँचा करती है। मोहनदास कुछ भिम्ककर पीछे हट जाते ह।]

वेश्या (कुछ लीजकर) प्रेरे बँस आदमी हा तुम ?

[अब वेश्या मोहनदास के गले में अपनी भुजा डालना चाहती है। वे और अधिक भिम्ककर और पीछे हटते ह।]

वेश्या (और लीजकर) मने तो त्रिन्दगी में एमा आदमी नहीं दगा ! चल निकल यही म।

[मोहनदास का दीघना से प्रस्थान।]

सप्त यवनिका

## पाँचवाँ बुध्न

स्वान राजकोट में करमचन्द के मकान में करमचन्द का कमरा  
उपय रात्रि

[बूढ़ और रोगी करमचन्द्र अपने पसंग पर बैठे हुए ध्यान से एक पत्र पढ़ रहे हैं। करमचन्द गेठुएँ रंग के साधारण जेन्साई और शरीर के व्यस्त हैं। बूढ़ावस्था और कमजोरी के कारण वे कृश हो गये हैं। मुँस पर की भुर्रियाँ इस कृशता की और अधिक घोलक हैं। वे एक बीसा-सा कुरता और धोती पहने हुए हैं। कुछ बेर तक करमचन्द के पत्र पढ़ते रहने के कारण निस्तब्धता रहती है। अब करमचन्द उस पत्र के कुछ वाक्यों को जोर-जोर से पढ़ने लगते हैं।]

करमचन्द "माई का बह सीमा मैंने पुराया है। यह मेरी पहली खोरी है बापू। और अब मैं जिन्दगी में कभी खोरी न करूँगा।" वा ने एक दिन मुझे नैतिकता की बात कही थी धर्म की बात कही थी मैं वा की उन बातों को भूला नहीं था पर कुसंग में पढ़ गया था। आप मुझे सत्संग की बात कहा करते हैं। सचमुच कुसंग से बुरी धन्य कोई चीज नहीं। -- वा ने मुझे प्रतिज्ञा की बात भी कही थी। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ बापू अब कभी कुसंग न करूँगा। अपने इस अपराध को इस खत के जरिये मैं खुद प्रकट करता हूँ। मुझे इस अपराध पर इस जुर्म पर, इस पाप पर सजा बड़ी-से-बड़ी दीजिए। पर वह सजा दकर मुझे माफ़ माफ़ भी कर दीजिए।

[ करमचन्द्र फिर से घुप हो एकटक उस पत्र को बेसते रहते हैं । कुछ बेर निस्तब्धता । ]

करमचन्द्र मोहनियाँ मोहनियाँ ।

[ मोहनदास का सिर झुकावे हुए धीरे-धीरे प्रवेश । मोहनदास को बेस करमचन्द्र के नेत्रों से धमधारा बह निकलती है । मोहनदास पिता के निकट पहुँच उनको घोर बेसते हैं और स्वयं रो पड़ते हैं । वे पसंग के मीचे पिता के निकट रोते-रोते बैठ जाने ह । करमचन्द्र रोते रोते ही उस पत्र को फाड़कर फेंक देने ह । एक विचित्र प्रकार का काण्डिक दृश्य । ]

यबनिवा

## दूसरा अङ्क

### पहला दृश्य

स्वात दक्षिण अफ्रीका में नटाल प्रान्त के डरबन नगर के बिस मकान  
में मोहनबास रहते थे उसका एक कमरा

समय प्रातःकाल

[कमरा पश्चिमी ढंग से सजा हुआ है। मोहनबास अपने  
अनेक साधियों के साथ बैठे हुए हैं। मोहनबास की अवस्था अब  
चौबीस वय की है। वर्ण गेहूँभा, न बहुत ऊँचे न ठिगने, न मोटे न  
बुबने। सिर पर सँवारे हुए कासे बाल, बेश-भूषा पश्चिमी।  
मोहनबास के पास अनेक मुसलमान, हिन्दू भारतीय बैठे हैं।  
सभी की बेश-भूषा पश्चिमी ढंग की है। इन्हीं में बाबा अय्युस्सा  
सेठ और लैप्यब सेठ भी हैं।]

मोहनबास (बाबा अय्युस्सा सेठ से) हाँ दादा अय्युस्सा सेठ,  
आपके मुकदमे की बजह से जो यह एक साल मैंने दक्षिण  
अफ्रीका में बिताया वह मेरी जिन्दगी में एक बहुत बड़ी  
जगह रहेगा।

बाबा अय्युस्सा और इस एक साल में आपने यहाँ बसे हुए  
हिन्दुस्तानियों के दिनों में जो जगह कर ली है वह अपनी  
जिन्दगी में कोई हिन्दुस्तानी भी भूमने वाला नहीं है।

सैय्यब आपने यहाँ सबसे जाती छाल्लुकात कर लिये हैं। आप प्राय ये दादा ग्रन्थुस्ला सेठ के बकीस होकर। दादा ग्रन्थुस्ला सेठ की और मेरी सड़ाई चल रही थी। आपने कचहरी के बाहर पचायत करा इस मामले को निपटाया। पचायत का फैसला दादा सेठ की तरफ गया, मुझे उन्हें जो सैतीस हजार पौण्ड और मुकदमे का खर्च देना पड़ा वह अगर औरत देना पड़ता तब तो मेरा दिवाभा ही निकल जाता। दादा सेठ के बकीस होने पर भी आपन आसान किस्त बन्दियाँ करा मुझे यथा लिया और आज आपकी जगह मेरे दिस में भी उतनी ही है जितनी दादा ग्रन्थुस्ला सेठ के दिस में।

मोहनबास आप भोग तो मुझे याद ही रखेंगे। परन्तु, मैं तो इस एक बरस में जो कुछ इस दक्षिण अफ्रीका में पाया है वह मेरी जिन्दगी बना देगा। आज मैं दक्षिण अफ्रीका छोड़ रहा हूँ। ऐसे मौका पर मनुष्य को बीते हुए जीवन की बितनी बातें याद आती ह और भाग के जीवन के लिए वह कितने मनसूबे बाँपना है। करीब उन्नीस साल की उम्र में बैरिस्टर होने को मैं भारत से इगर्नैण्ड गया दो साल घाठ महीन वहाँ रहा। घठारह-मौ इक्यान्वे में वहाँ मैं जग्मभूमि को सीटा और दो बप बाद ही यहाँ आ गया। दो साल की भारत की बकालत में तो कुछ बन न पाया पर इस एक साल में यहाँ जा कुछ किया उससे जान पड़ता है कि जब हिन्दुस्तान में ठीक ढंग से अपना काम बना सँगा। फिर भारत में जब इगर्नैण्ड गया उस बका माताजी

न जो प्रतिज्ञाएँ करायी थीं उन्होंने मुझे सच्चा भ्रादमी बना दिया। आज वे प्रतिज्ञाएँ भी मुझे किसनी याद आ रही ह। सुनेंगे आप लोग उन प्रतिज्ञाओं को ?

बाबा प्रबुस्ला जरूर।

सेव्यब नेकी और पूछ-पूछ।

अनेक भारतीय (एक साथ) जरूर बठाइए।

मोहनदास उन्होंने कहा था धराब औरस और मांस को न खूना और इस प्रतिज्ञाओं के बचन में बंधे रहने के लिए उन्होंने कहा था (कालर के भीतर घेंगूठा और जेंगसी बाम तुलसी की कण्ठी निकास उसे बिचाले हुए) तुलसी की इस कण्ठी को गले में बांधे रखना। म, भाइयो ! अपनी उन प्रतिज्ञाओं पर पूरी-पूरी ईमानदारी के साथ बसा हूँ और इस कण्ठी को भी बरकरार रखा है। जसा मैंने अभी कहा माँ के सामने की हुई प्रतिज्ञाओं ने मुझे भ्रादमी बना दिया। एक चीज मुझे सच्चा भ्रादमी बनाने में और सहायक हुई।

एक भारतीय वह कौनसी ?

मोहनदास गीता। बीस बप की उम्र में लंदन में मैंने पहले-पहल इस पुस्तक का सर एडविन धारनोल्ड द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा। उस समय मुझे इस बात पर सबमुष बड़ी दाम मामूम हुई कि बीस बप की अवस्था में उस पुस्तक को पढ़ रहा हूँ जिसकी हिन्दू धर्म में बही जगह है जो कुरान की इस्लाम में और बाइबिल की ईसाई मजहब में।

[एक भारतीय का हाथ में एक घल्लवार लिये हुए शीघ्रता से प्रवेश।]

भाग्यनुक भारतीय (घल्लवार को मोहनदास के सामने रखी हुई टेबिल पर पटक घबड़ाये हुए स्वर में) तुम तुम जा रहे हो, गांधी ? पर आज के इस 'नेटान मरकरी' को तो देखो। नेटान की सरकार एक कानून साने वाली है जिसके मुताबिक दक्षिण अफ्रीका में रहनेवाले हर हिन्दु स्वामी का या तो पाँच साल के बाद हिन्दुस्तान मौटना होगा या दक्षिण अफ्रीका में मफ की हैसियत में रहना होगा अथवा अगर वह आजाद आदमी की हैसियत से रहना चाहता है तो उस अपने लिए और अपने हर कुटुम्बी के लिए हर साल तीन पौण्ड टक्क दना होगा जो यहाँ के मजदूरों की प्राची तनम्याह के बरोबर हो जाती है। (एक कुर्सी पर बैठ जाता है।)

[मोहनदास घल्लवार के उन अड्डों को ध्यान से पढ़ते हैं। उपस्थित सब लोग स्तरय से उनकी ओर देखते हैं। कुछ बेर निस्तब्धता।]

मोहनदास (घल्लवार पढ़ने के बाद उपस्थित लोगों की ओर देखते हुए) हाँ यह कानून तो मफमुब हा बहुत बुरा है। एक भारतीय की ओर प्रायक जाने के बाद यहाँ हम लोग का कोई गमा मन्गार ही न रह जायगा, जो हम सब का बर्दा कर इस कानून का विगय करे।

बुगरा ग्गी हाथ में प्रायका अफ्रीका छान्ना कहीं तक मुना निब हागा ?



तीसरा प्राप खुद ही विचार कीजिए।

चौथा विचार क्या करना है हम लोगों को ऐसी हासत में

छोड़कर ये जा ही नहीं सकते।

कुछ लोप (एक साथ) हरगिज नहीं, हरगिज नहीं।

बाबा अम्बुस्ना में समझता हूँ प्रापका अभी तो जाना न हो  
सकेगा।

तैय्यब मेरी राय भी यही है।

मोहनबास (विचारते हुए) प्राप सब यदि मुझे न जाने देंगे तो  
मैं कैसे जा सकता हूँ ?

कुछ सोग (अत्यन्त प्रसन्नता से) ठीक, बिसकुम ठीक।

मोहनबास देखिए, इस बक्त इस देश के भारतीयों की जो हासत  
है उसमें यहाँ के भारतीयों को यहाँ के गोरों के समान  
हक मिलें, यह मैं नहीं कहता। जो भावनाएँ यहाँ के  
गोरों में भारतीयों के खिलाफ मरी हुई हैं, वे कोई बानून  
बनाकर दूर नहीं की जा सकती। इनके दूर करने के लिए  
तो लगातार मेहनत करनी होगी और घिसा का प्रसार  
करना होगा। लेकिन दक्षिण अफ्रीका ब्रिटिश साम्राज्य का  
एक हिस्सा है और ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिकों को बानून  
की मजद में समान अधिकार मिलने चाहिए। कानूनों को  
जब व्यवहार में लाया जायगा उस बक्त वर्तमान  
परिस्थितियों में गोरों का परदापत पहर होगा, लेकिन  
सिद्धांत में अगर भारतीय अपनी हीनता को मंजूर कर  
मेंगे तो उनकी भारत-सम्मान की भावनाएँ हमेशा के लिए  
कुचम जायेंगी।

कुछ व्यक्ति ठाक, बिलकुल ठीक।

मोहनदास फिर दक्षिण अफ्रीका की यह जमीन हरी भरी हिन्दुस्तानिया की महानत से हुई है। उन्होंने अपना खून का पसीना बना इस जमीन का उवरा किया है। इस तरह के कानून ऐसे भारतीयों के खिलाफ लाये जाते बड़ी से बड़ी बेइतियाफी है।

कुछ व्यक्ति ठीक बिलकुल ठीक कहते हैं आप।

मोहनदास इस दक्षिण अफ्रीका के हिस्से में ये गीरे अल्प मत में हैं। थोड़े से लोग ज्यादा लोग पर इस तरह जुल्म करें और उनका यह जुल्म हमला बसता रहे यह गर मुमकिन बात है। मैं मैं इस काम के लिए जब तक जम्हरत होगी यहाँ रहूँगा यहाँ के हिन्दुस्तानिया की ठीक हालत की जानकारी कराने के लिए अगर भारत जाना होगा तो वहाँ जाऊँगा और बिनापत जाना होगा तो वहाँ।

आगन्तुक अब हमें बोर्ड पिनता नहीं है।

राब (एक साथ) जरा भी नहीं जरा भी नहीं।

[कुछ बेर निस्तरपता]

मोहनदास (विचारते हुए) और अब यहाँ के सार काम के लिए हमें एक मज्या पटी करनी होगी।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) जम्हर, जम्हर।

एक व्यक्ति उगबे लिए जितने भी धन की जम्हरत होगी हम लोग देंगे।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) बगर बगर।

एक व्यक्ति मय आपका मामिल गलत है।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) जरूर ।

मोहनबास (बिचारते हुए) नहीं, मैं तो आप लोगों से मासिक रूप में कुछ नहीं सूंगा ।

बाबा प्रबहुस्ना तब आपका खर्च कैसे चलेगा ?

मोहनबास देखिए, मित्रो एक तो सार्वजनिक काम के लिए किसी को इस तरह कुछ खना नहीं चाहिए, फिर कोई बड़ी रकम तो हरगिज नहीं । आप लोग अपना कानूनी काम यदि मुझे देंगे तो मैं अपना काम चला सूंगा ।

सब (एक साथ) सब लोग देंगे सब लोग ।

[कुछ बेर निस्तब्धता ।]

मोहनबास धीरे दक्षिण, इस संस्थाका माम हमें 'कांग्रेस' रखना चाहिए । भारत में कांग्रेस क्या कर रही है आप जानते हैं ?

कुछ व्यक्ति (एक साथ) ज़ूब ज़ूब जानते हैं ।

मोहनबास हाँ कि अब तक भारतीय कांग्रेस से मेरा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहा है पर उसके प्रति मेरी बड़ी घृणा है इसलिए यहाँ की इस संस्था का नाम भी मैं कांग्रेस ही रखना ठीक समझता हूँ ।

सब (एक साथ) बहुत ज़ूब ।

सधु यवनिका

## दूसरा दृश्य

स्वान् डगबन का बन्दरगाह

ममय प्रपराह

[पीछे की ओर बन्दरगाह का कुछ हिस्सा बिलायो बेला है। सामन सड़क है। बायीं ओर से मोहनदास और साघटन का प्रवेग। मोहनदास पश्चिमी डग का सूट पहने हैं व सिर पर काठियावाड़ी पगड़ी है। साघटन बूढ़ाबस्त्रा का साधारण कब और शरीर का गोरा ह। वेदा-मूया पश्चिमी।]

साघटन ही यहाँ से हिन्दुस्तान जाकर आपने जो यहाँ से भारतीयों के प्रान पर बहाँ हरे रंग की किताब छपवायी उसकी कुछ बापिया यहाँ भी पायी थी और उसी किताब के कारण यहाँ के गोरे बहुत अधिक बढ़ने लगे हैं।

मोहनदास लकिन मिस्टर साघटन उस हुरा किताब में जोई एव भी लगी बात बता दे जो सच नहीं है। लगी मन्वी बातों को सुनने के लिए भी साधमी तयार नहीं। झूठ-मूठ यह कहें कि मैं बोरखेबड तथा मात्तग जहाजों से घाठ मौ भाग्यवामिया को दक्षिण अफ्रीका पर हमला करने का साया हूँ उन घाठ मौ घात्तमिया का बापिम हिन्दुस्तान भ्रमना पाहें और यहाँ को मरबाग भारत में प्यग है इस बहाने पर तर्क न्तिन तक जहाजों के इन मुसाफिरो को इन जहाजों में ही बँट गये लगी बातें घात्तयजनक है।

साघटन मन्वी बात सुनने का भी यही के साग कहीं तयार ह। पाप पहन भारतीय ह जिन्होंने माउप अफ्रीका में बम हुए

हिन्दुस्तानियों के मामले को इतने स्पष्ट ढंग से दुनिया के सामने रक्खा है और यहाँ की सरकार तो गोरों की सरकार है उनसे डरती है।

मोहनदास (घारों घोर बेसकर) अब तो यहाँ कोई नजर नहीं पड़ रहा है।

साघटन (घारों घोर बेसते हुए) हाँ सबेरे तो आपने जहाज में से देखा ही होगा कि यहाँ भीड़ इकट्ठा हो गयी थी, जब लोगों ने देखा कि जहाज से आप नहीं उतरे तब उन्होंने समझा कि आप शायद इस जहाज से भागे ही नहीं इसलिए भीड़ हट गयी। मैं समझता हूँ कि नैटाल सरकार के एटार्नी जनरल मिस्टर हैरी कौम्ब की यह राय ठीक नहीं थी कि आपको रात को छिपकर यहाँ से निवृत्तना चाहिए, क्योंकि फिर तो आपका यहाँ रहना और काम करना ही कठिन हो जाता। इसीलिए मैं यहाँ आया। गौरा होते हुए भी यबासत के वेद ने मुझे न्याय के साथ रहना सिखाया है। मैं चाहता हूँ आप सबकी जानकारी में मेरे साथ आँ।

मोहनदास यद्यपि मिस्टर कौम्ब ने यह राय भगड़े को बचाने को ही दी थी पर मैंने भी छिपकर जाना मुनासिब नहीं समझा।

साघटन यहाँ आपके गिजाफ जो कुछ हुआ है यद्यपि उसमें मिस्टर कौम्ब भी यहाँ के गोरों के साथ रहे हैं लेकिन यहाँ कोई बारगाव न हो आय इसी कारण उम्हाने यह राय दी थी इस में भी मानता हूँ। फिर भी उनकी राय से

दूसरे]

दूसरा प्रश्न

में सहमत नहीं।  
मोहनदास म भी आपकी राय से ही सहमत हूँ। (कुछ रुक-  
कर) ता अब हम सोग चलें।

साघटन ही मरी समझ में भी चलना ही चाहिए।  
[बाहिनी घोर से दो गोरे सड़कों का प्रवेश।]  
एक ओ। गांधी।

दूसरा गांधी गांधी।

दोनों (एक साथ) गांधी गांधी।

पहला थू द हिम।

दूसरा मराउण्ड हिम।

[इन सड़कों की आवाज सुन कुछ गोरे भा जाते ह।  
मोहनदास घोर साघटन चलने के लिए बाहिनी घोर से भागे  
बढ़ते ह पर भाये हुए गोरों क कारण बढ़ नहीं पाते। भीड़ बढ़ती  
जाती है। कुछ ही बेर में कुछ गोरे मोहनदास को साघटन के  
पाग से तीखकर उन्हें पीटना प्रारम्भ करते ह, कुछ पर  
बसते ह, कुछ ई टें और कुछ उण्डे।]

सद्यु यवनिका

## तीसरा दृश्य

स्नान करान में मोहनदास का एक कमरा

समय सम्प्रा

[कस्तूरबा और उनके दो पुत्र हरिसास और मणिसाल बड़े हुए हैं। कस्तूरबा की अबस्था अब लगभग बत्तीस वर्ष की है। वे और-बण की अत्यन्त सुन्दर महिला हैं। रेशमी साड़ी और ससूका पहने हैं, और थोड़े-से आभूषण। हरिसास की अबस्था लगभग १४ वर्ष की और मणिसाल की लगभग १० वर्ष की है। इन दोनों की बेशभूषा पश्चिमी ढंग की है।]

कस्तूरबा लगभग तीन बरस के बाद फिर से जन्म भूमि के दक्षन होंगे। तुम दोनों को याद है भारत की ?

हरिसास बहुत अच्छी तरह याद है, बा।

मणिसाल और मुझे भी थोड़ी-थोड़ी याद है।

कस्तूरबा मैं तो सन् १८६७ की १३ जनवरी की उस घटना को कभी भूल ही नहीं सकती जब हम भारत से यहाँ लौटे थे। तुम दोनों को और मुझको तो तुम्हारे बापू ने रस्तम जी के यहाँ भिजवा दिया था पर खुद घायल से वेदस। कितनी बुरी तरह उस दिन उन्हें गोरे ने पीटा था। वह तो पुलिस सुपरिण्डण्ट एमक्रेण्डर की पत्नी और एमक्रेण्डर में उन्हें बचा लिया नहीं तो या तो उसी पिटाई में उनकी दम निकल जाती या वे गोरे उस रात को रस्तम जी के मकान का जमा डामते।

हरिसास मुझे उस दिन की एक बात सबसे ज्यादा याद है।

कस्तूरबा कौन सी ?

हरिलास एनेब्रैण्डर ने उन गोरों को खुषा करने के लिए  
घण्टी में एक गाना गाया था ।

मणिसाल ही ही मने तो बाद में उन गाने की दो बहिर्मा  
याद करती है—

And we'll hang old Gandhi  
on the sour apple tree

कस्तूरबा घोर जिन दुष्टों में यह सब किया उनमें से कुछ क  
पकड़ जान पर भी तुम्हारे बापू ने उन पर कोई मुकामा  
बसाना मजूर न कर उह छुड़ा लिया । (कुछ ठहरकर)  
ऐसी कुछ घटनाया जो छोड़कर बाकी तो इस देश के हमारे  
संस्मरण बहुत घण्टे ही है । हम यही मनु १८६६ में घाय यह  
१६०१ है । इन पाँच वर्षों में हमन यही गुद भी घपना भया  
किया यही के हिन्दुस्तानिया का भी यही के गौरा का भी  
घोर घण्टे सरकार का भी । तुम्हारे बापू सत्समत स करीब  
साय लयमा गान कराले ह गुब गान म रहते है, हिन्दुस्तान  
निया का मना करते ह । बोर मझाई में यही के गारों के  
प्रति महानुभूति रगी घोर घण्टी को भी मदद दी ।

हरिलास इसीलिए तो इस बार जम भूमि को लौटने समय यही  
हिन्दुस्तानिया में इनकी बड़ी बिना दी है ।

मणिसाल इस बिदाई में माने चाँदी घोर ब्रयाह्मण का  
जिना मामान है ।

कस्तूरबा घोर मुझे जा हीरे का नकमम दिया है बर तो  
सबकुछ ही बहुत सुन्दर घोर बीमती है ।



हरिसाल पर बा इस सारी बिदाई को क्या हमें मंजूर करना चाहिए ?

कस्तूरबा (कुछ आश्चर्य से) मंजूर करना चाहिए ! मंजूर क्या करना चाहिए मंजूर कर ही लिया है ।

हरिसाल और अगर हम मंजूर करने के बाद भी इस यहीं के हिन्दुस्तानियों के भस्म के लिए सौटा दें तो ?

कस्तूरबा ओह ! समझी ! तुम्हारे बापू ने तुम दोनों को अपनी घोर मिसाया दिव्यता है । कम मुझसे भी कह रहे थे कि इस सारे सामान का सौटा देना चाहिए । पर क्यों सौटा देना चाहिए, यह मेरी तो समझ में ही नहीं आता । तुम्हारे बापू ने यहाँ के भारतीयों के लिए जितना किया है उसके सामने य भेंट तुच्छ है । हम इन्हें क्यों सौटाएँ ?

[मोहनबास का प्रवेश ।]

मोहनबास इसलिए सौटाएँ कि धम के संग्रह में मैं बहुत बड़ा भय दंगला हूँ । जवाहरात का यह संग्रह जायदाद के संग्रह से भी बुरा है । जब मने दूसरों से इस तरह का संग्रह बनाने का आग्रह किया है तब हम खुद इस प्रकार के संग्रह को करें यह किमी भी तरह मुनासिब नहीं । तुम जबर पहननी भी बहुत कम हो फिर हम इन सब भेंटों का क्या करेंगे ?

हरिसाल हाँ बा इस मारे सामान को तो सौटा ही देना चाहिए ।

मजिसाल जबर जबर सौटा देना चाहिए ।

कस्तूरबा (मोहनबास से) तुम्हारा इन भेंटों को चाह न रखना

पायद ठोक होगा। तुम जवाहरगण की परवाह नहीं करते, तुम उन्हें पहनते भी नहीं हा, इन बच्चा का भी तुमने धपन मत का कर लिया है य ता वही कहेंगे जो तुम कहते हो। मन भी तुम्हारी इच्छा क अनुसार जेवर पहनना प्राय छाड़ दिया है। पर जब मेरी पुत्र-बधुएँ धार्येंगी सब उन्हें ता गहनों की जम्गत होगी।

मोहनदास इन सबका भी धभी धावी नहीं हुई है श्रीर जिस तरह हमारा बास-विवाह हुआ हम इनका करन बाल भी नहीं ह। जब य बडे हो जायेंग सब खुद धपन विषय में तय करेंग। फिर हम एमो बहुरें साम बाल भी नहीं ह जो जवर की गोबीन हा।

बस्तूरबा यीबन में धच्छी चीजें मदा धच्छी लगती ह।

मोहनदास यदि एमा भी हुआ तो विवाह के समय देखेंग। म कही भागा ता जाता नहीं है उस वक्त तुम मुझमें कहना।

बस्तूरबा (बोध से) तुम म कहेंगी! धब म तुम्हें गूब जान-बूझ गयी है। तुमन मरे ही मव गहन म सिय तुम दाग जवर बहुरा का! सबकों का ही भिगारी बनान की बाणिग कर रहे हा। भेंटा का यह मामान हरगिज नहीं सौटाया जायगा। फिर वह हार का नबन्म ता मरा है। उम सौटाने धाने तुम कौन हो ?

मोहनदास यह मबन्म तुम्हारी मबाधा क निग निया गया है या मेरी मबाधा के निग तुम्हें भेंट किया गया है।

बस्तूरबा (घाँसों में घाँसु भरकर) तुम्हारी मबाधें क्या मर बिना हो मकता यी ? धगर तुमन जनता की मबा का है

तो मैंने दिन रात तुम्हारी । दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ । क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं ? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है ? मेहतरों और नीच जातियों के गन्दे काम तक ।

[कुछ बेर निस्तब्धता ।]

मोहनदास (कुछ बेर बाद निश्चयात्मक स्वर में) ओ कुछ हो, किसी अन-सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं सेना चाहिए । सन् १९०१ में मिली हुई बिदाई का यह सामान ही नहीं, पर सन् १८९६ में जब हम भारत गये थे और उस वक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी लौटा ही जायेंगी । इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी ।

सधु यवनिका

बीषा दृश्य

स्नान फिनिक्स में मोहनदास का कमरा

समय तीमरा पहर

[पीछे की घोर कुछ जेबाई पर फार्म के मकाम का कुछ हिस्सा बिसायो देता है । उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है । फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बँटे हुए बातें कर रहे हैं । ये सभी परिचामी डग के वस्त्र पहने हैं ।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कागज है) हाँ 'इण्डियन उपीनियन' के इस पद्य में १९१३ की चौदह माघ का केप कासनी के उच्च न्यायालय का यह पूरा फैसला छपा है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब माग्तीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियाँ न रहकर रक्त बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम पारसी सभी जातियों की भारतीय महिलाएँ।

तीसरा हमीं ने इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि का आवाद किया और हम पर ही एक-एक-एक बँस आस्थाधार बिये जा रहे ह, इन मीरों के द्वारा।

चौथा हाँ, पहला कानून बना—हर भारतीय का हर साल तीन पौंड टैक्स देने का। दूसरा यह काला कानून जिसके अनुसार हर घाठ साम क ऊपर की उम्र क हिन्दुस्तानी को धपन को रजिस्टर कराने, धपने फिगर प्रिंट दन और धपन सर्टिफिकेट का हमेना धपन माष रपन का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईगाई शादियाँ ही बानूनी मानी जायेंगी।

पाँचवाँ सायन ही दुनियाँ में एमा कोई मुस्य हा जिसमें इन तरह क कानून, बान बानून बनें और धपनलों के पैंगल हा।

छठवाँ न बही गगन का ही गमा गमा नाष होया।

सातवाँ ही गारा के हायना में हम टहन नही गवन। उनके बनया और नाटकपरा में हम जा नही गवन। रनों क उनके

तो मैंने दिन रात तुम्हारी । दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ ! क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं ? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है ? मेहतरों और नीच जातियों के गन्दे काम तक ।

[कुछ बेर निस्तब्धता ।]

मोहनदास (कुछ बेर बाब मिश्रवात्मक स्वर में) जो कुछ हो किसी जम-सेबक का कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं बना चाहिए । सन् १९०१ में मिली हुई बिदाई का यह सामान ही नहीं पर सन् १८९६ में जब हम भारत गये थे और उस बक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी मोटा दी जायेंगी । इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी ।

सपु यजनिका

चौथा दृश्य

स्थान चिनिक्म में मोहनदास का फार्म

समय तीजरा गहर

[पीछे की ओर कुछ ऊँचाई पर फार्म के मकान का कुछ हिस्सा दिखायी देता है । उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है । फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बैठे हुए बातें कर रहे हैं । ये सभी पश्चिमो डंग के बस्त्र पहने हैं ।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कायब है) ही 'इण्डियन उपीनियन' के इस प्रश्न में १९१३ की चौदह माघ का केप कालनी के उच्च न्यायालय का यह पूरा फैसला छपा है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब भाग्यीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियाँ न रहकर रत्न बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम पारसी सभी जातिवा की भारतीय महिलाएँ।

तीसरा हमी में इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि का धाबाद किया और हम पर ही एक-दर-एक नई धर्याधार किये जा रहे ह, इन गोरों के द्वारा।

चौथा ही, पहला कानून बना—हर भारतीय का हर सात तीन पीढ़ टैक्स देने का। दूसरा वह बाला कानून जिसके अनुसार हर घाठ मान के ऊपर की उम्र के हिन्दुस्तानी का धपने का रजिस्टर कराने, धपन फिगर प्रिट इन और धपन सटिफिकेट का हमला धपन माप रपन का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईसाई धादियों ही कानून माना जायेंगी।

पाँचवाँ धाय ही दुनियाँ में एगा बोर्ड मुक्त है जिसमें इस तरह के कानून, कानून कानून बने और धर्याधार के पैगमें है।

छठवाँ न कही गगभर का ही एसा नया नाथ हागा।

सातवाँ ही, गोरों के हाथों में हम टहर नहीं मकन। उनसे बनना और नाटकपरा में हम जा नहीं सकते। रेला के उनसे

सा मैंने दिन-रात तुम्हारी । दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ ! क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं ? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है ? मेहतयों और नीच जातियों के गन्दे काम तक ।

[कुछ बेर निस्तम्भता ।]

मोहनदास (कुछ बेर बाद निश्चयपक्व स्वर में) जो कुछ हो किसी जन-सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं लेना चाहिए । सन् १९०१ में मिली हुई बिदाई का यह सामान ही नहीं पर सन् १९१६ में जब हम मारत गये थे और उस वक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी सौटा दी जायेंगी । इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी ।

सधु पबनिका

बीबा बुरय

स्थान फिनिक्स में मोहनदास का फार्म

समय तीसरा पहर

[पीछे की ओर कुछ जेबार्ड पर फार्म के मकाम का कुछ हिस्सा दिखायी देता है । उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है । फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बैठे हुए बातें कर रहे हैं । ये सभी पश्चिमी ढंग के कपड़े पहने हैं ।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कागज है) हाँ, 'इण्डियन उपीनियन' के इस घट्ट में १९१३ की चौदह माघ का केप कासनी के उच्च न्यायालय का यह पुरा फैसला छया है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब भारतीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियों न रहकर रसेस बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम, पारसी सभी जातियाँ की भारतीय महिमाएँ।

तीसरा हमीं ने इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि का धाबाद किया और हम पर ही एक-पर-एक कस अत्याचार किये जा रहे हैं इन गोरों के द्वारा।

चौथा हाँ, पहला कानून बना—हर भारतीय का हर मान तीन पीठ टीकम देने का। दूसरा वह काला कानून जिसके अनुसार हर घाठ माम के ऊपर की उन्न के हिन्दुस्थानी का धपन को रजिस्टर कराने, धपन विगार प्रिट इन धीर धपन मटिपिबेट को हमगा धपने माय रगन का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईमाई शादियाँ हा कानूनी मानी जायेंगी।

पाँचवाँ सायन ही दुनियाँ में एमा कोर्न मुन्क हा जिसमें इस तरह के कानून, कान कानून में और घदासनों के फैसल हा।

छठवाँ न कहीं रंगभंग का ही एमा नगा नाम होया।

सातवाँ हाँ, गांग के हाटना में हम टहर नहीं मरुन। उनके बनवा और नाटकपरा में हम जा नहीं मरुते। रमों के उनके



डिम्बों में बैठ नहीं सकते । द्राम तक में उनके बैठने की जगह अलग और हमारी अलग ।

छाठवाँ भरे, सबक पर चुपचाप बसते-बसते भी न जाने हम में से कितनों का कितनी तरह से अपमान हो जाता है ।

पहला और वह मसल यहाँ सच्ची हो रही है जिसमें कहा है—  
'मज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दबा हुई ।'

दूसरा हाँ गांधी ने अब तक कितने धाम्दोसन किये यहाँ की सरकार ने सिमाफ ।

तीसरा उन्होंने निहत्थों के लिए धर्याय का मुकाबला करने का एक नया रास्ता ही निकाल दिया ।

चौथा और कितना सुन्दर नाम रक्खा है उसका सरयाग्रह ।

पाँचवाँ उन्हें अग्रोमी का वैसिब रिजिस्टेन्स नाम अच्छा न लगा ।

छठवाँ हाँ, क्योंकि वैसिब रिजिस्टेन्स का उपयोग करने वाला यह मानता है कि उसके पास दूसरी तरह से सड़ने की ताकत नहीं अतः वैसिब रिजिस्टेन्स की सड़ाई कमजोर की लड़ाई होती है । पर सरयाग्रह की सड़ाई तो बसवान् की सड़ाई है ।

सातवाँ फिर जो वैसिब रिजिस्टेन्स करता है उसने मन में अपने विरोधी के लिए पूजा रखती है अथवा रखता है । सरयाग्रही के मन में तो विरोधी के लिए भी पूजा और अथवा की अथवा प्रेम और शान्ति रखती है ।

आठवाँ मगनमास गांधी ने बताया हुए सदाग्रह में उन्होंने सरयाग्रह शब्द बनाया ।

नवाँ इस सरयाग्रह की फिलामफी है सरय के अथवा के साथ

अपन विरोधी को कष्ट न द स्वयं कष्ट पाकर विरोधी का हृदय परिवर्तन ।

दसवाँ और गांधी के मतानुसार गत्याग्रही की कमी हार ली होती ही नहीं ।

पहला इस मध्य क आग्रह में गांधी न कितने कष्ट सहे ।

दूसरा जन भी गय ।

तीसरा हम उनक दण्डाभिषेक तक ने उन्हें गमन समझा ।

चौथा ही पहली बार जब वे सरकार से समझौता कर जेल से निकल तब कृष्ण ने कहा कि व पन्द्रह हजार पीण्ड गागय ।

पाँचवाँ कवन कहा इतना ही नहीं उन्हें बुरा तरह पीटा भी ।

छठवाँ पर बाहू गांधी बाहू । बिना किसी के बुर-भन कहने की परवाह किये डट रह अपनी बात पर ।

सातवाँ इमिनिंग विस्टर पोसक और बैलिनबक के सदृश गारे तक मात्र टनर माप ह ।

आठवाँ अब मात्र फिर न्युकामन स थार्सटारउन तक ३६ मीन चलकर मेटाम की सोमा पर मर्याग्रह हागा ।

पहला और इस दार के मर्याग्रह की विषयता होगी तममें म्रियया और बरबों का भी भाग लना ।

दूसरा इमीनिंग तो मात्र हमें गन धान्यातनों की ये सब न जान विननी बाने दार घा रही ह ।

[नेपथ्य में मात्र की ध्वनि सुन पड़ती है ।]

पहला सा और बानाएँ ता गोन गानी हुई खाना ही हा रही ह ।

[गीत की ध्वनि निकट आती जाती है।]

गीत

न हाथ एक घस्त्र हो,  
न साथ एक घस्त्र हो,  
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,  
हटो नहीं ! डटो वहीं !  
बड़े असो ! बड़े असो !

रहे समक्ष गिरि शिखर,  
तुम्हारा प्रण उठे निखर,  
मसे ही जाय तन धिलर,  
खो नहीं ! झुको नहीं !  
बड़े असो ! बड़े असो !

घटा धिरी घटूट हो  
घघर में बाल कूट हो  
बही अमृत का घूंट हा,  
जिये असो ! मरे असो !  
बड़े असो ! बड़े असो !

गगन उगलता आग हो,  
छिड़ा मरण का राम हो,  
सहू की अपने फाग हो  
अडो नहीं ! गड़ो नहीं !  
बड़े असो ! बड़े असो !  
असी नयी मिसाल हो  
असी नयी मजाल हो

बढ़ो मया बमाल हो  
रकी नहीं ! मुको नहीं !  
बड़े पसो ! बड़े पसो !

[कस्तूरबा का कुछ स्त्रियों के साथ उपर्युक्त गीत गाते हुए प्रवेश । उनकी अवस्था अब लगभग अवासीस वय की है । प्रौढ़ होने पर भी वे सुन्दर हैं । अब उनकी वेशभूषा अत्यन्त सादी है । शरीर पर कोई भूषण नहीं है । इन स्त्रियों के आते ही जो व्यक्ति पहले से यहाँ बैठे थे वे खड़े हो जाते हैं । स्त्रियों के पदघात ही मोहनदास एक पुरुषों के समूह के साथ आते हैं । इनमें भी बसन्त बक और भी पोन्नक भी हैं । मोहनदास की अवस्था अब लगभग अवासीस वय की है । उनकी बेदाभूषा पश्चिमी नहीं रही, वे पीछे के अङ्ग पर घुटने तक एक सफ़ेद डीसा पात्रामा पहने हैं, ऊपर के शरीर पर एक कुरता है । एक निवाड़ में बाँय बग्ये से बाहिनी घोर बमर पर एक धसा लटक रहा है । सिर खुला है, पर सिर के बालों पर मंगान घस गयी है । केसनबक और पोन्नक अघेड़ अवस्था में हैं, कुछ ठिगम पर भरे हुए शरीर के । वेगभूषा पश्चिमी । ]

मोहनदास बहनो और भाइया ! मुझ दग देग में घाय बरोब  
बीम बरग बीन गय । म मही घाया था दाग अघ्युन्ना मेठ  
ब तब मुबल्लम में उनका बहीम बनकर ।

एक व्यक्ति घोर फिर बन गय यहाँ बस हुए तय हिन्दुगानिया  
क यतीन ।

दूसरा नहीं नहीं मना ।

तीसरा मना क्या मय कुछ ।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) हाँ, सब कुछ सब कुछ ।

मोहनदास यहाँ माने के कोई एक साल बाद अम्बुल्ला सेठ का काम निपटने पर लौट रहा था भारत, पर उसी वक्त यहाँ के हिन्दुस्तानियों पर तीन पाँच बाला टैंक्स आ गया । मैंने वचन दिया अब तक अकूत होगी यहाँ रहूँगा ।

एक व्यक्ति धीरे खूब निमाया उस वचन को ।

दूसरा हाँ, वचन निमाने वाला हो तो ऐसा हो ।

मोहनदास तीन पाँच टैंक्स के कानून के बाद दूसरा वाला कानून आया आठ बरस की उम्र के ऊपर के हर भारतीय को रजिस्टर कराने का और तीसरा अब यह अशासित का फैसला आया कि ईसाइयों की शादियाँ ही कानूनी शादियाँ मानी जायेंगी । इन कानूनों के खिलाफ इस देश की सरकार से हमने जो अहिंसात्मक सत्याग्रह कर लड़ाईयाँ इन बीस बरसों में लड़ीं उन्हें आप में से अनेक भाई-बहन जानते हैं ।

एक व्यक्ति जानते क्या, आपकी आशामुसार सड़ते रहे हैं ।

मोहनदास हाँ आपकी मदद बिना मैं अनेसा क्या कर सकता था ? किशोरी बार आज मुझे याद आ रही है इन बीते हुए दिनों की सासकर हमारे टासस्टाय फार्म के गिबास के समय की और श्री गोपालकृष्ण गोखले के वशिण अफोका के बारे की । मेरी पक्की राय है कि अगर टासस्टाय फार्म न होता तो जो हम आज हो मये हैं वह न होने पाते और यदि गोखले यहाँ न आते तो हमारे पदा में भारत के आइसराय माड हाडिंग ने जैसा आपण दिया बीसा आपण के बीभी न देते ।

अनसमुदाय - ठीक, बिसकुन ठीक ।

मोहनदास इन सड़ाइया में जो कुछ हुआ उससे भी घाप में  
स कई बाकिफ ह । मुझे यहाँ क गोग ने ही गलत नहीं  
समझा पर कई बार हमारे भाइयों न भी ।

एक व्यक्ति बबनूफ प ब भारतीय ।

दूसरा बेबनूफ नहीं अहसान-परामोद ।

मोहनदास नहीं नहा किमी क लिए एमा न कहा । अपना  
अपना प्रवान तो ठहरा । उन्होंने मुझे मत्तन समझा इसना  
ही कहा जा सकता है ।

एक व्यक्ति यह आपकी उदारता है ।

कुछ व्यक्ति महान् उदारता महान् उदारता ।

मोहनदास मेरे लिए गार, गहारे जैसे किमी भी देग क रहने  
वान आदमी, सब बराबर ह । जिन गारा स म सड़ा है,  
उनक लिए भी मेरे मन में बार्द धुना नहीं है । म सबसे  
प्रेम करता हूँ धोर प्रगर किमी म सड़ना भी हूँ ता उसुनों  
पर । साथ ही जिनम सड़ना हूँ उसकी भी भर्मा क लिए ।

कुछ व्यक्ति धर्म है ! धर्म है !

मोहनदास पर जिन टैपर मे गारां को बनाया है उमी ने हम  
बुनिया का भी । जिन तरह गारों के एक गिर, दा प्रांग  
एक मान एव मूँह दा कान दो हाथ धोर दा पर ह  
उगी तरह हम बुनियों के भी । ईगा को मानन वाना कोई  
घातमी भी हमारे घातमी स नकन करे यह कम हो सकता  
ह ?

एक व्यक्ति प गारे एव ईगार्द हा सब ता ।

मोहनबास सब गोरों के लिए ऐसा न कहो। (कसनबक और पोसक की ओर इशारा कर) ये कसनबक और पोसक भी तो गोरें हैं। और भी कई गोरें भाई-बहन हमारे साथ रहे हैं। एक व्यक्ति ऐसे गोरों की जय हो !

कुछ व्यक्ति (एक साथ) कसनबक और पोसक की जय !

मोहनबास भादमी एक तरफ ईश्वर की पूजा करे और दूसरी ओर मनुष्य का तिरस्कार यह बात बनने सायक नहीं है। ईश्वर का नाम लेने वाले आस्तिक नहीं हैं लेकिन ईश्वर का काम करने वाले आस्तिक हैं। यह पृथ्वी परमेश्वर की है इस पर रहने वाले सब मानव एक हैं कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। एक को दूसरे से बड़ा समझना भारी पाप है।

कुछ व्यक्ति धन्य है !

मोहनबास इसीलिए मैं यहाँ के इस रंग भव को बड़े से बड़ा पाप मानता हूँ। इस पाप के तिलाफ्त भाव हम इन बीम बरसों की सबसे बड़ी अहिंसात्मक सड़ाई लड़ने को सत्याग्रह करने को बल रहे हैं। सत्याग्रह शब्द का अर्थ सत्य का प्रबलमन है। जो सदा रहता है वही सत्य है इसीलिए सत्य ही मेरे लिए ईश्वर है। विचार में सत्य, भाषा में सत्य और कृति में भी सत्य होना चाहिए। सत्य का रास्ता सीधा है पर सीधा। अहिंसा विना सत्य को नहीं बुँदा जा सकता। समय से अगर हम सत्य के रास्ते पर चलें और साधन ठीक रखें तो जन्मी हो या देर में माध्यमिन ही जाना है। इसलिए सत्याग्रही बह

है जो अपने जीवन को ईश्वर के अर्पण कर देता है। सम्झा सत्याग्रही ईश्वरी व्यक्ति होता है। इस दुनियाँ में ऐसा आदमी मुझसे जंग बिय बिना रह ही नहीं सकता। अर्थात् गोपण दबाव, निदयता का वह सामना करता ही है और यह सामना वह अपनी तमाम ताकत से करता है। इस युद्ध में वह सत्य पर आश्रित रहता है और चूंकि यह सत्य दुनिया की एकता है इसलिए वह अहिंसा से सबकी सेवा में ही शामिल हो सकती है।

अहिंसा और प्रेम एक ही चीज के दो नाम हैं। इसीलिए सत्याग्रही का हथियार अहिंसा ही है। यह अहिंसा जीवित फल है। इसमें बायबल और कमजोरी की जगह नहीं। अहिंसा के बिना सत्य बड़ा ही नहीं जा सकता। अहिंसा साधन है और सत्य साध्य।

एक व्यक्ति सत्य की जय !

जनसमुदाय सत्य का जय !

मोहनदास इस अहिंसा के पामन के लिए आत्मसंयम जरूरी है। इस आत्मसंयम में सत्याग्रही मुझसे बरन जाना के बुरे कामों में असाहयोग करता है पर बुरे काम करने पाने में नहीं। सत्याग्रह की विनायता यह है कि सत्याग्रही सत्य के आग्रह का वहीं बाहर गोजन के लिए नहीं जाता। सत्य के आग्रह की पदाङ्ग उमक स्वयं के भीतर ही है जिसके पाने के लिए वह एक घम-युद्ध में लगता है जिसमें न बुरी लम्बी बोर्ड पाणीत बात रहनी जिसकी दिशाओं का अन्तर ही न बड़ा पूनता का समाधान रहना



धौर न कहीं असत्य की जगह रहती ।

जनसमुदाय धन्य है ! धन्य है !

मोहनदास जिसे धर्म में विश्वास है वह ऐसे धर्म-युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहता है । इस न्याय-परायण युद्ध की योजना खुद ईश्वर बनाता है, वही इसे चलाता है । धर्म-युद्ध सिर्फ ईश्वर के नाम पर सदा जा सकता है । दूसरी लड़ाइयाँ बिनाकी पहले से योजना बनती है वे सच्चे न्याय-परायण धर्म-युद्ध नहीं हैं । ईश्वर द्वारा नियोजित इस धर्म-युद्ध का सैनिक-सत्याग्रही जब अपने चारों तरफ घेरा देखता है और उससे निकलने का दूसरा कोई उपाय नहीं तब ईश्वर उसकी मदद के लिए पहुँचता है । ईश्वर तभी सहायता करता है जब कोई व्यक्ति अपने को अपने पैर की नीचे की धूलि से भी ज्यादा बिनम्र पाता है । सेवा का जीवन नम्रता का ही जीवन हो सकता है ।

जनसमुदाय धन्य है ! धन्य है !

मोहनदास ऐसे सैनिक के लिए यह धर्म-युद्ध ही विजय है क्योंकि सत्य के इस आग्रह में ही उसे आमन्द मिल जाता है । उसकी फस की धार नजर ही नहीं जाती । उसके लजाने में दुःख और हार शब्द ही नहीं रहते । उसके लिए गीता के शब्दों में सुख और दुःख जीत और हार, सब समान रहत ह । फिर इस सत्याग्रह की एक और विशेषता यह है कि इसके उसूल इतने सरल हैं कि वे बच्चों तक को समझाय जा सकते हैं । सत्याग्रही के लिए चार नियम सबसे जरूरी हैं पहला ईमानदारी दूसरा शान्त, तीसरा

सबस्व त्याग की भावना यहाँ तक कि मौत तक का सामना  
घोर पीया शत्रु तथा अपने साथियों के लिए भी विचार  
गर्भ और कृति में अहिंसा ।

कुछ व्यक्ति घब्र है ! घब है !

मोहनदास और हम वार की इस सट्टाई में सबसे बड़ी बात तो  
यह है कि इसमें हमारी बहनें भी हिंसा से रही हैं । सत्या-  
ग्रह में नारी की जगह पुरुष से भी ज्यादा है क्योंकि सत्या-  
ग्रही के लिए जिस अहिंसा और प्रेम की जरूरत रहती है  
वह नारी में पुरुष से कहीं ज्यादा रहता है । नारी माता  
है माता से ज्यादा य गुण और त्याग की भावना किन्तुमें  
ज्यादा होती है ? माता अपने बच्चे का नौ महीन पेट में  
रखती है फिर उसका जन्म में तकसोक पानी है और घाग  
बचकर उसका मानन-पावन में । लेकिन वह निर्माण कर  
रही है इस गुणी में यह इन नारी लक्ष्मीपत्र का मूल जाती  
है । नारी का इसी निर्माणक गुणों का उसे सत्याग्रह में उप-  
योग करना है ।

एक व्यक्ति भारत की घोर बालाघों की जय !

कुछ व्यक्ति भारत की बीर बालाघों की जय !

मोहनदास एक बिदग म बहनें जन्म जायें यह मन टाक नहीं  
गमना था । पर जिन घाग के घनुमार घमपत्नियों को  
गगन शिखा का रूप शिखा जग पाना है उनका विरोध  
तो बहनों को जाहे ये बही भी हों करना ही चाहिए ।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) जन्म जन्म ।

मोहनदास इन तरह के बानुनों का मजूर बनने से मरना बही

बहतर है। मैं साहसपूर्वक और पक्की ठौर पर कहना चाहता हूँ कि अगर हम मुट्टी मर भी रहे जायेंगे तो भी हमारा यह अहिंसात्मक सत्याग्रह चलेगा। सत्याग्रही हार नहीं जानता, उसका नतीजा अन्त में जीत ही होता है। फिर सत्याग्रह की प्रणाली में विरोधी के लिए किसी तरह की कटुता मानना, उसे नीचा दिखाना उसे भुखाना, उसे नुकसान पहुँचाना या उसे वर्धाद करना नहीं है। न सत्याग्रह-विरोधी को कमजोर कर जीत हासिल करना चाहता है। सत्याग्रही अपनी सच्चाई और आत्म-त्याग से विरोधी के विभाग को अपनी तरफ करवाता और उसके दिल को जीतता है। सत्याग्रही बुराई का अच्छाई से नाश का प्रेम से, असत्य का सत्य से और हिंसा का अहिंसा से दमन करता है। सत्याग्रही को मानव-हृदय में विश्वास रहता है इसलिए उसका विरोधी अगर बीस दफा भी उसे भोला द तो वह हक़ीसतें बार फिर उस पर विश्वास करेगा।

एक व्यक्ति गांधीजी की जय !

कुछ व्यक्ति सत्याग्रह की जय !

मोहनदास लेकिन आदमी यकायक नहीं बदलता। इन गोरों को एक दिन में बदलने की कोशिश बुराई की नियमों के विरुद्ध होगी। हमारी यह सच्चाई दरअसल मानव मात्र की आजादी की सच्चाई है और हम तरह-तरह एक सच्ची धार्मिक सच्चाई है।

समस्त व्यक्ति गांधीजी की जय !

सत्य प्रबुद्धि

दूसरा घट्ट

दुग्ध]

पौखर्वा दुग्ध

स्थान प्रैटोरिया में जनरल स्मट्स का बस्तर  
ममय तीसरा पहल

[बस्तर पश्चिमी ढंग के बस्तरों से बड़ा सजा है। जनरल स्मट्स और उनका एक सेप्रेटरी बस्तर में इपर-उपर घूमते हुए बातें कर रहे हैं। स्मट्स ऊँचे-पूरे घड़े प्रवस्था के गोरे हैं। चेहरे पर मूँछों के साथ बाड़ी है, बाल सिध्ठी, सिबास पश्चिमी ढंग का। सेप्रेटरी भी ठिगना नहीं है, कुछ मोटा है। सिबास पश्चिमी।]

स्मट्स इतना घाग बड़न ब बाद हमारी रेखा की स्ट्राइक मुनते ही अपने मान को हम तरह राब देना यह गापी ही कर सकता था। मचमुब गापा बहा बहून बड़ा घाल्मी है। सेप्रेटरी ता घाप मानन ह रि एम घादमी म घब मज्जा और ग्यायी गमभीता बरन के गिदालन को मजूर कर घापने उचिन काम किया है ?

स्मट्स एगमें मुभ घब घाल भी तब नहीं है। दगा इन घपों में हम देग में जो बुरा गापी करता रहा है उसमें मे पापी पनेगान हैं। हम मुम्ब ब प्रघान मग्नी की हूमियन ग मरा पत्र या घाल्नि की रखा। कई लका एम मोवे घाय त्रिनमें मुभ बरन चिन्तित हाना पदा। एग घाल या घब म मजूर बर्रोगा ही रि गापी मे दुनिया को घरन हवों की रखा के निग एप नया तरीका बनाया है।

सेक्रेटरी अपने 'इन्डियन ओपीनियन' प्रसंग में गांधी ने इस तरीके के सम्बन्ध में लिखा है कि सत्याग्रह की शक्ति ऐसी ताकत है कि अगर दुनियाँ में उसका व्यापक उपयोग होने लगे तो वह सामाजिक कीमतों को बर्बाद करेगी और पश्चिमी राष्ट्र जो अपनी फीजी ताकत बड़ा दुनियाँ में साम्राज्यवाद को कायम कर खुद ही मास की घोर बढ़ रहे हैं उनका भी पूर्वी राष्ट्रों के साथ ही बर्बाद हो जायगा। स्मट्स मुझे सम्मुख इस बात का बड़ा दुःख है कि गांधी और उसके उसूलों को जानने पर भी और गांधी के लिए अपना मन में ऊँची-से ऊँची इज्जत रखते हुए भी मुझे उसके साथ लड़ना पड़ा है। पर मुस्लिम-से-मुस्लिम नीकों पर भी गांधी ने कभी भी अपना सन्तुसन नहीं खोया अपने पर पुष्पा का कम्बु नहीं होने दिया और बुरे-से बुरे पाशविक प्रत्याचारों के होने पर भी उसने अपने मान बोधित गुणा को नहीं छोड़ा।

सेक्रेटरी ऐसे आदमी के सामने पाशविक शक्ति कामयाब हो ही नहीं सकती।

[बर्बाद लगाये हुए चपरासी का प्रवेश। उसके हाथ में चाँदी की तलतरी में एक कांड है। चपरासी सामान कर बहु तलतरी स्मट्स के सामने करता है। स्मट्स बांड उठाता है।]

स्मट्स (कांड को पढ़ सेक्रेटरी से) ला गांधी आ गये।

(चपरासी से) बिग हिम हियर प्सीज।

[चपरासी वा सामान कर प्रस्थान। स्मट्स तिर मुका चुपचाप इधर-उधर घूमते हैं। सेक्रेटरी भी चुपचाप उनकी

घोर बेसतते हुए उनके साथ घूमता है। गांधी का प्रवेश। उनकी वही बेसभूषा है जो सत्याग्रह के मार्च के समय थी।]

स्मटस (आगे बढ गांधी से हाथ मिलाते हुए) हार्माकि गये छ सामा में हम लोग कई दफा मिले हैं मिस्टर गांधी, पर आज आपका इम दफ्तर में स्वागत कर मुझे विशेष खुशी हो रहा है।

मोहनदास मुझे भी जनरल स्मटस, क्योंकि मुझे यह उम्मीद है कि इस बार का हमारा समझौता धायद न टूटने वाला थीर स्थायी हो सकेगा।

[अब मोहनदास और जनरल का सेक्रेटरी भी हाथ मिलाते हैं।]

स्मटस घटन की वृषा बीजिये।

[तीनों बढ जाते ह।]

सेक्रेटरी यह कहने की आपद जम्बरत नहीं है मिस्टर गांधी, कि जनरल स्मटस की सरकार अभी सारी शक्ति रखती है, पर आप जानते ह कि जिन आदमी के दिम में इन्द्रियों के मुर्गों की चाह न रह गयी हो धाराम की इच्छा न रह गयी हो परों और तारीफों की मानमा न रह गयी हो, और जो जिन वह ग्यायोचित्त गमभता है, उम पर कसो भी हामन में बसने के लिए कसर बस रह, उमस शक्तिशाली दुनिया में थीर बार्द नहीं होता।

स्मटस (मुस्कराते हुए) मेमा बिरोपी बढा लक्ष्मीपन्द्रे होता है और भयानक भी, क्योंकि उमक शरीर को तो जीता जा सकता है पर उमकी मूढ़ को नहीं। म आपसे

सड़ने की प्राकृतिक शक्ति जरूर रहता है पर सड़ने के लिए प्राकृतिक शक्ति की भी तो जरूरत है, वह अब मुझमें नहीं रही।

सेक्रेटरी चाहे हम आपको विल से मदद न देना चाहें पर हम करें क्या ? हमसे सबते हुए भी हमारे आपद्काल में आप हमें उलटी मदद देते हैं आप अपने दुश्मनों को भी मुकसान नहीं पहुँचाना चाहते आप जीत चाहते हैं खुद तकलीफ उठाकर। आपके इन आचरणों में हमें बेकाम कर दिया।

कमन्स (कुछ एककर) मिस्टर गान्धी से यूनिवर्स पार्लियामेंट में विल पेश कर रहा है जिसके अनुसार हिन्दू मुस्लिम और पारसियों की शादियाँ भी कानूनी मानी जायेंगी। हिन्दुस्तानियों पर का तीन पौण्ड का टैक्स खत्म किया जायगा और वे बिना रजिस्ट्रेशन तथा उसके सर्टीफिकेट बगैरह के अफ्रीका में घूम सकेंगे।

मोहनदास (गद्गद् स्वर से) दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के लिए आपका यह कानून 'मन्नाकारटा' होगा। घाठ सान के बाद यहाँ का सत्याग्रह खत्म हुआ। सुनार सोने की परख के लिए सोने की बमोटी पर कसता है पर जब उसे सन्तोष नहीं होता तब वह उस सोने को घाग में डाल देता है। घाग में उसका भँस निकल जाता है और सच्चा मोना घाग से बाहर निकल आता है। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानी इसी परीक्षा से गुजरे हैं।

यवनिवा

## सोसरा ग्रन्थ

### पहला दृश्य

स्थान चम्पनगर में कायम क कौम में कायम मभावति

पं० मोतीलाल मेहता क डरे का धौतरी भाग

समय राति

[डरे के तीन घोर की बनाने बिपत्ती ह, जमीन पर घरी बिछी है, जिस पर सोफे, कुर्सियाँ, टबिल आदि की सजावट है। कुर्सियों पर पं० मोतीलाल मेहता, लोकमान्य तिलक, पं० मदनमोहन मालवीय, श्री मुहम्मद अली जिन्ना, श्री चितरंजन दास, मोलाना मुहम्मद अली और स्वामी अडानन्द बठे हुए ह। इन मताओं क स्वल्प का बणम अनावश्यक है क्योंकि सभी इनके स्वल्पों स परिचित ह। तिलक, मालवीय, मुहम्मद अली और अडानन्द की वेगभूषा की छोड़ दोष सबकी वेगभूषा पश्चिमी ढंग की है। तिलक, मालवीय, मुहम्मद अली और अडानन्द पूर्वोक्त वेगभूषा में ह। उनकी वेगभूषा भी उनके विचारों के कारण सभी की ज्ञात है।]

तिलक (चिनरंजनदास स) दाग बाद कायम क हम अधिपेगन में घाय जिग प्रत्याय का मयोग माने की नम अधिवान का धुरत प्रत्यावहागा। परन्तु परन्तु (रह जाने ह।)



चितरंजनबास परन्तु पर आप एक कसे गये, लोकमान्य ?  
 तिसक म इसलिए एक गया कि गांधी को बिना कुछ संशोधनों  
 के आपका यह प्रस्ताव मंजूर नहीं है ।

जिम्ना धो ! यह गांधी ! आप लोग जानते हैं जब साउथ  
 अफ्रीका से यह हजरत हिन्दुस्तान तयारीफ सामे तब इनके  
 बेसकम के लिए बम्बई में जो ग्राम बससा हुआ उसकी  
 सदारत मने ही की थी । लेकिन यहाँ जाने व बाद इनका  
 जो रबैया म देख रखा हूँ उसकी बजह से हिन्दुस्तान के भाग  
 के पार्लिमेन्ट में मुझे बहुत खतरा दिखायी दे रहा है ।

अद्वानम्ब यूरोप की गत लब्बई में आप सब नै अंग्रेज सरकार  
 को इतनी सहायता दी ।

भासवीय (बीच ही में मुस्कराकर) और स्वामी जी आप  
 उन सहायता देने बान्से में नहीं थे ?

अद्वानम्ब (मुस्कराकर) भूल गया मुझे कहना चाहिए था  
 कि हम सधने अंग्रेजों को इतनी सहायता दी । उसके  
 फलस्वरूप हमें मिले दो रीसट कानून । और उसका जब  
 हमने विरोध किया तब अंग्रेजों ने जलियाँवाला बाग का  
 अमृतपूम और भीषण हत्याकाण्ड किया ।

जिम्ना लेकिन, अगर काम्स्टीडमूदानम तरीके से उन बानूनों  
 की मुजासफ्त की जाती गांधी सत्याग्रह न बमाता और  
 अमृतसर में बीसी बारदातें न होती तो अंग्रेजों ने जलियाँ  
 वाले बाग में जो किया वह वह कर ही न सकते ।

मुहम्मद अली पर ऐसे बानूनों की काम्स्टीडमूदानम तरीके  
 से मुजासफ्त हो ही कैसे सकती थी ?

मोतीसास मेहद घौर फिर हम चाहते थे घाजादी उस  
घाजादी के अगह घाये ये माटफोड रिफार्मम् ।

बितरंजन दास एम रिफार्मम् के लिए (अपने जेब से बागज  
निकास उसे बेतते हुए) इस प्रस्ताव में जो कुछ कहा गया  
है वह हम न कहेंगे तथा इन मुधारों के लिए अपूर्ण  
असन्तोपजनक घौर निराशापूर्ण घण्टा का उपयोग न  
करेंगे तो फिर घौर क्या करेंगे ।

तिसर परन्तु आप भोग जानत हूँ गापी की एब फिमामफी  
है । दक्षिण अफ्रीका में लौटकर उन्होंने इस फिमामफी के  
अनुसार अम्पारन में मर्यादाहै आन्दोमन अनाया घौर उसमें  
उन्हें सपमता मिली ।

मुहम्मद अली आप बिलकुल ठीक कह रहे हूँ सोबमाय ।  
मैं तो मध्य प्रदेश के छिदपाटे जिले के जम म छूटने पर  
छिन्वाड़े में अमृतसर का गिन टिपट ही लेकर आया हूँ ।  
मोतीसास मेहद मैं भी धीरे धीरे यह मानने लगा हूँ कि गापी  
जी बहुत दूरल्ले ह ।

भासवीय आपकी यह राय अवाह्यमान के कारण तो नहीं  
होनी जा रही है ?

[कुछ लोग हँस बेते हैं ।]

तिसर गापी का बटना है कि यदि हम बार्ड घौर अर्थात्  
ही बरत ह तो फिर उसमें सीम-देग नहीं निपावनी  
पाहिण । साथ ही हमें मांगू माहद की मन्तव क विण  
उन्हें अन्वधान भी देना पाहिण । अविश्वामन घाग के हया  
बाद के विण यदि हम अघर अन्वकार की निण बरत

हैं तो यहाँ भारतीयों ने जो हिंसा की है उसकी भी निन्दा करनी चाहिए ।

जिन्ना घो !

बितरजन बास राजनीति फिलासफी का क्षेत्र नहीं है ।

तिलक पर मेरा निश्चित मत है कि आज देश को गान्धी की आवश्यकता है और हम गान्धी की अवहेलना नहीं कर सकते ।

[मोहनबास का प्रवेश । वे भव साड़ी का कुरता और धोती पहने हैं और सिर पर गान्धी टोपी लगाये ह । मोहनबास को देख, जिन्ना को छोड़ उनके स्वागत के लिए सब खड़े हो जाते हैं ।]

तिलक आइए, बैठिए, गांधीजी ।

[सब लोग बठ जाते हैं ।]

मोहनबास मोकभाग्य मैं आपस बिदा लेने आया हूँ । कांग्रेस में भव मेरे लिए कोई जगह नहीं है ।

तिलक बाह ! बाह ! यह आपनं भूव ही कहा ! आप समझते ह हम लोग आपको इस तरह विदा दे सकते हैं ?

मोहनबास पर, आप जानते हैं सही हा या गमत मेरे कुछ सिद्धान्त वम वय हैं और कांग्रेस क्या तमाम दुनियाँ को मैं उन उमूमों के लिए छाड़ सकता हूँ ।

तिलक : पर पर, गांधीजी क्या हमारा और आपका कोई समझौता नहीं हो सकता ?

मोहनबास समझौता ? समझौता ता म बड़े-से-बड़े विरोधी म भी करने को तैयार रहता हूँ । फिर आप ता मेरे

घौर इम देग के नता हें । आपके घौर हमारे ध्येय में भा काई फरक नहीं । उम ध्येय को हा मिल करने के रास्त में ही अन्तर है ।

तित्तक इमोनिग तो मैंने कहा न कि क्या हमारा कोई सम भौता नही हा मकता ? (बुट्ट दक्कर) गाधीजी अमी आपके धान क पहने म अवन इन साधियों में बह रहा था कि दम का अवन गाधी की आवापकता है । घौर हम गाधी की अकहनता नहीं कर मवन । काई भी ममभौता करना पड हम आपस ममभौता करेंगे घौर इम प्रकार आपका बापम म विना न हात देंग ।

मोहनबास (एकटक सोवमाय की आर बेतते हुए) बिनन बिनन महान् ह आप सोवमाय ! म स्वर्गोय गावानकृग गागन को अवन गजननिक आत्मा मानता हूँ । उन्ने लगते ही मरा उनक प्रति अयधिक प्रेम हा गया था घौर उनके सिग मन उम गगा की उपमा ही थी तिमक पविष जम में म्नान मया जीवन म्ता है तथा तिम म्नान क सिग आत्मा मालायिन रहता है । आपका मन उम वरन उम ममुद्र क मानिद माना था तिमरी गतरा री थाट मुमकिनमही (गडगड स्वर म) मपमुष बिनन बिनन महान् ह आप !

सधु यबनिबा

दूसरा दृश्य

स्वामि नागपुर में कांग्रेस अधिवेशन का पञ्चानम  
समय तीसरा पहर

[कांग्रेस अधिवेशन के इस पड़ाव का कुछ भाग बिलासपुर  
बैठा है। पीछे की तरफ मंच का कुछ हिस्सा बोलता है जिस पर  
सोकमान्य तिलक का आदर्शकब तैलचित्र लगा हुआ है। मंच  
की मुँहदेर पर एक और विशाल चित्र बना है जिसमें सोकमान्य  
तिलक का स्वर्गारोहण दिखाया गया है। इस चित्र में बिमान पर  
रही है जिन्हें महात्मा गान्धी संभास रहे ह। ये दोनों चित्र इतने  
बड़े और इस प्रकार बनाये गये ह कि बशकों को दूर से भी दृष्टि-  
पोषण होते हैं। मंच के नीचे कुर्सियों पर बठे हुए जनसमुदाय  
का कुछ भाग बिस पड़ रहा है। मंच की कुर्सियाँ इस समय खाली  
हैं। मंच के नीचे जो जनसमुदाय बठा है, उसका मुँह मंच की  
तरफ है। इस जनसमुदाय में बातचीत चल रही है, जिसके कारण  
पंदास में कुछ हस्त-सा मचा हुआ है। अधिकांश बातचीत तो  
समय में नहीं घाती पर बीच-बीच में जब कुछ लोग जोर-जोर  
से बातचीत करने लगते ह तब शेष आधमियों की बातचीत कुछ  
रुक जाती है और इन जोर-जोर से बातचीत करने वालों की  
बातचीत मुनावी बने लगती है।]

एक व्यक्ति ही ही म पक्की पक्की गबर दे रहा है घमह-  
योग का प्रस्ताव चितरंजनदाम पण करने बाव ह।  
दूसरा पहर, म मानूँ बँभे ? चितरंजनदाम संगाम और घामाम

म मकड़ों प्रतिनिधियों को इसलिए माय ह कि बमकत्ते में काग्रम के विषय अधिबान न जा प्रमहयोग का प्रस्ताव मजूर किया है उम नागपुर के बाग्रम क इम अधिबान में सम्बन्धित करा देना ।

सीसरा घोर इन मकड़ों प्रतिनिधियों क बमकत्ते में नागपुर माने का हज़ारों रुपया दान बाबू न अपने जब से मच किया है यह मुझ मासूम है ।

श्रीषा पर माई

[ फिर हस्ता होन के कारण कुछ सुनायी नहीं देता । कुछ बेर बाद फिर सुन पड़ता है । ]

एक यह गाधी घजीब आदमी है घजीब ।

दूसरा हाँ घजीब तो है ही । किस दिन क्या करेगा कोई नहीं जानना । घमूनमर में मान्टफोर्ड मुघारों का विना किसी मौन-भंग के बाग्रम द्वारा मजूर करवाना चाहता था ।

सीसरा मिस्टर मान्टगू की घम्वदा ता घमूनमर काग्रस के प्रस्ताव द्वारा दिनवा ही लिया ।

दूसरा घोर कुछ महीनां बाद ही मग्बार म प्रमहयोग करने का बायत्रम मार घाया ।

सीसरा पत्रार के हत्याकाण्ड पर मग्बारी मोपारोनी न इसके मन में इम मग्बार की स्वायत्तगयता में जा विश्वास था उम गमगा

[ फिर हन्ते में कुछ नहीं सुनायी पड़ना, कुछ बेर बाद फिर सुन पड़ता है । ]

एक इम प्रमहयोग क बायत्रम का मरागट्ट भी कुछ बम विरोध मने है ।

बूसरा श्रीर महाराष्ट्र का विरोध है खूब संगठित ।

तीसरा फिर मुना महामना मासवीय श्रीर जिन्ना भी इस अग्रह-  
योग के प्रस्ताव का विरोध करेंगे ।

चौथा उन्होंने तो कलकत्ते में भी विरोध किया था पर कांग्रेस  
में अब उनकी कोई नहीं सुनता ।

पाँचवाँ श्रीर जहाँ तक जिन्ना साहब का सम्बन्ध है मने तो यह  
मुना है कि वे कांग्रेस के आज के अधिवेशन में भागेंगे ही  
नहीं ।

छठवाँ जिस अपने यतलूम के शीज खराब होने का इतना पिकर  
रहता है वह तर्क-मवासात के प्रोग्राम की तारीफ कैसे कर  
सकता है ।

[ कुछ लोगों की हँसी का शब्द । ]

सातवाँ श्रीर जब इस अधिवेशन के समापति विजय रायबाबाय  
ने अपने कम के समापति पर स विय गय भाषण में अग्रह  
याग के कार्यक्रम का इतना विरोध किया श्रीर उस तक का  
असर न पड़ा तब इन विरोधियों में क्या बरा है ?

आठवाँ समापति के भाषण पर तो मागपुर के मराठी अग्रवार्  
क आज प्रातःकाल के अंक में टीका लिखा है — "मासायक  
समापति का मासायक भाषण ।"

[ जोर की हँसी । फिर हल्के में कुछ सुनायी नहीं देता । कुछ  
बेर बाद फिर मुन पड़ता है । ]

एक ही कांग्रेस के किसी अधिवेशन में इतने प्रतिनिधि नहीं  
आये जितने हममें । इस अधिवेशन के प्रतिनिधियों की  
संख्या में अभी स्वायत्त-समिति के दफ्तर में देखकर आया है ।

दूसरा किसनी है ?

पहला चौदह हजार पाँच सौ ब्यासी जिनमें एक हजार पचास मुमसमान है एक सौ उन्हत्तर स्त्रियाँ और विलायत से प्रायः हुए मजदूर दल व मित्र प्रतिनिधि भी हैमियत से तीन अंग्रेज—बमम धजबूड मिस्टर हानपाई और मिस्टर बिनम्पूर ।

तीसरा हिन्दू-मुस्लिम एकता तो जमी धव हुई है वही बभी देगल में नहीं प्रायी ।

चौथा क्या न हाँसी ! गांधी न उनकी गिलापल का मवान कायम व मच पर ल मिया ।

पाँचवाँ पर भाँ राजनीति और धम का इम तरह मिल्नाना में भविष्य व मित अरुछा नहीं मममला ।

छठवाँ क्या बबते हा जी तुम पायद नहीं जानते कि हम मुगलमाना व मयामी माममान भी मजहूब व अलहदा नहीं देग जा मपने और यह भी

[फिर हमसे में कुछ मुनायी नहीं देता । अब मेरेप्य में 'महात्मा गांधी की जय', 'असहयोग आन्दोलन जिन्दाबाद', 'तिलापल अमर हो', 'भारत माता की जय' आदि नारों का शब्द होता है और कुछ ही बेर में दाहिनी ओर से विजयरायवाजाय, सेठ जमनालाल बजाज, महात्मा गांधी सास्ता साजपतराय, धाय विपिनबहादुर पाल धितरंजनबाम, मोतीलाल नेहरू, विन्टमनाई पटेल, मौमाना शोबतअसी, मौमाना मुहम्मदअसी हबीब अजमलगाँ बान्तर अगमारी, मौमाना अहुम बमाय आजाद, सरोजिनी माड्डू, सरला बेबी चौपरानी, नरतीह चिन्तामणि



केसकर, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं तथा तीनों अग्रेज कर्नल बेंजवूड, हालफोर्ड नाइट, और मिस्टर बनस्पूर का प्रवेश। इनमें से आज कोई भी पश्चिमी निवास में नहीं है। महात्मा गान्धी साही का कुरता तथा चोती पहने और गान्धी टोपी लगाये हुए हैं। वे सबके बस्त्र भारतीय मिसों के कपड़ों के हैं। नेताओं को बेस पंडाल में उपस्थित सारा जनसमुदाय खड़ा हो जाता है और नेपथ्य में जिस प्रकार नारे लग रहे थे और जयघोष हो रहा था उसी प्रकार पंडाल में होता है। नेताओं की यह मंडली मंच पर रखी हुई कुर्सियों पर बैठ जाती है। कुछ समय बीतने का विमर्शन कराने के लिए सधु यवनिका गिरती है, परन्तु तुरन्त ही उठ जाती है। जब सधु यवनिका उठती है, उस समय महात्मा गान्धी बोल रहे हैं। वे एक कुर्सी पर बैठे हुए अपना भाषण दे रहे हैं और उस समय साउंड स्पीकर ईजाब न होने के कारण उनका भाषण साधारण स्वर में धीरे-धीरे ही सुनायी देता है।]

महात्मा जो प्रस्ताव आपने सामने देशबन्धु पितरजबदास ने रक्खा है और जिसका अनुमोदन माना साजपठराय ने किया है उसका मैं समर्थन करता हूँ। असहयोग का यह प्रोग्राम कांग्रेस ने कसकसे क अपने विनाय अधिबेशन में मजूर कर लिया था और अब यह भागपुर में कांग्रेस के सानाना जलमे में ताईद करने के लिए पेश है।

एक व्यक्ति हम इसे ज्या-जा-र्या मजूर करेंगे।

अनेक व्यक्ति (जोर से) हाँ ज्या-का-र्या, ज्या-जा-र्यों।

महात्मा इस कार्यक्रम में कमा जाइ है इसका पता इसी से

सग जाता है कि कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेशन के बाद कौंसिलों के जा चुनाव हुए उनमें प्रमोदी फीसदी बोटर घाट दन का नहीं गये और जा देशवर्षुदास इम प्रोप्राय का गिलाफ प उन्होंने इम कार्यक्रम के प्रस्ताव को घाब घापने सामन रक्या है ।

एक व्यक्ति यह कार्यक्रम का नहीं घापना जादू है ।

बहुत से व्यक्ति (जोर से) हाँ घापना जादू घापना ।

[महारमा गान्धी की जय के जोर के मारे और तासियों की गडगडाहट ।]

महारमा घापन जा प्रस्ताव मुना उसके कुछ गाम हिस्सा में ग कौमिल कार्यवाट व भग में कामयाबा मिलने के बाद घब जो प्रधान भग रह गय ह उनमें ह—यहमा सरकारा गिनावा का छाप्ना दूमरा सरकारा गिना मस्यामा म ठास्मुक न गगना, तीमरा सरकारा घदामतों का बहिष्कार, बीषा विदगी घाम का घायवाट पर स्थानी घन्त्रों तथा गार्दी का उपसाग करना और पाषवा घम्पुपना निवारण ।

एक व्यक्ति इम दना की जनता पीगिला व घायवाट व ममान ही नन घगा जो भी पूरा वगगी ।

कुछ व्यक्ति (एर ताघ जोर में) जकर जकर ।

महारमा पर घापना घमदयाग व उमुसा का भनी ज्ञानि घमभ मना पाणिग । इमार ग्लि में घघज जाति म काई घुना नहा है इम र्जकर की गग गृष्टि म गबग प्रम ररन ह । प्रेम घोर घणिगा का एव दूमरा म पाया-जामन का मरघप है । जावन घम की प्रेम घोर घाट ३ । घा

जनसमुदाय महात्मा गांधी की जय !

भारत माता की जय !

महात्मा आपने अगर असहयोग का प्रोग्राम ठीक तरह से चलाया तो पञ्जाब के अत्याचारों पर सरकार को बाजिब कार्यवाही करनी ही होगी। खिसाफत का मसला हल हो जायगा और एक साल के अन्दर आपको स्वराज्य मिल जायगा। इस कार्यक्रम को चसाने के लिए इस मुल्क के हर मर्द और औरत को कामर कसनी होगी। अपने सबस्व की प्राहुति देने के लिए तयार होना पडगा। और इस मौतानियत से भरी हुई सरकार के बड़े-से-बड़े दमन की परबाह न कर उसे सहन करने के लिए अपने को हर तरह से बनाना होगा। कोई भी देश बिना कष्ट की भाग में तपे मुड नहीं हुआ है। मैं इसलिए बच् पाती हूँ कि उसका बच्चा जिन्दा रहे। बीज इसलिए अपने को खत्म कर देता है कि उससे पौधा बनकर निकसे मृस्यु से जीवन पैदा होता है। भारत का अपनी गुमामी खत्म कर अपने उत्थान के लिए इमी कष्ट सहण्ड होन क बुदरती नियम से गुजरना होगा। दुनिया में अकर्मण्यता न कभी कुछ नहीं हुआ। जा कुछ हुआ वह हमेशा कर्मण्यता से हुआ है।

[महात्मा चुप हो जाते ह। पुन जय-जयकार के मार सगते ह और तासियों की गड़गड़ाहट होती है।]

सद्य घवनिका

## तीसरा दृश्य

स्थान एक मछेद बाहर

समय प्रातःकाल में से गात्रि तक अनेक दिन

[सफेद चादर पर निम्नसिद्धित दृश्य दिखायी देते हैं।  
अन्य चार मारे भी सुन पड़ते हैं और गीत भी।]

[निम्नसिद्धित गीत गाते हुए काप्रेस का तिरंगा झण्डा लिये जिसमें उस समय सात, हरे और सफेद रंग से एक युवकों और महिलाओं का जुसूस आता है। युवक सफेद जूती के कुरते और घोती पहने हैं और सिर पर गांधी टोपी लगाये हैं। महिलाएँ केनारी रंग की सादियाँ और पोसका पहने हैं, पर कोई आभूषण नहीं।]

## गीत

संदेशा पूज्य गांधी का जगत को हम मुना देंगे ।  
हमारा देग साया जो उग अब हम जगा देंगे ॥  
सजा है मोह बौगिल का नहीं परबाह है उमबी ।  
मुन्नेवा मातृ भू की कर, उग उन्नत बना देंगे ॥  
तरंग म्बून और बालेद खानन का भी तज देंगे ।  
ग्यन्ती अन्न भूया का, मरक मरको पड़ा देंगे ॥  
अनामन में न दुग पापा करा पंथापनी जारी ।  
मिट अनाम जन्नी से, प्रया लमी अमा देंगे ॥  
नहीं बन्दूक का डर है न तापा का हमें घटका ।  
आत्मबल का मरा डका जगत में हम बजा देंगे ॥  
मदाई म म बुठ मननब, म अम्बों का अन्नन है ।

भड़कती घाग को हम सब, सुधारस से बुझ देंगे ॥

हमें स्वराज्य सिद्धी में, सुदर्शन भक्त है भक्ति ।

इसी से हम विदेशी की मूल खड से उडा देंगे ॥

[गीत गाते-गाते बीच-बीच में यह जुमूस बाहने हाथ ऊँचे करके निम्नलिखित नारे भी सगाता है ।]

मारे महात्मा गान्धी की जय !

भारत माता की जय !

भारत आजाद हो !

[यह बुद्ध सुप्त होकर सामूहिक कत्तई का बुद्ध बिसायी बेता है ।

यह बुद्ध सुप्त होकर एक शराब की दूकान पर पिकेटिंग का बुद्ध बिसायी बेता है । स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाएँ शराब की दूकान के सामने खड़े ह, शराब पीने को धाने वाले लोगों के हाथ जोड़त ह पर पडते हैं और बड़ी आजीजी से इन्हें रोकने को कोशिश करते हैं । शराब पीने को धाने वाला जब धापिस लौट जाता है सब ऊपर लिखे नारे सगते ह ।

यह बुद्ध सुप्त होकर बम्बई में बिसायती कपड़े का एक बहुत बडा ढेर बिल पडता है । महात्मा गान्धी जिन्होंने सब संगोटी सगा ली है, अपने अनेक साथियों के साथ आते हैं, उस कपड़े क ढेर में घाग सगते हैं । घाग की सपटें आकाश को छूती जान पडती हैं । घाग सगते ही ऊपर लिखे नारे सुनायी बेते ह ।

यह बुद्ध सुप्त होकर बसबसे के प्रेसीडेन्सी बालेज के विद्यार्थियों द्वारा बायकाट किये जाने का हजारों विद्यार्थियों के जुमूस का बुद्ध बिल पडता है । उसमें भी ऊपर लिखे नारे

सगावे जा रहे ह ।

यह दृश्य सुप्त होकर स्त्रियों की एक सभा का दृश्य दिखायी देता है, जिसमें गांधीजी के माँगने पर स्त्रियाँ बड़े उत्साह से घन आभूषण राष्ट्रीय काय के लिए उन्हें भेंट करती दिखायी देती ह ।

यह दृश्य सुप्त होकर मलाबार में मोपसा बिद्रोह के दृश्य दिखायी पड़ते ह, जिनमें अधिकांशियों द्वारा मोपसों को उत्तेजित करने और उसके बाद मोपसों के कुछ हिंसात्मक बाण्ड दिखायी देते ह ।

यह दृश्य सुप्त होकर प्रिंस आफ वेल्स के आगमन पर बस्तर की पूरी और सफ्तन हड़ताल का दृश्य दिखायी देता है । प्रिंस आफ वेल्स दाही टंग से बस्तरसे का सड़क पर निकले ह । सड़क की नएर डूकान खुली है और न कोई सवारी या व्यक्ति ही सड़क पर दिखायी देता है । बस्तरस की आलोगान इमारतों के दिपते हुए भी जान पड़ता है बस्तरसा उमड गया है और एब आदमी भी यहाँ नहीं रह रहा है ।

यह दृश्य सुप्त होकर बोरो-बोरा का सायननिष हिंसा का दृश्य दिखायी पड़ता है । पुस्तिम घाना जन रहा है घनेर पुस्तिम घाने जनता द्वारा पीटे और मारे जा रहे ह । ]

सपु घयनिषा

## बीषा बुध्द

स्वान् कारखोमी मे गांधीजी क भापड़े क सामन का बीषान  
समय सम्प्या

[गांधी जी सम्प्या के प्रार्थना में एक तख्त पर बठे हुए हैं।  
वे नीचे के शरीर पर घुटने तक सम्बा एक बस्त्र धारण किये हैं।  
उनका ऊपर का भङ्ग सुना हुआ है। तख्त के नीचे एक जन  
समुबाय इकट्ठा है। इसमें सरबार वस्त्रभभाई पटल भादि प्रमुख  
बय से बिल पड़स ह। साम्प्य-प्रापना हो चुकी है और प्रार्थना के  
अन्तर निम्नलिखित गीत गाया आ रहा है।]

## गीत

बष्णवजन तो तेने कहिए  
ज पीड़ पराई जाणे रे  
पर दुग्ने उपकार करे तोये  
मम अभिमान न धाणे रे।  
मजस लोक भाँ सहुने बदे  
निदा न करे बेनी रे,  
बाब बाछ मन निदपल राग  
धन धन जननी तेनी रे।  
ममदृष्टि मे तप्या त्यागी  
पर म्नी जेने मात रे  
जिह्वा पकी अमरय न बान  
पग धन नव भान हाष रे।

मोह माया व्यापे रहि अने,  
 दूढ़ बराग्य जना मनमा रे  
 राम नाम नू तानी सागी  
 सबल भीरय तेना तनमा र ।  
 वण भाभी ने बपट रहिन छ  
 बाम प्रोष नियाया रे  
 सभे तरंगयो तेनु दरमन बागना  
 पुन एको तर ताया र ।

[गीत पूर्ण होने पर रघुपति राघव रामाराम की रामपुत्र होती है ।]

महारामा (रामपुत्र समाप्त होने पर) बहूनों और भाइयों ।  
 संयुक्त प्राप्त के गोरगपुर जिन्हे में श्रीरामोरा नामक एक  
 गाँव है । आपने अब तब राम गाँव का नाम मुन लिया होगा  
 और वहाँ हाम ही में जनता द्वारा जो हिंसा हुई है उसका  
 हान भी धारण मानुस हो गया होगा । श्रीरामोरा का  
 यह भयानक बागद इन बात का मुख्य है कि बाँपल  
 यात्रिया म भी अब तब यह बात घट्टी तरह मही समझी  
 कि मद्र घग्गा या गिविन नापरमानी क लिए यात्रिया  
 एक जरूरी और त्रिगम्यर आज है । घग्गा राम हिंसा में  
 बाँपलबादा नामिन न हान तो म गग्गा पग्गाठ मद्रा बग्गा  
 पर दग्में बाँपल क माग भी नामिन ये । श्रीराम स्वयं  
 गपकों की भर्ती में बिना लानमान रिय है । और बाँपल  
 की बनावी हुई निदायता के गिनार भा माग म मिय  
 रय है त्रिगम्य दग्गा बग्गा हाना है कि गग्गापट्ट क मुन



सत्य की समझ में बनी है। अपनी गलती को मजूर करना उस भ्रष्ट के समान है जो गन्दगी साफ कर देता है और जिस जगह की गन्दगी साफ करता है वह जगह पहले से भी कहीं अधिक स्वच्छ हो जाती है। (कुछ स्वकर) सारी परिस्थिति पर विचार कर आज कांग्रेस की कार्यकारिणी ने तय किया है कि इस बारबारी में होने वाले करबन्दी के सामूहिक सत्याग्रह को रोका जाय और कांग्रेस के अन्दरूनी संगठन का मजबूत बनाने के लिए रचनात्मक काम किया जाय। रचनात्मक कार्यों में (अपने घाँसे हाथ को ऊपर उठाकर उसका अगूठे को अपने बाहने हाथ की दो उँगलियों के बीच में सेते हुए) पहला है अस्पृश्यता-निवारण (उसी तरह घाँसे हाथ को तमनी को बाहने हाथ की दो उँगलियों के बीच में सेते हुए) दूसरा है मूम-कटाई (मध्यमा को उसी प्रकार सेते हुए) तीसरा है शराब-बन्दी (अमानिका को सेते हुए) चौथा है हिन्दू मुस्लिम एकता (कनिष्ठिका को सेते हुए) और पाँचवाँ है नारी के समान अधिकार। हाथ धरीर में बन्दी से बंधा हुआ है कन्दाई है अहिंसा। ये पाँचों रचनात्मक काम अहिंसा के द्वारा हर धरीर को स्वतंत्र करेंगे और तमाम धरीरों की स्वतंत्रता हिन्दुस्तान को।

कुछ व्यक्तित्व धन्य है! धन्य है!

महात्मा अगर भारत का आजादी नहीं मिनी ता मत्याग्रह जरूर हागा। मत्याग्रह के मन्वच में मरे विचारों में कोई फर्क नहीं पडा है। मत्य अहिंसा और मत्याग्रह के मन्वच में

मग ज्ञान हर दिन बढ़ता रहा है और अभी भी बढ़ता जा रहा है। पर मर्यादा में हिम्मा करने वाले ऐसे ही लोग होने चाहिए जो उसके उमूकों में विद्वान् रगत हा। मर्यादा ध्यान्दोवन उसमें भाग करने वाले स्त्री पुण्यों की सुख्या पर नहीं लेकिन उनके गुण और योग्यता पर निर्भर करता है। चरित्र की पूर्णता के बिना मर्यादा गरमुमकिन है। जिन बाप्रेम की तरफ में यह मर्यादा होम वाता था उसमें घाज तमे व्यक्ति भी था गय ह जो मर्यादा के तरबा को नहीं समझत। इमीनिए घाज उमे रोचन व मिवा दूसरा बाई रास्ता नहीं है। में जानता हूँ मर्यादा का मुन्वी करम के इन फमन से घापको और दग को बढ़ी भारी निरागा होगी।

एक व्यक्ति बहुत बड़ी।

बहुत व्यक्ति (एक साथ) बहुत बड़ी बहुत बड़ी।

दूसरा व्यक्ति माग्नीमी हिन्दुस्तान की पर्यापानी बनन बानी थी।

तोसरा व्यक्ति हम सब हम मर्यादा व निण पूर्ण तोर पर तयार ह।

बहुत व्यक्ति (एक साथ) पूर तयार पूर तयार।

महारमा म जानता हूँ बाग्नीमी था तयार हा, घाज भी तयार हा पर मुन् व गार बाप्रेमबानी अभी तयार नहीं ह। अभी बाप्रेम व सोगा न भी तयार का नहीं बीता है। तयार एक प्रकार का राग है दार्जिन पाग्नीवन। तयार घाव उम बनन योन घाग्नी वर राम नाम मना घाग्नी।

इसलिए इस समय चाहे हमें कितना ही बुरा क्यों न लगे कितनी ही नाउम्मीदी क्यों न हो, इस सत्याग्रह को रोक, मौन धारण कर रामनाम सेते हुए रचनात्मक काम करना चाहिए। यही ईश्वर की इस समय इच्छा है। उसकी इच्छा के बिना एक घास का तिनका भी न पदा हो सकता है और न हिल सकता है। जीवन विभिन्न दक्षिणों से घासित होता है। किसी कृति के लिए भी उन सब पर ध्यान रखना जरूरी है किमी एक ही व्यापक सिद्धान्त के अनुसार जीवन चलाया जा सकता तो बड़ी घासान बात होती। पर मुझे कोई भी तो ऐसी कृति नहीं दिखती जिसका नियम सरलता से किया जा सके क्योंकि जीवन प्रायः एक दूसरे से विरोधी तत्वों और वर्तक्यों से भरा रहता है।

सधु यवनिका

पाँचवाँ बुजब

स्वात महमबाबाद के मगरिट हाउस का एक कमरा समय बाहर

[कमरा घरासतों के कमरे के सबूत सजाया गया है। इस समय इस कमरे में केवल एक घपरासी इपर-उपर घूम रहा है। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और मरसिह बितामचि बेसगर का प्रवेश। राजेन्द्रप्रसादजी का चेहरा बहुत ही उतरा हुआ है।]

केसकर (बीबास में लगी हुई घड़ी को देखकर) हम लोग कुछ जल्दी आ गये।

राजेन्द्रप्रसाद मुझमें रहा ही नहीं जा रहा था।

केसकर बित्तने उदास है आप घाँसों के घाँसू बछियाई से एक रहे ह।

राजेन्द्रप्रसाद मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा है ऐसे मौका पर मैं अपने का राव नहीं पाता।

केसकर गांधीजी पर जिन तरह का राजद्रोह का मुकदमा बन रहा है उगी तरह का मुकदमा जब लीकमाय पर बना था उस समय हम लोगो की भी यही दशा हुई थी।

[राज-द्रोहप्रसादजी बीबास निदबास छोड़ते ह और दोनों तिरि-  
न्तेदार के सामने की बघ पर बठ जाते हें।]

राजेन्द्रप्रसाद केसकर माहय गांधीजी पर यह मुकदमा हम सागा की बजह से ही बन रहा है।

केसकर यह क्या ?

राजेन्द्रप्रसाद निम्नी का गन घग्गिन भाग्गीय बापग बमेटी का घट्ट भ जा यरग हूई उममे घपेज गरवार को माभूम हा गया कि हम सागा में घापम में पूट हो गयी है। गांधीजी का घब येगा घनुमरण नहा रहा जैमा था। इसीनिा जिन गरवार की हिमन घमग्धाग घादानन क गग्ग घाग गन घनान प यरग मा गायाजी पर हाय दानने की मग हागा थी उमी गरवार ने मरयाघर घग्ग यरने पर भी गांधीजी का गिग्गनार कर लिया। केसकर गांधी हम देग का पट्ट ने हम देग का सुबनास किया है।

उस फूट से अभी भी हम अपना पिंड नहीं छुड़ा पा रहे हैं। क्या कहें !

[केलकर रामेन्द्र बाबू के कथन का कुछ उत्तर दें इसके पहले ही कुछ सोग और घा जाते हैं। इन्हें बेस केलकर चुप रह जाते हैं। बहुत जल्दी सारा कमरा लोगों से खचाखच भर जाता है। म्यावाधीन, उसके साथ असेसर और उसके सिरि-एलेबर आते हैं। सब अपने-अपने स्थानों पर बैठ जाते हैं। अब गान्धीजी और उनके साथ दंकरसाल बेकर अभियुक्त की हैसियत से पुलिस द्वारा साथे आते हैं। गान्धीजी उसी प्रकार नीचे के शरीर पर एक लँगोटी बाँधे हैं और उनका ऊपर का शरीर खुला है। उनके हाथ में एक सिपटा हुआ कागज है। दंकरसाल बेकर जाही का कुरता-धोती पहने हैं और सिर पर गान्धी टोपी लगाये हैं। गान्धीजी के प्रवेश के समय कमरे में बटे हुए सब सोग अब म्यावाधीन के एकदम सड़े हो जाते हैं। अब गान्धीजी और दंकरसाल बैठते हैं, उस समय म्यावाधीन और जो लोग बैठे हुए थे बैठ जाते हैं।]

म्यावाधीन (गान्धीजी से) आप जान ही चुके हैं कि आप पर राजद्रोह का यह मुकदमा आपके भालवार 'यंग इंडिया' में आपके द्वारा लिखे हुए 'राजनस्ति में दगाव' 'ममस्या और उग्रका हम' और 'मर्जन-नर्जम तीन लेखों पर चलाया गया है। (दंकरसाल बेकर से) आप 'यंग इंडिया' के प्रकाशक हैं इसलिये उम हैसियत में आप पर भी यह मुकदमा चला है। अब आप लोगों को जो कुछ कहना हो आप कह सकते हैं।

महात्मा मं अपना अपराध मजूर करता है।

दशरथाल बकर घोर में भी।

महात्मा मुझे जो कुछ कहना है वह मैं निश्चय से धार्या हूँ  
 मैं चाहता हूँ कि मेरा यह मिश्रित ध्यान इस मुकदमे  
 की मिसल में रहे। इसके कुछ हिस्से में यहाँ पढ़ देता हूँ।  
 (हाथ में लिये हुए कागज को पढ़ते हैं।) मुझ पर यह  
 जो मुकदमा चलाया जा रहा है वह इगण्ड की जनता  
 को गुना करने के लिए है इसलिए मरा यह कतब्य है  
 कि मैं इगण्ड घोर भाग्य की जनता या यह वना दूँ  
 कि मैं बट्टर महयोगी मैं पक्का राजद्रोही घोर असहयोगी  
 फसे बन गया? मैं प्रणालय को भी धताना चाहता हूँ  
 कि मैं इस सरकार के प्रति जो देश में बानूनन् कायम  
 हुई है राष्ट्रद्रोहपूर्ण धारण करने के लिए अपने आपको  
 दापी क्या मानता हूँ? मर सार्वजनिक जीवन का  
 धारम्भ गन् १८२९ ईस्वी में दक्षिण अफ्रिका में बहाँ  
 की विषम परिस्थिति में हुआ। मुझे पता लगा  
 कि मनुष्य घोर एक हिन्दुस्तानी के होते वहाँ मरा कोई  
 धारण नहीं है। पर मने हिम्मत मैं हारी।

मने गुण ही निम्न मैं वहाँ की सरकार के साथ  
 महयोग लिया जब कभी मने सरकार में कोई दाप पाया  
 ता मन उगर्को गूब धारणा की पर मने समक विनाग  
 की दृष्टा कभी नहा की। दक्षिण अफ्रिका में जब धारण  
 की धुमोरी ने मार ब्रिटिश साम्राज्य का महान् विपत्ति  
 में टान लिया उग मौर पर मन उम धरनी मबार्ते भेंट

कीं। दक्षिण अफ्रिका में मैंने जो काम किया उसके लिए साइं हाकिम ने मुझे कैसरे-हिन्द पदक दिया।

— जब इंग्लैण्ड और जर्मनी में सड़ाई छिड़ी तो मैंने खेडा में रंगबट भरती करते हुए अपनी तन्दुहस्ती तक को आशिम में डाला। इन सारे सेवा-कार्यों में मेरा एक मात्र यही विश्वास रहा कि इस तरह मैं साम्राज्य में अपने देशवासियों के लिए बराबरी का दर्जा हासिल कर सकूंगा। पहला घक्का मुझ रौमट एक्ट ने दिया।

इसके बाद पञ्जाब के भीषण काण्ड का नम्बर आया। मुझे यह भी पता लग गया कि प्रधान मंत्री ने भारत के मुसलमानों का जो आश्वासन दिया कि तुर्कों और इस्लाम के तीर्थ-स्थलों की पवित्रता बरतुर रखी जायगी वह जोरा आश्वासन ही रहगा। मेरी सारी उम्मीदें धून में मिला गयीं। इधर अघपेट भूखे रहने वाले भारतवासी धीरे धीरे निर्जीव होते जा रहे हैं। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि जिन अघपेटों और उनके हिन्दुस्थानी सहयोगियों के जिम्मे अम देश की दुर्भिक्ष है वे खुद नहीं जानते कि मैंने जिन अघपेटों का अर्थन किया है उनमें उनका हाथ है।

जिन एक-दो-तीस लाख धारा क मुताबिक मुझ पर मुद्रमा चलाया जा रहा है वह नागरिकों की आजादी का आह्वान करने में ताजीरान हिन्द की धारा में मिरकाज है। प्रेम न तो पैदा किया जा सकता है न बायदे शानून के मानहन रह सकता है। अगर किसी के

दिन में किसी दूसरे के लिए प्रेम-भाव न हो तो अब तक वह हिंसापूर्ण काम या विचार या प्रेरणा न करे तब तक उसे अपने अप्रीति के भाव जाहिर करने का पूरा हक होना चाहिए। पर शीघ्रतः यक़र पर और मुक्त पर जिस धारा का प्रयोग किया गया है उसके अनुसार अप्रीति फलाना अपराध है। इस धारा के अन्तर्गत अनाम गद्य कुछ मामलों का मेरे अध्ययन किया है और मैं जानता हूँ कि इस धारा के अनुसार देव के कई परम-प्रिय देवभक्तों को मर्जा दी गयी है। इसलिए मुक्त पर जो इस धारा के मुताबिक मानना बनाया गया है उस में अपना मौभाग्य गमना है। वास्तव में मरा विश्वास तो यह है कि लक्ष्मण और भारत जिस गर बुरखी वीर में रह रहे हैं मने अमहयाग के द्वारा उमम उधार पान का रास्ता बनाकर जाना की एक गिरमत्त भी है। मरी राम में जिस तरह अष्टार में महयाग करना पत्र है उमी तरह बुगई में अमहयाग करना भी कमम्य है। इसमें पहल बुगई करने वाले का नुमान परुचान के लिए अमहयाग का हिंसात्मक रूप में किया जाता रहा है। पर मैं अपने आवाशिया का यह बनाने की वागिग कर रहा हूँ कि हिंसा अर्ग को वापस गतनी है इसलिए बुगई की जड़ भारत का यह अर्गी है कि हिंसा में विमकुल अनाग र। अहिंसा का मतलब यह भी है कि बुगई में अमहयाग करने के लिए जो कुछ भी मर्जा मिले उन मंजूर करें। इसलिए मैं यहाँ उस काम के लिए जो कानून



की निगाह में जान-बूझकर किया गया अपराध है और जो मेरी निगाह में किसी नागरिक का सबसे बड़ा कृतघ्न है सबसे बड़ा दण्ड चाहता हूँ, और उसे बसुची ग्रहण करने को तयार हूँ। जहाँ और असेसरों के सामने सिर्फ वो ही रास्ते हैं। अगर आप भोग विम से समझते हैं कि जिस कानून का प्रयोग करने के लिए आपसे कहा गया है वह बुरा है और मैं बेकसूर हूँ तो आप भोग अपने-अपने पदों से स्तीफा दे दें और घुराई से अपना सम्यक् प्रसंग बरसें। अथवा आपका यही विश्वास हो कि जिस कानून का प्रयोग करने में आप मदद दे रहे हैं वह वास्तव में इस मुल्क की जनता के मंगल के लिए है और मेरा आचरण लोग के अहित के लिए तो मुझे बड़ी-स-बड़ी सजा दें।

[महात्मा गांधी घुप हो जाते हैं। सारे कमरे में एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता छा जाती है। न्यायाधीश सिर झुकाकर कुछ सिलसिले बगता है। उसका सिर उसकी टबिल पर घुस-सा जाता है। कुछ बेर बाद वह उसी तरह सिर झुकावे हुए ही बोसता है।]

न्यायाधीश अभियुक्तों के अभियोम को मंजूर कर लेने में मेरा काम एक तरह से तो हलका हो गया है पर दूसरी तरह से जो काम बाकी रह गया है अर्थात् सजा देने का वह काम बहुत ही मुश्किल हो गया है। गांधीजी का उमर बशुमार देशायामी पूज्य मानते हैं मुझे बिभी एमे घादमी के मुकामे के खेत-मुनन का मौका कभी नहीं

मिना है और जायद मिलेगा भी नहीं। फज को सिर्फ बानून के मुताबिक काम करने का ही अधिकार है। बानून एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य में व्यक्तिस्व की वजह से कोई बद नहीं करता इसलिए मुझे दोनों अभियुक्तों को सजा तो दनी पड़ेगी ही। गांधीजी का स्थान सोचमान्य तिमर जैसा ही है। जो सजा उनका ऐसी ही परिस्थिति में मिली थी वही धर्यान् छ मान की बद की सजा गांधीजी को देना मुताबिक होगा। श्री गजरमान बेबर को एक मान की सजा काफी होगी और एक हजार रुपया जुर्माना। जुर्माना न देने पर छ महीन और।

महारमा मरी यह बहुत बड़ी गुनाहिनमती है कि मुझे लाक-माय तिनक क समबरा माना गया। ग्यायापीग महोदय घापन सजा दन क मामन में तिम विचारणीसना म काम लिया और जो दिष्टना दिगायी उमरु निर म घापको हुदय मे घायवाद दना है।

[ग्यायापीग उठकर जाता है। गांधीजी और गजरमान लड़े होते ह। गांधीजी राजेन्द्र बायू को दृश्य से सगाते ह। राजेन्द्र बायू रो पड़त ह। घनेक प्यक्तियों की धीनों से धधु धारा बह निरसती है। घनेक प्यक्ति गांधीजी के पैरों में गिर पड़त ह। एक महान् कादशिक दय।]

मधनिहा

## चीया भक्त

पहला दृश्य

स्वान माहीर में काँग्रेस अधिवेशन का पंडाल

मध्य रात्रि

[काँग्रेस अधिवेशन के इस पंडाल का थोड़ा-सा हिस्सा बुद्धिगोचर होता है। पीछे की ओर मंच का कुछ भाग दिखाता है जिसके एक ओर बक्ताओं के बोलने के स्थान पर लाउडस्पीकर लगे हैं। मंच के नीचे बड़े हुए जनसमुदाय का कुछ भाग बीस पड़ता है। मागपुर के काँग्रेस अधिवेशन के पंडाल के सबूत इस पंडाल में बुरियाँ नहीं हैं। यह जनसमुदाय मूमि पर बिछी हुई बिछायत पर बैठा है। मंच का जो भाग बीस पड़ता है, वह इस समय खाली है। इस भाग में बैठने के लिए गद्दी-तकिये लगे हुए हैं। जनसमुदाय में बातचीत चल रही है, जिसकी बमह से पंडाल में कुछ हल्ला-सा मचा हुआ है। अधिकतर वार्तालाप तो समझ में नहीं आता, पर बीच-बीच में जब कुछ लोग जोर से बोलते हैं तब सब ध्यान से सुनने लगते हैं और इन जोर से बात करने वालों की बातें सुन पढ़ने लगती हैं।]

एक व्यक्ति म कहता है कि मन् १९२० के मागपुर में काँग्रेस

अधिवेशन के बाद कांग्रेस का यह ऊँचा स्तर नागपुर के अधिवेशन के बाद ही जो अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ उस नर में रहा ।

दूसरा हाँ, अहमदाबाद के अधिवेशन के बाद गया में जो अधिवेशन हुआ वह भी स्तर का गिरना ही बताता था । तीसरा मैं भी मानता हूँ । फिर गया का था तो यह स्तर और भी गिर गया ।

चौथा यहाँ तक हुआ कि जो अधिवेशन बलगाँव में महात्माजी का समापनत्व में हुआ, उस तक मैं कोई जान नहीं थी । पाँचवाँ इस सबकी जिम्मेदारी दशरथु दास और प० मोती-मान मेहरा पर है । उन्होंने बिना स्वराज्य मिल ही स्वराज्य पार्टी बना कामिज में जान का आन्तानन छेड़ लिया ।

छठवाँ जिन कामिना का मनु २० में बायबाट किया था उन्ही कामियों में ।

सातवाँ पर भाई मरी ना इस मामले में राय ही दूसरी है ।

बृहत् सौग (एर साय) क्या ?

सातवाँ का भी मर्दा हा चाह हृषियारों वाली अथवा मर्यादायुक्त का मानिज अधिमात्मक वह हमारा नहीं कम मरणा । कामिज प्रकाश ने अमहमाग की अमपनता का एक तरफ म डाँक लिया ।

आठवाँ परन्तु

[फिर हस्ता होत के कारण बृहत् नहीं सुन पड़ता । बृहत् बेर बार फिर मुनापी बता है ।]

एक कौसिस का मोर्चा असफल रहा इसे देशवधु तो भ्रम है नहीं कि वे भी मान सते, पर पं० मोतीमान नेहरू मान गये है ।

दूसरा तुम्हें विश्वास है कि मोतीमानजी और स्वराजी अब इन कौसिसों से स्तीफा वे देंगे ?

पहला मुझे इसमें शोका भी शक नहीं है ।

तीसरा पर देखो मेरी तो स्वतन्त्रता के आन्दोलना व सभी पहलुओं के बावत में यह राय है कि वे असफल होते ही नहीं । न इस दिशा में असहयोग के पहले के काम असफल हुए, न असहयोग आन्दोलन और न कौसिस मोर्चा । हम बराबर स्वराज्य की तरफ आगे बढ़त जा रहे ह ।

चौथा यह तो मैं भी मानता हूँ । अफिन

[ फिर हमसे में कुछ सुनायी नहीं बेता । कुछ बेर बाद सुम पडता है । ]

एक तो आज रात को बारह बजे इमेनियम स्टेट्स हमेया के लिए दफना दिया जायगा ?

दूसरा या यह कहो कि रात्री में बहा दिया जायगा ।

तीसरा हाँ दफना देने के बनिम्पत बहा देना ज्यादा ठीक है ।

चौथा यह क्यों ?

तीसरा इसलिए कि दफनायी हुई बीज फिर गोरकर निकाली जा सकती है । इगलण्ड में जब वहाँ की जनता प्रथमबल म माराज हुई तब उसकी हड्डियाँ उसकी कप स टावरर निकाली गयीं और उसका मावजनिक अप मान बिया गया । इसी तरह यहाँ इसम उल्टी बात

होकर यहाँ की जनता बन्नी इमेनियन स्टेट्स से मुक्त हुई तो वह फिर खोदकर निकाला जा सकता है पर रावी में बहायी हुई खोज का पता न लगता ।

[कुछ लोगों की हँसी ।]

श्रीमद् इस तरह इमेनियन स्टेट्स की सभ्यता का खण्डन कर रहे हैं हम पूरा स्वतन्त्रता की घोषणा कर देंगे ।

[फिर से हँसे में कुछ मुतापी महों देता । कुछ देर बाद मुन पड़ता है ।]

एक मामला बनीयान घाया हमने उमका समय घायनाट किया । हम बनीयान की रिपोर्ट घायी उसे हमने मजूर मिला किया । नेट बमटी बनी उमकी रिपोर्ट को मजूर करने के लिए हमने सरकार का एक मान का समय दिया उम सरकार ने मजूर मिला किया । अब हम मन् १९३० में १९२० के अग्रहयोग आन्दोलन के मानि ही बनीयान के अग्र आन्दोलन से मुक्त माड़ फिर से एक नया आन्दोलन बनाना चाहते हैं पर हम आन्दोलन का रूप क्या होगा ?

श्रीमद् यह सब तय करेंगे वे ही मामला त्रिहान अग्रहयोग आन्दोलन का रूप तय किया या और जो कुछ समय में तय करना होगा वह तय से सरकारकी के विनाये ।

श्रीमद् और उम भारत मिमगी घुसता है ।

श्रीमद् इंग्लैण्ड का बांधव के माहौर के इस अधिवेशन के सम्बन्धि हम देना के घटना के इन्वैजिस्ट्रैट प० जराहर-मान मन् घुन लय है ।

श्रीमद् भाई घुने तो व नही लय घ घुने का लय घ मन्मा

गांधी । और उनके बाद बारदोसी सत्याग्रह के यशस्वी सेनानी सरदार वल्लभभाई पटेल । गांधीजी को दस प्रान्तों में बोट दिये थे सरदार को पाँच ने । जवाहरलाल जी को तो सिर्फ तीन प्रान्तों का बोट मिला था । पर महात्मा गांधी हैं दूरदर्शी भागे आन्दोलन के लिए जिन मीजबानों की जरूरत है वे उन्हें मिल सकते थे जवाहरलाल के समापति होने से ही ।

छठवाँ ही किस्सा जोर डाला गया गांधीजी पर इस अधि-  
वेधान का समापति होने के लिए । पर वे अपने निश्चय पर  
पहाड़ के मानिंद अचल रहे और जब उन्होंने अपना नाम  
हटाकर जवाहरलालजी का नाम प्रस्तावित किया सब  
सरदार कैसे लड़े रहे सकते थे उन्होंने भी अपना नाम  
वापिस ले लिया ।

सातवाँ सचमुच विचित्र व्यक्ति है, महात्मा ।

आठवाँ ही तीन इतनी दूर तक दगता है ?

नवाँ वे हमारे भारतीय ऋषि मुनियों के समान त्रिकामल हो  
गये हैं ।

दसवाँ महा दिव्य-दृष्टि कर्म तथा विचार और परिश्रम की शुद्धता  
तथा पवित्रता में ही मिल सकती है ।

ग्यारहवाँ और एक विचार एक कर्म जैसे चित्र से जिसमें  
किसी तरह की भी शुद्धता का सबसंश न हो ।

बारहवाँ जन-कल्याण ही उनका दिव्य की चिन्ता और रात्रि  
का स्वप्न है ।

तेरहवाँ पर सबका कल्याण चाहे वे विपत्ती ही क्यों

म हों !

घोबरहवां ही, महात्मा गांधी भारतवासियों के बन्ध्याण के जिनने  
दृष्टुव ह प्रप्रजा व बन्ध्याण व उमम कम नहीं ।

[फिर से हस्ता होता है और कुछ मुनायी नहीं देता । कुछ  
बेर बाद मुन पड़ता है ।]

एक ही म कहता हें गांधीजी न मिट्टी व पुनलों को बड़ म  
बड़ बीर और घोटा बनाया है ।

दूसरा ही कहीं-कहीं म बिल्म-बिम को निषाला है ।

तोसरा हम दग में तो बिमी में घाणमिया का एमा निर्माण  
नहीं किया ।

बीमा हम मुन्व में क्या नमाम दुनिया में साम्य ही बिमी न  
घाणमिया का बनान में एमा कामयाबी हासिल की हा ।

[फिर हस्ता होता है और कुछ मुनायी नहीं देता । कुछ  
बर बाद मुन पड़ता है ।]

एक हमारे मन् ३० का यह घाणमन वही म गुरु होगा जहाँ  
मन् २० का घणहयोग घान्तिनन मन्म हृषा पा ।

दूसरा ही घणहयोग के घाण मर्यादा घाना ही साहित्य ।

[यस मन्व्य में बाध-व्यति मुन पड़ती है और उसी के माय  
“महात्मा गांधी की जय”, “भारत माता की जय”, “इन्साब  
जिन्दाबाद”, “साध्यायबाद का माग हो साहिभारे । कुछ ही बेर  
में प० जवाहरलाल नेहन, डाक्टर रिचमन् व० मोनोनाथ नेहन,  
महात्मा गांधी, प० महनमोहन माधवाय, डाक्टर घन्मारी  
मुभायचण्ड बोम, सेन गुजा सरदार बन्तननाई पन्म मोमाना  
घबुतवसाम घात्रार, धी राजगोपालाचय, मठ जयनाथान



बजाज, कस्तूरबा गांधी, स्वस्परानी मेहरू, कमला मेहरू, विजयलक्ष्मी पण्डित, कृष्णा नेहरू, सरोजिनी भाइरू, कमलाबेवी बट्टोपाध्याय आदि का प्रवेश। ये लोग मंच पर बैठते हैं। इनके बैठने के बाद कुछ स्त्रियाँ भाषण देने की जगह पर आती हैं और बन्धेमातरम् का गीत आरम्भ करती हैं। गीत आरम्भ होते ही मंच पर बैठे हुए तथा मंच के नीचे बैठे हुए सब लोग जाड़े हो जाते हैं।]

## बुसरा वृष

स्वान साबरमती घाघम के बाहर का बीमान

समय गायद्वान

[गाथीजी प्रातःकाल की प्राथना में घासन पर बैठे हुए हैं। वगानूपा सदा के समान। तरत के नीचे साबरमती घाघम के निवासी हैं। प्राथना हो चुकी है। प्राथना के पश्चात् निम्नलिखित गीत गाया जा रहा है।]

## गीत

मुने री मने निर्बम के बम राम ।

विमनी गग मर गजन की छाड़ गेयारे बाम ॥

जब मग गज बम घनो बरण्या नज मग नहि बाम ।

निबन ॥ वनराम पुरागघो घाय घाप नाम ॥

दुगन्-मुना नियम भर् मा दिन गह्याय निज घाम ।

दु-गागन की भुजा पवित्र भर् वमन एव भय ध्याम ॥

घप-जम तप-बम घोर मा-बम चौधो है घन दाम ।

मूर विमोर श्या तें मय बम हार का हरिनाम ॥

[गीत पूरा होने पर रघुपति राघव राजाराम की रामपुन होती है।]

महात्मा (रामपुन समाप्त होने पर) घाघम-नियोगियो !

घात्र हम शला की घात्रा मगातर एम एम की घात्रा

बमन के लिए मग्याएर का घा बून बरेंग । घात्र जानन

ह घा मग्याएर नमन जानून का मोट कर रिया जायगा

घोर नमन जानून तोडा जायगा रीरो नामक गाँव में, जो

साबरमती से लगभग दो-सौ मील दक्खिन में समुद्र के किनारे है। गत दिसम्बर में माहौर में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और उसमें मुकम्मिल आजादी का प्रस्ताव पास किया गया उस वक़्त मैं नहीं जानता था कि वह पूण स्वतन्त्रता किस तरह के मर्यादा से हासिल होगी। हप्नों तक इस प्रश्न में मुझे रोशनी की कोई किरण नहीं दिखायी थी। कांग्रेस के इस अधिवेशनके बाद रवीन्द्र बाबू जिन्हें मैं सबसे अधिक इज्जत की नज़र से देखता हूँ साबरमती आश्रम में पधारे और उन्होंने मुझमें पूछा कि अब मैं क्या करने वाला हूँ। लेकिन उन तक का मनै यही जबाब दिया कि मुझे धमी तो वहीं भी रोशनी दिखायी नहीं देती। यकायक मुझे प्रकाश की किरण के दशन हुए। मुझे अन्तःप्रेरणा मिली नमक कानून को तोड़न की। आप जानते हूँ मैं बातों को सब के आसरे सतय नहीं करता।

एक व्यक्ति कमी नहीं।

दूसरा तर्क भावना-हीन होता है।

तीसरा तर्क हानि-साम दयाक हाती है।

महात्मा तर्क व आनरे से कोई बड़ा मसलातयकिया ही नहीं जा सकता। उसक लिए तो थडा की जन्म होती है। इस थडा की जगह है गुठ अन्तःकरण। दुनियाँ के यदे-बड़ काम इस थडा के विद्याग में ही कराये हूँ।

बुछ व्यक्ति : (एब साथ) महात्मा गान्धी की जय !

महात्मा मने मबिनय भबजा के लिए जो नमक कानून चुना

उसे कुछ भाइयों में बंटवा कहा है और कुछ ने खतर-  
नाक। मेरे नजदीकी राजनीतिज्ञा सब का इस बात में  
शक है कि नमक कानून के मातहत कानून को छोड़ने से  
कमी छोटी-सी बात करने से स्वराज्य कैसे मिलेगा ?  
पर जो कुछ मैं कर रहा हूँ उसमें मुझे विश्वास है,  
घटम घिनवाम।

कुछ व्यक्ति महात्मा गांधी की जय !

महात्मा गांधी के साहोदर अधिवेशन के पहलू तक मैं तो प्रंप्र  
सरकार को सहयोग देने के लिए मर रहा था। मुझे  
प्रोपनिवेशिक-स्वराज्य प्रिय आता तो भी सतोष हो जाता  
क्योंकि जल्द ही इस बात की है कि हृदय-परिवर्तन हो।  
प्रोपनिवेशिक स्वराज्य की मेरी कल्पना यह थी कि जब  
आठ तक मैं ब्रिटिश-सम्राज्य छोड़ सकूँ। ब्रिटेन और भारत  
के घातकी तान्त्रिकों का तय करने में जबदस्ती जमी कोई  
बात नहीं बन सकती।

एक व्यक्ति कल्पित नहीं।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) कल्पित नहीं, कल्पित नहीं।

महात्मा साहोदर गांधी के मुस्लिम छात्रों के प्रस्ताव के  
बाद और गठित घटनाएँ शुरू करने में पहलू देने फिर  
वास्तविक को गलत विचार और उस उदा के एक देशवासी  
नेत्रिनाथ गिनाहम के साथ उनका पास भजा। उन पर  
मैं मने उनमें स्पष्ट बातों की भाँति की थी। उन स्पष्ट  
बातों में एक बात का पता चलता था कि वास्तविक को पर  
वास्तविक में मुझे उम्रपिठी का उपाय करने की आवश्यकता

नहीं की वे मुझसे मिले भी नहीं। उनके सेक्रेटरी साहब का चार लाइन का एक छोटा-सा जबाब आया। मैं धुटने टेककर रोटी मांगने गया था और मुझे मिला पत्थर !

एक व्यक्ति वेद की बात है।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) अत्यन्त वेद की अत्यन्त मद की।

महात्मा सब मेरे पास सबिनय अवज्ञा शुरू करने के गिवा दूसरा कोई गस्ता नहीं था। पर अहिंसा पर मेरा अखण्ड विश्वास है। जान-बूझकर मैं किसी प्राणी को दुःख नहीं पहुँचा सकता मनुष्यों को तो दुःख पहुँचाने की बात ही नहीं। इसलिए जहाँ मैं ब्रिटिश राज्य को इन देश के लिए अहिंसाप समझता हूँ वहाँ मैं एक भी अंग्रेज को या भारत में ठमक किसी भी मुनासिब स्वामी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। मेरी देवभक्ति सभीभ नहीं है। यह किन्हीं दूसरे देश या राष्ट्र का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती। हिन्दुस्तान की आजादी स दुनियाँ का नुकसान न होकर अग्रगण्य होने वाला है।

कुछ व्यक्ति महात्मा गांधी की जय !

महात्मा और आजादी में हासिल करना चाहता हूँ अहिंसा मिर्च अहिंसा से। इसीलिए कांग्रेस की काय-अभिति ने यह फैसला किया है कि गरयाग्रह का यह आन्दोलन उन्हीं लोगों के द्वारा शुरू और गन्धालित होना चाहिए जिनका पूर्ण स्व-राज्य हासिल करने के लिए अहिंसा में धार्मिक विश्वास हो। और श्रुति कांग्रेस-मण्डल में सब एक ही स्त्री-गुरुय नहीं है यन्कि एक लोग भी धार्मिक है जो अहिंसा की मुक्त की बलमान स्थिति में मिर्च नीति के तौर पर मानते हैं,

इमनिए बांधम की बाय-ममिति मे मुझे अधिकार दिया है कि उन्हीं लोगों को माय लेनर इम घान्दोएन का दुरु बरू जिहें अधिमा में धार्मिक विद्याम हो। म चाहता हूँ भारत में एम अधिगक धमहयोगी और मय्याग्रही हा तिनके निग निग्या जाय कि उन्हाने गानियों का बिना शोध क महा या गोली मारने वाला के निग प्रापना करते हूण और उन गूनियों को भी उन्हें अज्ञानी मान माफ करते हूण। इगके निग मने आप उय्यामी माधियों को घना है।

एक व्यक्ति इम गौभाग्यगामी ह।

शेष समस्त जन (एक साथ) महान् गौभाग्यगामी परम गौभाग्यगामी।

महात्मा अथ तब इम धाधम का मने हवी गालिग रक्ता या वि मय्य वरुम तब अनुगामन की धाधन म दृता याव। मुम मगता है कि मागा ने धाधम पर जा विद्याम रक्ता है और मित्रा मे उम पर जा प्रम प। धारिग का है उमका धगर पर पाव है तो धाधम क निग अथ मय्याग्रह गट्ट में निहित गुणा का मुदा एन का पकत धा गया है। धगर जीवन क पण्ट मय बा भी धाधम यह जीवन म गिया गया का धाधम क धोर मर मिग ज्ञान म हा गट्ट का मरी धोर धाधम का धनार् रानी। मनिग म एम धाधम का धात्र बल बगता है धोर प्रतिता बगता है कि मय्याग्रम मय्य ही इग धाधम का मोदुगा अदधानग। प्रतिता पर एग रहना ही गय्या धम है।

कुछ व्यक्ति महात्मा गार्थी का अर्थ।

महात्मा अमर में गिरफ्तार हो जाऊँ तो क्या किया जाना चाहिए, यह मैंने 'यंग इंडिया' में लिख दिया है। सत्याग्रह की शुरुआत जब ठीक ढंग से हो चुकेगी तब मुझे उम्मीद है कि देश के कोने-कोने से सहयोग मिलेगा। आन्दोलन की कामयाबी के लिए इच्छा रखने वाले हरेक व्यक्ति का धर्म होगा कि वह इस आन्दोलन को अहिंसारमक और नियन्त्रित बनाय रखे। इस आन्दोलन का आरम्भ एक गाँव से इसलिए हो रहा है कि भारत में सौ में से अस्सी आदमी गाँवों में रहते हैं। गाँव ही सच्चा भारत है।

उपस्थित व्यक्ति भारत माता की जय !

महात्मा हमें मनसा वाचा कमना अहिंसक रह ईश्वर में विश्वास रख अपना काम शुरू करना है। ईश्वर और सत्य में कोई फर्क नहीं। ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर। सत्य का दर्शन बगैर अहिंसा के ही नहीं संभव। अहिंसा ही माध्यम और साधन है। हम प्राणों की बाजी मगा रहे हैं ईश्वर हमें शक्ति दे।

[महात्मा गान्धी लड़े होते हैं और वास्तव में रहते हुए एक ऊँचे से ऊँचे की दृष्टि से हमें हाथ में पकड़ा लेते हैं। वे खाना खाते हैं और उनके पीछे जयघोष के गान-भेदी मारों के साथ उनके साथी।]

सत्य यथार्थता

## तीसरा दृश्य

म्यान एक मरे" चाहर

ममय प्रातःकाल म लेकर रात्रि तक घनक रिज

[सफेद चाहर पर मोचे सिखे दृश्य दिखायो बेटे है, अनेक बार नारे भी सुन पड़ते ह और गीत भी । पहले दृश्य में सफेद लाली के वस्त्र पहने हुए कुछ युवक और बेगरी साड़ी पहने हुए कुछ युवतियाँ निम्नलिखित गीत गाते हुए एक गाँव से गा-धीत्री का स्वागत करने के लिए बाँधेस क तिरगो भण्डों के साथ निकल रहे ह । इस भण्डे के अर तीन रंग बेगरी, सफेद और हरे हो गये ह ।]

## गीत

त्रिन्गी है त्रान्निमय त्रान्नि में बिनाये जा ।  
 गापी म प्रातः मात्र वीर जबाहर त्याग यत्र  
 मावमाय्य को धाबाज दग में पमाय जा ।  
 पूजा लमो दुष्मि जाग जाय बायर भी  
 धमनिपा में रक्त को धागतो बहाय जा ।  
 त्रिन्गी है एक गन त्रान्नि उममें है धिगग  
 व धिगग त्रिन्ना ल जम मक जमाय जा ।  
 त्रिन्गी हम परीम बगद वीन मरना है मगद  
 रिग भी मू धाया वार धाब का बहाय जा ।  
 त्रिन्गी है एक जूषा दूर म दगना है बया  
 माग बहाय घना जान गद पर मगाय जा ।



[गीत के बीच-बीच में निम्नलिखित गाने भी गगाये जा रहे हैं।]

महात्मा गान्धी की जय ।  
 भारत माता की जय ।  
 जुग-जुग जियो धापू ।  
 इन्कसाव जिन्दाबाद ।  
 साम्राज्यवाद का नाश हो ।  
 भारत धान्दा हो ।

[अब गान्धीजी अपने सापियों के साथ आते हुए बिसापी बने हैं। यह समूह पुष्पों की वर्षा कर गान्धीजी का स्वागत करता है। उसी तरह चरम सीमा को पहुँच जाता है।

यह दृश्य सुप्त होकर गान्धीजी के डाब्डी गाँव की ओर कूच के अनन्त अद्भुत दृश्य बिसाया बने हैं।

ये दृश्य सुप्त होकर डाब्डी के समुद्र-तट पर गान्धीजी नमक बटोर रहे हैं यह दृश्य बिस पड़ता है।

यह दृश्य सुप्त होकर गान्धीजी की गिरफ्तारी का दृश्य बिसापी बने हैं।

यह दृश्य सुप्त होकर देश में अनन्त स्थानों के नमक काकूम लोड़े जान के दृश्य बिसापी बने हैं। इन दृश्यों में कई जगह स्वाभाविक नमक के स्थान पर कमिजल दंग से नमक बनाय जान के दृश्य भी बिस पड़ते हैं।

य दृश्य सुप्त होकर घरसना में नमक के कारखानों पर के पाव के कुछ दृश्य बिसापी बने हैं और उस वक्त पुत्तिस द्वारा लाठी-चाक और गोसाबारी के दृश्य बिस पड़ते हैं।

ये दृश्य सुप्त होकर वेगावर में गोसावारी के दृश्य बिल  
पड़त है।

ये दृश्य सुप्त होकर मध्य प्रदेश में जंगल सत्याग्रह के दृश्य  
दिखायी देने ह, यहाँ भी सरकारी इमन, साठी-खाज और  
गोसावारी के रूप में बिल पड़ता है।

सभी दृश्यों में अत्यधिक गति है, जस्ताह है। सारे दृश्य  
जोर-जोर के तारों से मुररित ह। सरकारी इमन बड़ी कूरता  
से होता है। अतः अनेक स्थलों पर धीर रस की धरम सीमा में  
कभी 'अमानक' रस और कभी कदण रस की पराकाष्ठा मिल  
जाती है।]

सधु यवनिहा

### चीया दृश्य

श्याम मन्त्र के गाममत्र परिपद का श्राव

ममय मध्याह्न के मया

[इस श्राव का बहुत हिस्ता हो बिल पड़ता है। इस हाल तथा  
इसमें गोममत्र परिपद की बटक जिन समय हुई उसको सजा  
घट के इनन बित्र प्रमाणित हो चुक ह कि उसके यजन की  
जगरत नहीं। जिस बरन बश्य एतना है, उस समय इस श्राव  
में कोई नहीं है। दृश्य गुमते ही श्रीमती मरोजनी नाइटू, श्री  
महादेव भाई बेमार्ट, श्री टबदाम गांधी, श्री प्यारेसास और  
श्रीरा बहन का प्रबल।]

[गीत के बीच-बीच में निम्नलिखित गारे भी गगाये जा रहे ह।]

महात्मा गांधी की जय ।  
 भारत माता की जय ।  
 जुग-जुग जियो वापू ।  
 इन्नाव जिन्दाबाद ।  
 साम्राज्यवाद का नाश हो ।  
 भारत आजाद हो ।

[अब गांधीजी अपने साधियों के साथ भारत हुए बिस्वायी बेत हे । यह समूह पुष्पों की बर्पा कर गांधीजी का स्वागत करता है । उस्ताह अरम सीमा को पहुँच जाता है ।

यह बुद्ध सुप्त होकर गांधीजी के डाण्डी गाँव की घोर कूच के अनेक अद्भुत बुद्ध बिस्वायी बेते ह ।

ये बुद्ध सुप्त होकर डाण्डी के समुद्र-तट पर गांधीजी ममक बटोर रहे ह, यह बुद्ध बिल पड़ता है ।

यह बुद्ध सुप्त होकर गांधीजी की गिरफ्तारी का बुद्ध बिस्वायी बेता है ।

यह बुद्ध सुप्त होकर देश में अनेक स्थानों के ममक कानून तोड़े जान के बुद्ध बिस्वायी बेत ह । इन बुद्धों में कई जगह स्वाभाविक ममक के स्थान पर केमिकल ठंग से ममक बनाय जान के बुद्ध भी बिल पड़त ह ।

य बुद्ध सुप्त होकर घरसना में ममक के कारखानों पर के धावे के कुछ बुद्ध बिस्वायी बेते ह और उस वक्त पुतिल द्वारा गठी-आर्म और गोलाबारी के बुद्ध बिल पड़ते ह ।

ये दृश्य सुप्त होकर पेगापर में गोसावारी के दृश्य बिग पड़त ह ।

ये दृश्य सुप्त होकर मध्य प्रदेश में जगत सरयाग्रह के दृश्य दिगायो बेते ह यहाँ भी सरकारी दमन, लाठी-धारा और गोसावारी के रूप में बिग पड़ता है ।

सभी दृश्या में अत्यधिक गति है, उस्ताह है । सारे दृश्य जोर-जोर के नारों से सुगरित ह । सरकारी दमन बड़ी क्रूरता से होता है । अतः अन्नक स्यसों पर घोर रस की घरम सोना में कभी भयानक रस और कभी बदल रस की पराकाष्ठा मिस जानी है । ]

सद्यु पवनिरा

### चीया दृश्य

श्यात यान्न मे गामयत्र परिषद् वा शान

गमय यस्याद् वा ममा

[ इस शान का कुछ हिस्सा ही बिग पड़ता है । इस शान तथा इसमें योगमत्र परिषद् की बटव जिग गमय हुई उसरी मत्रा घट के इनन बिग प्रगित हो चुब है कि उमर बचन की जगरत नहीं । जिग यान्न दृश्य गतता है, उम गमय इस शान में कोई नहीं है । दृश्य सुप्त ह । श्रीमती मरोत्रनी माइर का महारव भाई बगार् धी दयानम गांधी, धी प्यांकाण टोर भीरा बहन का प्रथम । ]

सरोजनी माइडू स्वस्वाग्रह के बाद गान्धी धरमिन-वेबट के जरिये चाहे भारत को स्वाधीनता न मिली हो लेकिन हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि की हैसियत से गान्धीजी और ब्रिटिश गवर्नमेंट के नुमाइन्दे की हैसियत से साईं धरमिन का बराबरी के दर्जे से बठकर एक समझौते पर दस्तखत करना अंग्रेजी हुकूमत के इतिहास में एक नयी बात थी।

बेवबास हममें कोई शक नहीं।

सरोजनी माइडू इसीलिए जिस समय इस पत्र पर दस्तखत हुए मुझे उम्मीद हो गयी थी कि प्रायः चलकर भारत के राज नैतिक मामलात में कुछ अच्छे गुल तिमेंग।

महाबेब भाई बेसाई पर उस समझौते के पत्र की स्थाही भी न मूल पायी थी कि सरकारी अफसरों ने उस समझौते को तोड़ना शुरू कर दिया।

प्यारेनात और अब तो भारत से जो समाचार आ रहे हैं वे बड़े खिन्ताजनक ह।

सरोजनी माइडू इतन पर भी मन्दन को इस गाममेज-परिपद् में घाने के समय उस पत्र के वक्त उम्मीदा था जा पीया मेरे दिम में उगा था उसमें कुछ पून निकल प्राये थे।

महाबेब भाई बेसाई और प्राज जब यह गाममेज-परिपद् परम हो रही है, उन बक्त पत्रों के पहल के बुम्हमा भी गय।

सरोजनी माइडू बुम्हमा हा नहा गय, मूरबर भर गय। और उम्मीदा था वह पीया भी मूरबता मजर आ रहा है।

प्यारेनात बाग यह है कि इस परिपद् का घटन ही इस तरह

हृमा वा कि परिपद् कभी कामयाव हो ही नहीं सकती थी ।  
महादेव भाई बेसाई हा यह परिपद् भारत को स्वतंत्रता देने  
क उद्देश्य से बुनायी ही नहीं गयी । यह बुलायी गयी थी  
इस धान को सिद्ध करने के लिए कि भारत स्वराज्य के  
मायब ही महा है ।

प्यारेसास हमीलिए आ सोग साम्प्रदायिकता के सबसे बड़  
हामी हैं उन्हीं को यहाँ बुलाया गया ।

महादेव भाई बेसाई और ब्रिटिश गवर्नमेंट की पुरानी 'द्विवाइड  
एण्ड रूम की पालिसी के अनुसार अब यह सिद्ध कर कि  
हम धन धापन के भगडे तय नहीं कर सकते इस परिपद्  
की प्रमत्तता का सारा दोष हमारे मिर पर मड़ स्वराज्य  
का मबान फिर स रगई में डाल दिया जायगा ।

सरोजनी माइडू पर यहाँ आ मने धाये थे वह चाहे सरकार  
म न मिला हो, मबिन यहाँ की जनता पर तो बापू एक  
घनीब घमर छोड़कर आ रहे हैं ।

प्यारेसास दरघमल उनका यहाँ का काम इस परिपद् के  
भीतर कम और बाहर ज्यादा हुआ है ।

महादेव भाई बेसाई हा इसमें शक नहीं ।

धीरा बहन इस परिपद् क लिए तो व ज्यादातर 'वारिंग'  
मरु का उपयोग करता है ।

सरोजनी माइडू परिपद् के गिवा विजनी धाम सभाओं में  
उन्होंने भाषण दिये । कितने सोगों से मिल ।

धीरा बहन मुझ तो उनकी यहाँ की मबर की पहलकन्मी  
हमारा मा रहेगी ।

महादेव भाई बसाई कितने मद्य कितनी घोरतें कितने बन्धे  
इन सहस्रकर्मियों में साथ हो जातें थे ।

प्यारसाय कितने लोग कितनी तरह के सवाभ उनसे पूछते थे  
उनका व कसा जबाब दते थे ।

बेबदास बन्ध जब अकिस गांधी बहुर उनसे निपटते थे उस  
बकम क नजारे ता भुमाये नहीं जा सकते ।

मौरा पहन पनासवर एक दिन एक बन्ध म जब उनसे पूछा—  
गांधी तुम्हारा पठमूम कहाँ गया ? तब उस पर जब बापू  
नियन्त्रिताकर हँस बह तो एक धजीब ही दुश्य था ।

[प० मबममोहन मासवीय का प्रवेश ।]

सरोजनी नाइडू तो मानवीयजी घा गये अब धोर लोग भी  
घा रह हाग ।

[ये लोग हाथ जोड़कर मासवीयजी को प्रणाम करते ह ।  
मासवीयजी उभी प्रकार उत्तर बेंते हैं ।]

मासवीय तो सरोजनी दबी घाअ इस गोसमेज परिपद् की  
समाप्ति हा जायगी ।

सरोजनी नाइडू ही पण्डितजी घोर म यह भी समझती हैं  
कि बाबम धोर सरकार की जो अम्घापी मुलह हुई थी  
बह भी इमी परिपद् क साथ रसम हो जायगी ।

मासवीय (बीघ निश्वास छोड़कर) हीं भाग्न म जा ममा  
घार मिय रहे ह बे तो अत्यन्त निराशाजनक है । यहाँ  
बृछ हाता ता बटापिन् वही की स्थिति भी मुश्कली पर  
यह गासमज परिपद् लमी अमकस हुई कि क्या बह !

महादेव भाई बसाई तिम डग मे यह संगठिन हुई थी उससे

इसकी मफनता की प्राणा ता कम ही थी ।

मानवीय पर इसाई तुम मरा म्बभाव ता जानत हो, मुझे  
ता क्वचिन ही निगगा हाती है । घोर निगगा के वायु-  
मण्डल में भी मुझ ता मरा प्राणा की बिरण दीगनी रहती  
है । फिर भी यह गानमज परिपद् इस प्रकार पूणतया  
प्रयफम हा जायगी यह मनहीं समन्ता था ।

[घय घौर भी सोग घाने सगते हैं । जिनमें प्राणा साँ,  
महम्मदप्रती जिन्ता, मौलाना दीकतप्रसी, फजसुस हक, डाक्टर  
मुज, महाराजा बीकानेर, सर तेजबहादुर सप्रू श्रीनिवास  
गाफ्री, श्री जयवर, जफरुन्ना साँ, डाक्टर अब्दुलकर, सर  
अमनलाल सीतसवाइ, यगम शाहनबाज आदि प्रमुख हैं । श्री  
महारेब भाई देसाई, प्यारेसात, देवदास, घौर भीरा बहन बगर्को  
क स्थान पर बते जाने ह । दोय सोग एक-दूसरे से मिलते-जुलते  
सहस्रों के स्थान पर बटने ह । घब श्री रेम्डे मकदानल के साथ  
महात्मा गान्धी आते ह । गांधीजी सदा के सदा घुटने तब  
संगोटी घारत बिघ ह ऊपर के गरीर पर गरम बपटे की एक  
मपड बाहर है गिर गुला है घौर परों में अल्पक है । मकदानल  
घौर गांधीजी को बेग इनर म्वागत के लिए सब सोग लडे हो  
जाने ह । मकदानल मभारति के स्थान पर बटने ह घौर  
गांधीजी उनर निबट की बूमों पर । कुछ डेर बाद एक बागज  
को बेगवर गांधीजी बहन ह ।]

महात्मा मभारतिजी बना घोर भात्या ! इस परिघट क  
गम होन क पत्त घट एक हा काम ग गया है बह है इस  
परिघट क मभारति को धन्यबाद का प्रन्नाव मजूर



महादेव भाई बेसाई किन्तने मर्द कितनी धीरतें कितने बच्चे इन पहलकदमिया म साथ हो जाते थे ।

प्यारेसाय कितने सोग किन्तनी तरह के सवाल उनसे पूछते थे उनका व कसा जबाब दते थे ।

बेबबास बन्व जब अकिल गान्धी कहकर उनस लिपटते थे उस वकन व नजारे ता भुसाये नहीं जा सकते ।

मीरा बहन ग्रासकर एक दिन एक बच्चे ने जब उनसे पूछा—  
गान्धी तुम्हाग पतमून कहीं गया ? तब उस पर जब बापू मिलसिल्लाकर हँस बह तो एक अजीब ही वृत्त्य था ।

[प० मदनमोहन मालवीय का प्रवच ।]

सरोजनी नाइडू सो मालवीयजी आ गय अब और साग भी आ रहे हाग ।

[ये सोग हाथ जोड़कर मालवीयजी को प्रणाम करते ह ।

मालवीयजी उसी प्रकार उत्तर देते ह ।]

मालवीय सो सरोजनी दबी आज इस गोममेज परिपद् की ममाप्ति हा जायगी ।

सरोजनी नाइडू हा पण्डितजी और म यह भी ममझती हूँ कि बापूम और मरकार की जो अम्पायी मुमह हुई थी बह ना इसी परिपद् क साथ मरम हो जायगी ।

मालवीय (बीब निद्रवास छोड़कर) हाँ भारत मे जा समाचार मिल रह ह व तो अत्यन्त मिरागाजनक ह । यहाँ कुछ होना तो बदाचित् वहाँ की स्थिति भी सुधरती पर यह गोममेज परिपद् लयी अमफल हुई कि क्या कहूँ !

महादेव भाई बेसाई तिम वंग मे यह मगटिन हुई थी उससे

इसकी मफलता की प्राणा तो कम ही थी।

मालवीय पर देसाई तुम मरा म्यभाव तो जानते हो, मुझे  
ता बबचित ही निरागा हानी है। घोर निरागा व वायु  
मण्डल में भी मुझे तो मरा प्राणा की किरण दीगमी रहती  
है। फिर भी यह गालमज्र परिपद् इस प्रकार पूणतया  
भ्रमभ्रम हा जायगा यह मनहीं ममभना था।

[अब और भी लोग घाने सगते ह। जिनमें प्राणा खाँ,  
मुहम्मदअली जिन्ना, मौलाना गोबतअली, फजलुस हक, डाक्टर  
मुझे, महाराजा बीकानेर, सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीनिवास  
शास्त्री, श्री जयकर, जफरुल्ला खाँ, डाक्टर अब्दुलकर, सर  
अमनलाल सीतलवाड, बेगम शाहनबाद आदि प्रमुख ह। श्री  
महादेव भाई देसाई, प्यारेलाल, बेवबाम, और मोरा यहन बगवों  
के स्थान पर घते जाते ह। गय लोग एक-दूसरे से मिसते-जुसते  
महस्यों के स्थान पर घटन ह। अब श्री रेम्डे मंडलानस के साथ  
महारामा गांधी घाते ह। गांधीजी सदा व सदा घुटने तक  
संगोटी घारण बिचे ह ऊपर के गरीर पर गरम कपटे की एक  
सपद धार है, मिर गुला है और परों में लपल है। मंडलानस  
और गांधीजी की बेग इनर स्वागत के लिए सब सोय लडे हो  
जाते ह। मंडलानस सभापति के स्थान पर घटने ह और  
गांधीजी उनके निबट की बूमों पर। कुछ बेर बाद एक वागत  
की बंगकर गांधीजी बहन हें।]

महारामा गंधीजी घाना घोर भाषा। गय परिपद् व  
गाम होन के घान घद तक ही काम रू गया है बह है इस  
परिपद् व गंधीजी की घन्धारा का प्रभाव मरु

करना । मैं उस प्रस्ताव को आपके सामने पेश करता हूँ । यह प्रस्ताव मैं आपके पढ़कर मुना देता हूँ । (सामने रखे हुए कागज को पढ़ते हुए) 'यह परिपद् अपने सभापति को परिपद् का नाम मुन्शरू रूप से बनाने के लिए हृदय से धन्यवाद देती है । इस परिपद् की कमटियों में और परिपद् के लुसे अधिवेशन में बकत-बकत पर मैं कुछ न कुछ कहता रहा हूँ । आज अन्त में भी मैं कुछ बातें कह देना चाहता हूँ । आज यह परिपद् सत्तम हो रही है । यहाँ से हम लोग जल्दी ही अपने अपने स्थान को जाने वाले हैं । मैं पहले भी यह दावा कर चुका हूँ कि कांग्रेस पञ्चासी फ़िसवी भारत की जनता की प्रतिनिधि है । आज मैं यह दावा करता हूँ कि अपनी सभा के अधिकार से कांग्रेस राजा महाराजाधों जमींदारों और सिद्धित वग की भी प्रतिनिधि है । इस परिपद् में शामिल होने के लिए जो दूसरे नुमाइन्दे आयें वे स्वाम-स्वाम बगों के प्रतिनिधि होकर आयें हैं । कांग्रेस ही एक एसी जमात है जो साम्प्रदायिकता से दूर है । इनका मसल सबके लिए जाति वर्ण और धर्म के भेद भाव का त्याग किया गया है-सा गुना है । इसका मकसद बहुत ठोसा है इसलिए यह मुमकिन है कि कुछ लोग हमके पास न आत हा मकिन कांग्रेस उन्नति दीप्त जमात है भारत में दूर से दूर गाँव में भी इसकी जगह है । इतने पर भी यहाँ कांग्रेस का अनेक दमा में न एक दस माना गया । मकिन यह भी याद रखना चाहिए कि कांग्रेस ही एकमात्र एगी जमात है जिनमें किया वैमता

मार घामद हो सकता है। यही मुक्त तमा लगा कि आप  
 मुक्त पर ता शायद विद्वान् बनने ह पर काप्रम पर नहीं।  
 यकिन एक मिनट के लिए भी मुक्त उम महान् मय्या मे  
 घामद म ममन्निग त्रिमसे कि म ता समुद्र की एक बुंद के  
 समान है। म काप्रम म बहुत छोटा है मार मगर आप  
 मुक्त पर विद्वान् बन मुक्त का जगह त्त होता म आपका  
 घामन्निग करता है कि आप काप्रम पर भी विद्वान्  
 कीजिए घामया मुक्त पर आपका जा विद्वान् है यह  
 किसी काम का नहा क्योंकि काप्रम म जा अधिपार मुक्त  
 मिता है उगक सिवा मर पाम कोई अधिपार नहा। मुक्त  
 यही यह भी महसूस हुआ कि घनग घनग जातियों के  
 नुमाइनों का घरने पूर बन के गाय घरनी घरनी मांग पर  
 जोर देने के लिए उम्माहित किया गया था यकिन गाम्प्र-  
 दायित समझौते का गवान आपार रूप नहीं था हमारे  
 गामने मुख्य प्रान मा गामन विधान का निर्माण था। क्या  
 छ हजार मान दूर इन नुमाइनों का मिय गाम्प्रदायित  
 गयाम हम करने के लिए बुलाया गया था म प्रधान मंत्री  
 मिरर मरडानम का गाम्प्रदायित समझौते करने के  
 लिए पम बनान का विगर्षी नहा था वाने कि उनका  
 निष्प मुमनमाना छोरे मिरगा तर गामिन रह। दूसरे  
 घनगमरक जातिया के भाका का म मिर भी गामन्  
 सकता है यकिन घाना का मर म गय किया गया था  
 तो मर लिए मरम गयान निष्प पाष है। हमका मातब  
 यह होता है कि हमारे मर पर घनगमरक का मर

हमशा रहेगा। हम नहीं चाहते कि अस्पृश्यों का एक असम जाति के रूप में वर्गीकरण किया जाय। सिक्ख सदैव के लिए सिक्ख मुसलमान हमशा के लिए मुसलमान और ईसाई सदा के लिए ईसाई रह सकते हैं लेकिन क्या अछूत भी हमेशा के लिए अछूत रहेंगे? अस्पृश्यता जीती रहे इसके बनिस्पत मैं यह ज्यादा अच्छा समझूँगा कि हिन्दू धर्म ही डूब जाय। इसलिये मैं अपनी पूरी ताकत के साथ कहता हूँ कि इस बात का विरोध करने वाला अगर मैं ही अकेला होऊँ तो भी मैं अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करूँगा। भारत पहुँचने पर मैं नहीं जानता कि मेरा रास्ता किस दिशा में होगा लेकिन इसकी मुझे खतरा भी फियर नहीं है। समापतिजी अगर मुझे आपस बिसकुल विभिन्न दिशा में भी जाना पड़े तो भी आप हार्दिक धन्यवाद के अधिकारी हूँ। इसलिए मैं यह प्रस्ताव यहाँ पेश कर रहा हूँ।

सधु यमनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्वान् यमनिका जैन का एक शीघ्र

समय मगध्या

[दूर पर जैन की ऊँची बीवाल का कुछ हिस्सा हीन पड़ता है। कुछ दूर पर एक धाम के बज के नीचे महार्त्मा

गान्धी अपने पलंग पर सेट हुए हैं। उनके पास-पास बहुत सा जनसमुदाय भी एकत्रित है। इनमें कस्तूरबा गान्धी, प० मदनमोहन मासवीय, सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वल्प रानी महल राजगोपालाचारी वासन्तीदेवी, उमितादेवी, महादेव भाई देसाई, प्यारेसाह, टाकूर बापा, डा० अम्बेडकर, एम० सी० राजा, सर तजबहादुर सभू, प० हृदयनाथ कुंजद, श्री जयबदर, सर पुरयोत्तमदास ठाकूरदास सखटुब श्री अम्बासायन सारा भाई देवदास गान्धी, धनयामादास बिडला बृजहृत्पल चौकीवाल गजरसाह बकर प्रमुख हैं। परन्तु दूर होने के कारण इनमें से धनद स्पष्ट रूप से नहीं दिखायी देते। रवीन्द्रनाथ ठाकूर और श्रीमती सराजनो माइटू का प्रयोग। ]

रवीन्द्रनाथ गजरनाथ का गान्धी जन्म ही महात्मा थे। मने हा पान-नहय उह महात्मा कहा था। व उस दन म भी कना बह ह त्रिगम व ह। व उम घादन म भी कही बह ह जो उहाने धनन जीपन का धानन बनाया है। व गजरनाथन व कना भारी गंगठन कानन का कानि रगन पात जन-नता नरिब-भुगार्य परन्तु जावन क नन मब पहलघों की घनगा भी उनमें जो मानवता है वह इन सब दाना म कही बहा है क्यकि उनक कान भी काव उनका मानवता का मामिन नही कर पात। व मय पर जात दन ह मापना की कानता पर जात ही ह कानमिन घनगा उनका धानन है धोर धरी उनका मफना मानवता की कसोरी है। उहान जो तुल किया उमम पात गदमन मगात मान गया कि व मगा मा व परन्तु मगा कानि न प नन बह कभी नगा थ

विताने बड़े हिन्दू जाति की एकता की रक्षा करने के लिए अस्पृश्यों के प्रश्न पर यरबदा जेल में यह धनदान करके हो गये हैं। अथ अथ सवण हिन्दुओं और हरिजनों में समझौता हो गया संस्कार ने भी उन स्वीकार कर लिया और व इस धनदान को तोड़ रहे हैं उस समय में तुम्हें एक बीज दिखाता हूँ। (जेल में से एक पत्र मित्राज्य उसे सरोजनी माइडू को बेंते हुए) ता० २० सितम्बर को धनदान आरम्भ करने के पहले रात को डार्ले बजे उठकर महात्मा ने यह पत्र मुझे भेजा था।

सरोजनी माइडू (रथीभूनाय ठाकुर के हाथ से पत्र लेकर उसे पढ़ती ह) 'आज मध्याह्न में मैं अग्नि-परीक्षा के द्वार में पुसूंगा। यदि आप मेरे प्रयत्न की सफलता के लिए आशीर्वाद भेज सकें तो मुझे बस मिलेगा। आप मेरे सबसे बड़े और सबसे सच्चे मित्र रहे हैं क्योंकि आपने सदा मुझे अपने विचार स्पष्ट कहे हैं। यदि आपका हृदय मेरे इस काय को निन्दनीय मानता है तो उसे भी स्पष्ट रूप में कहिए। मैं आपकी ऐसी आलोचना को भी अपने उपवास के समय निरोधाम करूँगा। मुझ में वैसा गव नहीं है जो मुझे अपनी भूल को स्वीकार करने में बाधा पहुँचाव। यदि मुझे विश्वास हा जाय कि मैंने कोई भूल की है तो उस में सबदम स्वीकार करूँगा, चाहे उस स्वीकृति का मुझे कितना भी बड़ा मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। परन्तु यदि आपका हृदय मेरी इस कृति का समर्थन करता है तो इस उपवास को सहन करने में बह मुझे दक्षिण दगा।' (घाँसों

में घातु भरकर यह पत्र रबीन्द्र बाबू को लौटाती ह और उनकी छार देखती ह ।)

रबीन्द्रनाथ छार, मद्यप्रतापका इस पत्र के पहुँचन के पहलु हा इस वृत्त का वस्तु मुनकर जा तार मन उन्हें मजा था वह भी पढ़ सा । (दूसरे जेब से एक कागज निकाल सरोजनी नाइडू को देत ह ।)

सरोजनी नाइडू (रबीन्द्रनाथ ठाकुर से कागज लेकर पढ़ते हुए) "भाग्य की एकता और उसकी सामाजिक स्थिति का प्रगुण्य ग्यन क विण धारण जीवन का समिधान भी गवया उचित है ।" (फिर ये उसी प्रकार कागज लौटाने हुए रबीन्द्रनाथ ठाकुर की ओर देखती ह ।)

रबीन्द्रनाथ (गद्गद् स्वर से) और और मगजनी श्री, एग महान् धनधान का इस प्रकार मयम समाधि पर बान बोन धात्र मुन्मम बोन धात्र मुन्मम 'मुन्मम अधिन एगो मन हा गवना है ।

सरोजनी नाइडू हा त्रिम तरह धाग में तपन म मान में और ग्याग मदन का जाना है उसी प्रकार इस धनधान में सर कर मन्मगता का यह महान् मनाती दुर्गी समाग का प्राग मानय-शपन क मुग की धागा और मानयता का भाग्-विधाता और भा तज्ज्या होकर निकसा है ।

रबीन्द्रनाथ छार और मगजनी क्या म मशी जानना व धरन शपन में मरन हाग ह या धमपन । पर धरनता और धमरपता ता धुन एगो सीरें ह दुद क मग्ग र्ना क गमान व धमरन भी हा मरन ह पर उनका जानन मग



चित्तने बड़े हिन्दू जाति की एकता की रक्षा करने के लिए धर्मपुत्रों के प्रश्न पर यरबदा जेल में यह धनदान करके हो गये हैं। अब जब सबर्ण हिन्दुओं और हरिजनों में समझौता हो गया सरकार ने भी उस स्वीकार कर लिया और व इस धनदान को छोड़ रहे हैं उस समय में तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ। (बेब में से एक पत्र निकाल उसे सरोजनी माइडू को देते हुए) ता० २० सितम्बर को धनदान प्रारम्भ करने के पहले रात को ढाई बजे उठकर महात्मा ने यह पत्र मुझे भेजा था।

सरोजनी माइडू (रबीन्द्रनाथ ठाकुर के हाथ से पत्र लेकर उसे पढ़ती ह) 'भाज मध्याह्न में मैं धनि-वरीदा के द्वार में धुसूंगा। यदि आप मेरे प्रयत्न की सफलता के लिए धात्री बर्दा भेज सकें तो मुझे बस मिलेगा। आप मेरे सबसे बड़े और सबसे सम्भव मित्र रहे हैं क्योंकि आपने मुझे अपने विचार स्पष्ट कहे हैं। यदि आपका हृदय मेरे इस काम को निन्दनीय मानता है तो उस भी स्पष्ट रूप से कहिए। मैं आपकी ऐसी आलोचना को भी अपने उपयाम के समय गिराघाय करूँगा। मुझ में बैसा गब नहीं है जो मुझे अपनी भूल को स्वीकार करने में बाधा पहुँचावे। यदि मुझे बिबाग हो जाय कि मैंने कोई भूल की है तो उस में धवस्य स्वीकार करूँगा, चाहे उस स्वीकृति या मुझे कितना भी बड़ा मूल्य क्यों न भुजाना पड़। परन्तु यदि आपका हृदय मेरी इस कृति का समर्थन करता है तो इस उपयाम को सहन करने में बह मुझ काफि देगा। (आँसों

में घाँसु भरकर यह पत्र रबीन्द्र बाबू को सौटाती ह और  
उनकी घोर बेवतती ह ।)

रबीन्द्रनाथ और मराठनी दवा इस पत्र के पहुँचने के पहल  
ही एक एक का पुस्त मुनबन जो ताक मने उहें भजा था वह  
भी पत्र मो । (दूसरे जोर से एक बागज निकाल सरोजनी  
नाइडू की बेत ह ।)

सरोजनी नाइडू (रबीन्द्रनाथ ठाकुर से बागज लेकर पढ़ते  
हुए) भागज की लपना और उमकी मामाजिब मियति  
का अनुपुण लपन के लिए आपस जीवन का यनिदान मा  
मयथा उलित है । (फिर के उसी प्रकार बागज सौटाने  
हुए रबीन्द्रनाथ ठाकुर की घोर बेवतती ह ।)

रबीन्द्रनाथ (गद्गद् स्वर में) और और मराठनी दकी  
एक मगनु धनान की एक प्रकार मयन मभाणि पर बोन  
बोन धात्र मुनम बोन धात्र मुनम मुनम धपिर  
हयोंमम हा मयना है ?

सरोजनी नाइडू ही जिन लफ धाग में लपन म गोन में और  
ग्याग लमर धा जना है उमी प्रकार इस धनान में लप  
कर मयन लपना पर मगनु मनाना हुगा मगार का लप  
मानय लपन के मुन की धागा और मानवता का भाग्य  
विधागा और भी लपन का लपन निरना है ।

रबीन्द्रनाथ और और मराठनी तथा म नरी जानना व धनन  
जानने में लपन लपन का धनन । पर मयनता और  
धननता का धनन धात्री धात्री है धनन मगनु लपन का  
ममान वे धनन भी है मयन ह लपन लपन लपन

एसे जीवन के सदृश स्मरण रखा जायगा जो जीवन जब तक भी विद्यमान है तब तक उसका श्रावण माना जाता है।

[रबीन्द्रनाथ ठाकुर और सरोजनी नाइडू भी गांधीजी की चारपाई के निकट पहुँचते हैं। कुछ बेर बाद रबीन्द्रनाथ क मुँह से निम्नलिखित गीत सुन पड़ता है।]

गीत

जीवन जलन मुकाये जाय  
 करुणा भाग्य एगो  
 सकल माधुरी मुकाय जाय  
 गीत-मुधार से एगो ;  
 कर्म जलन प्रबल धाकार  
 गरजि उठिया बाक धारिधार  
 हृदय प्रान्ते हे जीवन-नाथ  
 दान्त-भरणे एगो  
 धाप मारे जये करिया कृपण  
 कोने पडे चाक दीन हीन मन  
 दुमार सुमिया हे उदार नाथ  
 राज-ममारोहे एगो  
 कामना जगन विपुन धूनाय  
 संघ करिया घबोये भूनाय  
 घाहे पवित्र ! घाहे घनिद्र !  
 गद्द घानोवे एगो ।

[जब गीत खत्म रहा है, उसी समय बस्तूरबा महात्मा गांधी के निकट संतरे के रस का गिलास से जाती ह। दो प्यस्कि

गान्धीजी की सहारा देकर उठाने हूँ और गान्धीजी बस्त्ररक्षा के हाथ से सन्तरे के रस का गिलास से सन्तरे का रस पीते हूँ। महान जमाह से जयजयकार होता है, इसका बाद गान्धीजी का स्वर सुन पड़ता है।]

महान्मा म फिर म जन्म नहीं लेना चाहता लेकिन अगर मुझ फिर म पना ही होना है तो म पिता हरिजन के यही काम लेना चाहता हूँ। जिसमें म उनके दुःखा पेटा और उनके प्रति जा दुःखवहार हो रहा है उसका हकदार बन मनु माप ही इस कष्टनायक स्थिति में अपना और उनका उद्धार कर मरूँ। इसीलिए म भगवान् म प्रायना करता हूँ कि यदि मुझ जन्म लेना ही है तो आत्मनो दानिय बन्ध या पद के यही काम न लेकर धर्मगुरु के यही पदा हाऊँ।

श्रीश्रीश्री

एसे जीवन के सदृश स्मरण रग

सक भी विदव है तब तक उसका

[रबीन्द्रनाथ ठाकुर और सरोज-  
 चारपाई के निकट पहुँचते हैं। कुछ द  
 से निम्नसिद्धित गीत सुन पडता है।]

गीत

जीवन जन्म मुकामे -

कतना ग

जवाहरलाल नेहरू ही हमारी इन बागिचा की कोई इन्तहा नहीं।

बल्लभभाई पटेल हमन सडाई के गुरु होत ही सडाई के उद्दयों को स्पष्ट करन की ही माँग मा की थी।

जवाहरलाल नेहरू और उसके सिवा बितन सम्भ सम्भे तक सम्भ देगा।

बल्लभभाई पटेल प्राणों में हमारे मन्त्रिमण्डल में न भगर त्यागपत्र दिया तो इंग्लैण्ड को कि भारत की राय दिया बिना भारत का युद्ध में भाग दिया गया है और अपने पर भी युद्ध के उद्देश्य स्पष्ट नहीं दिया जा रहा है।

जवाहरलाल नेहरू बित्तबुझ और बाधम न तो पात्राणी के सिवा माफीकी तक का पपाई नहीं की। गुना का घणो बटव में यही तक कह दिया कि भगर उस पात्राणी का पकीन दिया जाय तो वह हिंसा परिभा न उभूम का भी एक सम्भ रग सडाई में घणकों का सम्भ देने के सिवा नमार है।

बल्लभभाई पटेल यह सब बचाव बापु परमाणु सम्भ घट गया और जब हमें घान उस सम्भार पर भी कामयाबी नहीं सिमा तब हम फिर उसकी दग्ग तब और उगन स्पष्टिग्त सम्भार सिवाया।

जवाहरलाल नेहरू मन्त्रिमण्डल में सडाई का सम्भार मा भगर माय नन न सम्भार न मही दिया गया था। सम्भारिग्त उम सम्भार न पन्त सम्भारिग्त में घाबाय विनाश भाय।

बल्लभभाई पटेल : ही उम सम्भार का माय न बापु म

## पाँचवाँ अध्याय

### पहला दृश्य

स्वान् बम्बई में स्थित भारतीय कापन कम्पनी का पंजाब  
समय तीसरा पहर

{ इस पहाल का कुछ भाग बिसायी बेता है । पीछे की ओर  
मद्य का कुछ हिस्सा बिरताता है । जिस पर गद्दी-तबिए सने हुए  
ह । एक तरफ बक्ताघों के बोसने का स्थान है जहाँ साइड-  
स्पीकर सग ह । मद्य के नीचे के स्थान की बिछायत पर डेस्कों  
की कुछ पस्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । इस समय पंजाब लासी  
है । प० जवाहरलाल नेहरू और सरदार बल्लभभाई पटेल का  
प्रवेश । }

जवाहरलाल नेहरू जब तक सर स्पर्श त्रिप्य नहीं मीटें वे  
सुभे उम्मीद थी कि सायन कुछ हा जाय ।

बल्लभभाई पटेल मनु १९६६ की एक गिनतव्यर को यह सड़ाई  
आरम्भ हुई थी । तीन मान स मट पन रही है । त्रिग दिन  
सजाई शुरू हुई उस दिन बापु ने अपन बयान में कहा  
था कि उन्हे दानवण स हमन्नी है और इन तीन बपों में  
हमने विननी बागिग की जि हमें एक भबमर पर दंगलैण्ड  
का बष्ट न दना पड़ ।

जवाहरलाल नेहरू ही हमारे इन कौमियों की कोई इच्छा नहीं।

बम्बेलाई पटेल हमने मद्रास के एक हाथ ही मद्रास के उद्योगों का स्पष्ट कर्तव्य ही माना तो का पी।

जवाहरलाल नेहरू और उनके लिए कितने लम्बे प्रश्न तक गान्धा देना।

बम्बेलाई पटेल प्रान्तों में हमारे मंत्रिमण्डल न अगर त्यागपत्र दिया तो कि भारत की राय नियम बिना भारत का युद्ध में मोक लिया गया है और इन पर भी युद्ध के उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो जा रहे हैं।

जवाहरलाल नेहरू विमलुम और बांग्ला ने ना आजादी के लिए गान्धीजी तक का पर्वान नहीं की। पूना की अपनी बैठक में यही सब कह दिया कि अगर उस आजादी का यकीन न बना लिया जाय तो वह हिमा प्रहिमा व उमून का भी एक नया नया मद्रास में प्रश्नों का मन्द दन के लिए मया है।

बम्बेलाई पटेल उस बल बचारा बाहु चुपचाप प्रयोग कर गया और जब हमें प्रान्त उस प्रस्ताव पर भी कामयाबी नया मिला तब हम फिर उसकी लागू नया और उसने व्यक्तिगत मयादत छिन्वाया।

जवाहरलाल नेहरू मरिन वह मयादत मा प्रश्नों का नया मार नन व काम न नया दिया गया था। न्यायिक उस मयादत के पत्र मयादत व आषाप विनावा भावे।

बम्बेलाई पटेल : ही नम मयादत का नाम हा बाहु न



सांकेतिक सत्याग्रह रखा था। वह सत्याग्रह भारत के प्रति अंग्रेजों के दख पर एक तरह की नतिक चेतावनी था।

जवाहरलाल नेहरू और उसे भी आपात का हमला होते ही बिना किसी दार्शनिक धारणा के मुस्तखी कर दिया। पर, सरदार, अब जिस घाये उस वकत उनका दख कुछ और ही था।

बक्समभाई पटेल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बदलते ही तोड़े की धारणा के समान जिस की निगाह बरसी।

जवाहरलाल नेहरू अब नचमुच ही जो कदम हम उठा रहे हैं उसके सिवा हमारे लिए कोई रास्ता नहीं।

बक्समभाई पटेल हमने कितना मोचा कितना बिचारा छ-जुलाई से चौदह जुलाई तक लगातार नौ दिन कार्य-समिति की बर्षा में बठक होती रही।

जवाहरलाल नेहरू ही सन् १९२० में जब स कांग्रेस के वान्स्टीट्यूशन में कांग्रेस की वकिंग कमेटी बनी है तब से लागद ही वकी वकिंग कमेटी का इजलाम इतने सम्बे वकन तक बसा हो।

बक्समभाई पटेल राजगोपालाचारी की इस मामले में जो राय है पहल आपकी भी वही राय थी और मेरी भी बि इस वकन सत्याग्रह करना मुनासिब बात न होगी। पर जब तो आप भी मानते ह और म भी मान गया बि कांग्रेस के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं।

जवाहरलाल नेहरू कात यह है कि म तो धीरे-धीरे इस राय का हो गया है बि कितना बापू समझते हैं उतना हम में से

कोई नहीं। इमीलिए किसी मसन पर अगर उमकी घोर मरी राय में पक रहता है तो म उनमें कह तो जम्बर देता है लेकिन चलता है उन्ही की राय के मुताबिक।

वत्सभभाई पटेल घोर दंग की मज्ज को भी उनमें ज्यादा इस समय बौन जानता है ?

[सोनों का घाना आरम्भ हो जाता है पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार वत्सभभाई मध पर जाते हैं। उसी वक्त बाँधत सभापति मौलाना अबुलकलाम आजाद के साथ महात्मा गांधी आते हैं और मध पर जाते हैं। कुछ समय व्यतीत हान का दिखाने के लिए सपु यधनिका गिरती है, परन्तु सत्वात उठ जाती है। जब यधनिका उठती है, उम यधन मध और पडाल का जो भाग दिखता है, वह मनुष्यों से लबासब भरा हुआ है। महात्मा गांधी एक कुर्सी पर बठे बोल रहे हैं।]

महात्मा आपके मामन आ प्रम्नाव पं० जवाहरमान महक न रकना जिनका अनुमादन मरणा वत्सभभाई पटेल न निया घोर आ मेरे बिना कुछ बहे ही आपन लकपन हा मजूर किया है उम पर अब आपकी घमन करना है। मुझ यह दंगर बढा हुआ है कि जिन्य जग व्यक्ति न भी मंतान का हा माप लिया।

एक व्यक्ति घरे ये मब घट्ट दानान ।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) मब के मय मब के मब दानान ।

महात्मा मरी लगा आपकी मता बटना चाहिए। बटना ही मरी गोपना भी मरी चाहिए। घट्टा में भी मन घामों जाने हैं और लिप्पानिया में भा बने। मबाम घट्टा घोर ...

हिन्दुस्तानियों का नहीं है। सवाल है सामूहिक रूप से ठीक बात करने का। मुझे यकीन हो गया है कि अब वह वक्त आ गया है जब अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियों का एक दूसरे से सर्वथा बिनारा कर लेना चाहिए।

एक व्यक्ति अंग्रेज भारत छोड़ो।

जनसमुदाय अंग्रेज भारत छोड़ो।

महात्मा हरेक ब्रिटन निवासी से भरी प्रार्थना है कि वह मेरी इस अपील का समर्थन करे कि अंग्रेज एशिया और अफ्रीका के हर हिस्से से इसी पड़ा हट जायें। अगर नतिक पहलू का भी तराजू के एक पलक पर रखा गया तो ब्रिटन का हिन्दुस्तान का और दुनिया का इसमें नफा ही नफा है। हम पर अंग्रेजों का जो अत्याचारिक प्रभुत्व चम रहा है उसका शान्त और अहिंसक तरीके से खत्म करने के लिए और नये युग की स्थापना के लिए मेरी यह प्रार्थना है। हिन्दुस्तान को भगवान के भरोसे छोड़ जाओ अगर इतनी श्रद्धा न हो तो उस अराजकता के हाथों में ही मौत जाओ।

जनसमुदाय (अत्यन्त उच्च स्वर से) अंग्रेज भारत छोड़ो !

महात्मा पर अंग्रेजों से छुटकारा पाने के लिए हम भी बिना तराजू से भी जापानियों की मदद पर भरोसा नहीं रखना चाहिए। हमें भरोसा रखना चाहिए अपने घाव पर और ईश्वर पर। इस वक़्त जब मैं अंग्रेजों से भारत छोड़ने की बात कहता हूँ तब मैं जानता हूँ कि बहुत लोग मुझे गलत समझ रहे हैं। मुझे भारत और उगब वाहन अपने बितने ही मित्रों की दार्ष्टान्तिक और विश्वास में शाय घाना पड़ा है

इतना ही नहीं उनमें से कुछ का तो मरी अस्मदी पर ही एक हान लगा है और दूसरे कुछ लोगो को मरी ईमान दारी पर भी । बुद्धिमत्ता से हाथ धान की धानता से गवाग कर सकता हूँ मकिन जहाँ तक ईमानदारी और सबाई का मयाम है वह मेरी एक अमूम्य निधि है जिस से किसी भी हासल में नहीं ग्या सकता । इस वकत से जो कुछ वह और कर रहा हूँ वह अगल से बढ़े और न करूँ ता मुझ अन्तर की आयाज को दवा देना होगा । मरी अन्तरात्मा कहती है कि मुझ अन्तर ही ममार से मोहा बना चाहिए, वह कहती है जब तक तुम में नि एक होकर ममार का सामना करने की साधन है तब तक तुम सुरक्षित हा मने ही दुनियाँ तुम्हें किंगो भी मजर से दग तुम उम दुनियाँ की पर्याप्त न करा और अन्तर परमात्मा से दूरते हुए अपना काम करने रहा । पर भीतर का राजनी म्पिर और स्पष्ट है । इस समय जा हुआ से वह और कर रहा हूँ वह अगल से न बढ़े और न करूँ तो ईश्वर मुझसे पूछगा कि जब दुनियाँ से पागल तब घाग पपक रही या जालि की मपट्टे प्रचण हाकर उठ रही थी तब मून क्या नहा उम महामत्र जालि और अत्मा के पाठ का दुनियाँ के सामने रखता ? क्या नहा अगल में उत्रेन का मत्त दिया ?

जनतामुदाय (उद्वेग ह्वर से) मगत्मा गांधी की जय !

महामा आगिर पात्र भाग्य की आजाग की मांग कर काँगरी बीनगा बुझ कर रहा है ? क्या तेमी मांग करना सनती है ? क्या उम मग्दा पर मत्त करना ठीक है ?

सरकार के बावजूद भी मुझे उम्मीद है कि इग्लैण्ड ऐसा नहीं सोचेगा। मुझे आशा है कि अमरीका के राष्ट्रपति भी ऐसा नहीं सोचेंगे। मुझे बिदबात है कि चीन के सर्वोच्च प्रधान सेनापति माशांग चांगकाई तक भी, जो इस वक्त अपने अस्तित्व का कायम रखन के लिए जापानियों के साथ बड़ी सझाई कर रहे ह कांग्रेस के बारे में ऐसी कोई बात नहीं सोचेंगे। पर अगर संसार के सभी राष्ट्र मेरा विरोध भी करें, अगर तमाम भारत भी मुझे समझाने की कोशिश करे तो भी मैं अपने रास्ते से डिगने वाला नहीं हूँ। आग ही कदम बढ़ाता जाऊँगा सिर्फ भारत के लिए नहीं बल्कि सारे संसार की खातिर।

जनसमुदाय (एक स्वर से) महात्मा गांधी की जय !

महात्मा जीवन भर मुझे गलतफहमियों का सामना करना पड़ा है। हर मासजिनिक कार्यकर्ता के जीवन में यह बात होती है। हर साप्ताहिक कार्यकर्ता को उसे सहने के लिए तयार रहना ही चाहिए। अगर हर गलतफहमी का जवाब दिया जाय और उसे माफ करने की बागिग भी जाय तो जीवन का बोझ बहुत बड़ जाता है। मने उन्ही गलतफहमिया को दूर करने की कोशिश की है जिनसे काम का हानि पहुँचती है।

जनसमुदाय महात्मा गांधी की जय !

महात्मा हार्माकि प्रिन्स न भाग्य को सबसे ज्यादा उभक्ति किया है, फिर भी हम कोई भीष वार नहीं करेंगे। हमने सज्जनता और दयालुता से काम लिया है हम हिमा

के छोटे हथियारों को काम में लाने का नहीं है। हमारी जा सड़ाई छिड़गी वह अब सामूहिक सड़ाई तो होगी, पर अहिंसात्मक। फिर हमारी याजनायें गुप्त कुछ भी नहीं ह। हमारी तो खुली सड़ाई है। कुबेरमुसे की तरह पदा होन वाली सम्प्राप्ता की मदद से कांग्रेस का विरोध या उस कुबल शासना सरकारी भ्रमसदारी के लिए नामुमकिन है। मन जीवन में अनुभव किया है कि हर प्रच्छ और महान् आन्दोलन के साथ पाँच बातें हमेशा लगी रहता ह। उस आन्दोलन के प्रति उदासीनता, उसका मजाक, उस पर गानी-गलोच, उसका दमन और उसका सम्मान। आप दिम में काई उसमन न रखें। हमारी दिक्कतें दो तरह की हैं—एक बाहरी और एक हमारे खुद के द्वारा पण की हुई। दूसरी तरह की दिक्कतें कहीं मया नक हें क्योंकि हम खुद उसम सिपटे खूत ह और उन्हें दूर करने की वागिनी नहीं करते। मुक-छिड़कर काई काम न करें। जो मुक-छिड़कर काम करत ह उन्हें पछ-ताना पटना है। म जीवन भर जिनत तरह के और जो भी प्रयोग करता रहा हें, उन सबकी धार्मिकी धर्मि-परिष्ठा का काम धारा है। धार्मिकी धर्मिण करत प्रयथा न्यकी वागिनी करत में मित्र जान के लिए तयार रहा। धार्मिकी की माँग में समझौता नहीं हो सकता। धार्मिकी मरुप पाने, उसका बाँ कुछ और। कायर मन बना, क्योंकि कायर की जान का हक नहीं है। जो गण का धर्मिण भाग्य का नहिना बना उस नहिम पर धाराम नहीं करता

वह महान् हो ही नहीं सकता । मैंने कांग्रेस को बानी पर लगा दिया है वह करेगी या मरेगी । हर हिन्दुस्तानी भाज से अपने को स्वतन्त्र समझे । वह बरे मा मरे ।

[गाम्धीजी चुप हो जाते है, जोर की तामियों की गड़ गड़ाहट । “करो या मरो”, “अंग्रेजो, भारत छोडो”, “सुभा विद्रोह” के जोर के नारे ।]

सधु यवनिका

सुसरा बुश्य

स्वप्न एक लखेद बाबर

समय प्रातःकाल मे लेकर रात्रि तक अनेक दिन

[सखेद बाबर पर मोचे सिन्धे बुश्य बील पड़ते है । अनेक बार नारे भी सुनायी देते है और गीत भी ।

दम्बाई में कांग्रेस के स्वयंसेवकों की रेभी बिलायी पड़ती है । राष्ट्रीय भण्डा फहराया जाता है । और भण्ड का गीत सुन पड़ता है ।]

गीत

विजयी बिबर निरगा प्यारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

सदा गविन यरमान वामा

प्रेम-मुपा मरमाने वामा

वीरों का हरपाने वामा,

मातृ भूमि का तन-मन मारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

स्वतन्त्रता का नीपण रण में

मग्नकर जाग घट क्षण-क्षण में

काँपे जायु दग्नकर मन में

मिट जाय भय सबट मारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

हम भण्ड का नीप निभय

में स्वराज्य हम अधिपति निदबय

बाला भारत माता की जय

स्वतन्त्रता ही ध्यय हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

घाघो प्यारे वारा ! घाघा

दा पम पर बलि-धनि जाघा,

एक माय सब मिनकर गाघा—

प्याग भागत दा हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

हमकी जान न जान पाय

पाँ जान भव ही जाय

विजय विजय बरब निगमाय

तर हाय प्र पू हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

विजय विजय निगमाय प्याग ।

[एक घट समूह में पुनिम घोर मेला घाघर हम भाँटे की



गिरा बेती है। स्वयंसेवकों पर साठी चाम करती है, उन पर ग्रामु गैस छोड़ती है और गोली घनाती है।

यह वृद्ध सुप्त होकर अनेक प्रान्तों के स्वामी में सार्वजनिक सभाओं, जुम्हों धारिक के वृद्ध बिखायी बेते हैं, जिनमें इसी प्रकार के साठी-चाम, ग्रामु गैस और गोलीकाण्ड के बमन बीस पड़ते हैं।

यह वृद्ध सुप्त होकर रेल की पटरियाँ उखाड़ने, तार काटने, रेलवे-स्टेशनों, पुलिस-घानों, डाकघरों तथा सरकारी इमारतों के जलाये जाने के अनेक वृद्ध बीज पड़ते ह और इन्हीं के साथ घोर बमन के भी।

ये वृद्ध सुप्त होकर हवाई जहाजों से बमबारी के वृद्ध बिखायी बेते हैं।

ये समस्त वृद्ध अत्यन्त उत्तेजनाजनक और भयभीत करने वाले ह, जिनसे रौद्र, भयानक और वीभत्स रसों की महान उत्पत्ति होती है।]

### सधु भयनिका

#### तीसरा वृद्ध

स्वान पूजा में बाबा ली मरम का बड़ बचप

जिनमें बन्धुका का निपनहुषा का

मधय मन्ध्या

[रत्न छीप्या पर बस्तूरबा जेटी हुई ह। उनके सिराहने पाग्यो बटे हुए हैं। बस्तूरबा का सिर गाग्गीजी की गोद में है।]

बस्तूरबा घात्र - घात्र मुझ घपना माय बीना हुमा जीवन  
 किम तरह माद घा रहा है ? (बुछ टटकर) क्या  
 क्या जाने का समय मजदीक है ? जाने क वक्त हो क्या  
 म तरह बीनी जिन्दगी माद घाती है ?

महात्मा महो महा । बीनी जिन्दगी तो कई बार यों भी याद  
 घा जाया करनी है । तुम तुम ऐसा क्या गाब रही हो ?

बस्तूरबा नही अगर जाने का भी वक्त घागया है तो एव म  
 एक दिन जाना तो सभी को है । तुम्हार यह घागिरी  
 स्वतन्त्रता क मुट्ट छटन के बाद म्मी घाणा मी  
 महम में ही तो महान्व गय ह घोर फिर तुम्हारी गा म  
 म भी पनी जाऊँ इसम घपिष इसम ज्याना मीभाय  
 की घरे लिए घोर बीतमी घात हा मकनी है ? (बुछ टट  
 कर) घामठ घप हम मोगों क विबाह का हा गय ।

बायठ गाय ही न ?

महात्मा हा बायठ माय !

बस्तूरबा बीनह बीनह घरे क पत्न घ हम मना उग समय  
 घोर बिजना बिजना यषणन घा हम में । तुम बाय-  
 विवाह क गिमाए हो म म म नी  
 उगके कोई बहन हक में नही । ममपन भी नहा कर  
 गला है उगका मरिन घदि उग समय म्माग म्म म्म  
 का मग्मिपन म हुमा हाता ना म्मार निमन मना मे रिग  
 निमन प्रेम का बीन पना घा घर घर बात्र म्म मग्म  
 उगाता पन्तिका पुगिन घोर पञ्जि हाता म्मा घर  
 हुमा । हमारे उन जिना क प्रेम म्मा घोर म्मर भी घम

भाज माद धा रहे हैं । प्रेम-प्रसर्गों से भी ऋगड़े ज्यादा मार पाते ह । बुरी बातों की माद भी कितनी सुख देने वाली हा जाती है ।

महात्मा पर निमस और सत्य प्रेम में अगर ऋगड़े न हों तो वह प्रेम टिकाऊ रहती नहीं सकता । और इन ऋगड़ों का भतीजा हमारे लिए हमेशा ही घुम रहा है । अपनी अनोखी सहज-शक्ति से तुम्हारी ही हमेशा इन ऋगड़ा में जीत हुई । उन ऋगड़ों का तो मैं जिम्मेदार हूँ । अपने पतिपद का मुझे बड़ा पमण्ड था और उस वक्त जब मैं उस पद की हकूमत बलाता था तब तुम्हारे मानिद स्वाभिमानी स्त्री का उस तरह ऋगड़ा बिलकुल स्वाभाविक था ।

कस्तूरबा और और वे भारतीय ऋगड़े बचपन में ही गरम हो गये हों यह नहीं । दक्षिण अफ्रीका से जब हम भारत सीट रहे थे उस वक्त जो भट्टे हमें मिली थी और जिन्हें तुम सीटा रहे थे उनके रगने के लिए मैं तुमसे किस तरह मद पड़ी थी ।

महात्मा लेकिन उन ऋगड़े में मेरा दोष नहीं था । वह ऋगड़ा तो तुम्हारे लोभ और मोह की बजह से ही हुआ था ।

कस्तूरबा वहाँ समझती थी उन बचन में तुम्हारे सिद्धान्तों को ? तुम्हीं न एक बार मरे लिए नहीं कहा था बेपड़ी-सिमी ठोठ ।

महात्मा एक क्षण नहीं गायद यह तो मने कई बार कहा होगा । और और मरे वे कौन मरे विनोपन थे तुम्हारे ममान परती के लिए । (बीच निदबास छोड़कर) क्या, कीर्द पड़ी-

लिंगी बिदुयी परम पहिना परती भी मुझे तेमी मिल सकना मुमकिन था जमी ईश्वर न मुझारे रूप में तो । जीवन भर तुमने मुझ पर दुनिया की बिनी भी स्त्री के मुकाबले में बही अधिक धमक डाला है । घोर घोर मेरे जीवन के माय अपन जीवन का चींगटा बठा मेरे माय धमना कोई धामान बान न थी । वीष-धीष में न जान बितने बार मुझसे के स बठार पपक तुमन सह ज्यामामुगी के पीयते हुए साया में तम बती । इतने पर भी पाए नहीं हटी । अपनी लच्छा घोर अनिच्छा का त्याग कर बिनी बठिनाइयो घोर परियमनों का सहकर एक तरह पति के समते पर बनना धामान मही था । एक निग दहन घट धामबन घोर धूर्त ममपण की भावना जगरी थी ।

कस्तूरबा मुम मेरे जिम गुला का पणन बरत हा ये ता हुरणक हिन्दू पत्नी में समारोण रहते ही ह । इच्छा मे था अनिच्छा मे धपवा जान धनजान भी हिन्दू पत्नी पति के कर्मों पर धमन मे धमना का अनुभव बगती है । मेरे जमा पति दुनिया में किमको सिमा है ? अपनी गण्य निगटा की पत्रह मे तुम धात्र माते समार में गुत्र जान हा । धनगिनती लोग गुलारी मपान लेने धात्र है बिग्ट मम मपान लेत हा । इतने पर भी बभी बिनी तिन बिना मेरी भान के मेरा दोष नहीं निगाना मे पाते हुए भी मे मोच मरु मगी दलि था, संतुकिन तो लमता दरा रहते हा बि दू मो दुनिया में होता ही धाना है । समार में मे मुझारे बाग्य पूरी जाती है ।

महात्मा नहीं नहीं यह नहीं तुम में जो गुण हैं वे क्या हर महिला में हो सकते हैं ? फिर भी मैं जैसा बन पाया तुम्हारे बिना बँसा क्या बन सकता था ? उस काम से लेकर रात तक मैं सुविधापूर्वक रहूँ यही तुम्हारे दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न रहा है । और तुमने तो मेरा जीवन तक बचाया है । मैं बकरी का दूध पिऊँ, यह उस समय तुम्हारी ही सूझ थी जब गाय का दूध न पीने की मैं प्रतिज्ञा कर चुका था और बिना दूध के मेरा जीवन संकट में था ।

कस्तूरबा मैं मैं सोच भी न सकती थी कि साँपा जोरो और मूतों से डरने वाला घादमी घागे चलकर ससार में नाट्यियाँ गोमियाँ क्या बढ़ से बढ़े मय से भी मयभीत नहीं रहेगा ।

महात्मा गीता का मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी प्रेरक पुस्तक मानता हूँ, उसमें देवी-सम्पत्ति के जिन गुणों का वर्णन है उनमें 'अभयं यह पहला गुण है ।

कस्तूरबा और और मैं मैं बिचार भी न सकती थी कि बियय भोग में इतना इतना तस्मीन घादमी गृहस्थ रहते हुए भी सैंतीस साल की उम्र से ही अग्रज ब्रह्मचर्य का पासन कर मनेगा । सठीस सैंतीस बय की अग्रस्था से ही हम दोनों ने इस शत का पासन किया है न ?

कस्तूरबा हाँ महीन वर्ण की उम्र से ही । और और हम अग्रज ब्रह्मचर्य शत के बाद तो हम एक दूसरे के और निजदीक घा गये एकत्रम निजट । संस्कृत में पत्नी का पुरय

का घाघा घग बहा गया है घघजी में उस घाघ घग के लिए बटर' गध्र काम में लाया जाता है याने वह घाघा घग जा पनि के घाघ घग म बहतर घग ह। ब्रह्मस्य क बाद मुक्त धनुभव हुआ कि तुम मपमुच ही मरा बहतर घाघा घग हा गयी हो।

कस्तूरया तुम्हार मिढान्तों का ता घभी घमी भी म पूरो तीर पर नहीं समक्त पाती। ही उन मिढान्ता ने तुम्हारे मुद के घोर मरे जीवन की इस दग के जीवन क मभी धोत्रों को किग किम तरह बदमा है दृनियाँ में किम किम तरह घमर डामा है इस जकर कुछ कुछ दस्य मुन सकती हें। तुम्हारे जीवन का सबम घटा ध्यय भागनीय स्वराग्य भी पायद घब दूर बहुत दूर म हो। मानुम नहीं उम देग पानी हें या

महात्मा : (भर्रापे हुए स्वर में) क्या क्या लगा माप गरी हा ? तुमने बहुत कुछ दगा है तुम स्वराग्य भी दगागी।

कस्तूरया जा कुछ जो कुछ हा

गोविन्द द्वारिका पागिन् कृष्ण गोपीजन प्रिय ।

बौरबै परिभूता माम् कि न जानामि क्वाप ॥

(कुछ रक्बर) घब तो कृष्ण भगवान् इन बौरबों म पिरे हुए हमारे दग की मुधि में। हम दोना का पाह उम में र्वगें तेकिन घोर मब की तो गिटाई हा।

[कुछ बेर निस्तरपना।]

कस्तूरया तुम जो महात्मा कहा जाता है तुम उगम-उगमे भी बही बही बर हा। म म पय हा गयी इस उम

में ऐसे ऐसे पति को पाकर। और और देखो मैं मैं  
 खो शायद अभी जा जा रही हूँ (बोनों हाथों को छाती  
 पर लगाकर) दर्द हो रहा है यहाँ

महात्मा (एकदम धबड़ाकर) ऐं ऐं, मैं तुम्हारे तुम्हारे  
 बिना जीवन जीवन की कल्पना कल्पना नहीं कर  
 सकता।

कस्तूरबा (धीरे-धीरे) पर पर जाना तो जाना तो एक  
 दिन सब को ही पड़ता है। हमन बहुत सुख मांगा दुःख भी  
 भोगा। भरे बाद रोना मत भरे मरने पर तो मिठाई खानी  
 चाहिए। मुझमें मुझमें अगर कोई अपराध हुए हों तो  
 पाते जाते उनके लिए तुमसे दामा दामा मांगती हूँ  
 मैंने मैंने जाहे तुम्हारे सिद्धान्तों को पूरी तौर पर समझ  
 न हो पर बिना उन्हें समझ ही उन पर खमकर पूरी ईमान  
 दारी से खतकर तुम्हारा पूजन हमका पूजन बिना है।  
 भगवान् भगवान् मुझे (खड़बड़ाते हुए स्वर में) जन्म  
 जन्म में तुम्हीं तुम्हीं का पति पति

[कस्तूरबा का शरीर कुछ हिलता है। गान्धीजी एकदम  
 विह्वल हो उनके ऊपर झुकते हैं। कस्तूरबा की गान्धीजी  
 की गोद में मृत्यु। गान्धीजी के मेरों से दो बूँद आँसू कस्तूरबा  
 के मुँह पर गिरते हैं।]

सद्यः यवनिना

## श्रीश्री

स्वयं एव गच्छेत् पारम्पर्यं

समय प्राप्तिं तत्र न तत्र गच्छेत् नरः

[कुछ युवक-युवतियों का प्रयोग ।]

युवक अथवा ही अथवा वर्यो पण मर्यादा क यां गन् १६८०  
ईश्वरी की आज्ञा १५ धर्म का भाग्य म पूरा स्थापितता  
का मूल उगा है ।

युवती श्रीं श्रीं यह एव मित एव धार्मी का तपस्या  
श्रीं त्याग के कारण ।

ब्रह्मरा यह जगत् प्रमाण है कि एव व्यक्ति भी क्या कर  
सकता है ।

पहली दश को एव मया गन्ता वनाया उम गन्त एव धनने  
पान व्यक्तिता का बनाया श्रीं म धार्मी। हासिल का ।  
मे मा जय धार्मी क सम्बन्ध म गोपनी है मा मन्त्र गुणिगता  
म योग गान्धी न जा एव धार्मी का श्रीं यं यां धार्मी है ।

पहला बौद्ध ?

पहली योग गान्धी न कहा है—मिष्ट्री क दया म गन्ताय क गन्त  
की यज्ञ म गुणाय धार्मी है । धर्म म श्रीं बार मिष्ट्री  
के दन म ।

कुछ लोग (एक साथ) ईश्वर गिराने की ।

पहला धर्मियों को बेकार गिराने म प्रभावित नहीं किया एव  
म विचार विजानी पूरा एव है। मया मया गान्धी मया ए  
मया म । जब श्रीं मया विचार मानता मया मया



को उत्पन्न करता है जिससे वे किसी महान् कृति के लिए बमर कसते हूँ तब दुनियाँ पर उस विचार का प्रभाव पड़ता है। गान्धीजी न यही किया है।

कुछ भोग बिसकुल ठीक।

दूसरी फिर महात्मा गान्धी ने इस देश के जीवन के केवल राजनीतिक क्षेत्र का प्रभावित किया हो यह नहीं।

तीसरा हाँ इस देश के मानव-जीवन का एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं जो उनसे प्रभावित न हुआ हो।

तीसरी यही बात नहीं आज तो नमाम दुनिया उनसे प्रभावित है।

बौधा हाँ सारी दुनिया।

तीसरा और इसका फल यह कारण नहीं है कि उन्होंने इस देश को आजाद किया है बल्कि इसका एक और भी बड़ा भारी कारण है।

बौधा कौनसा ?

तीसरा यह कि जब ग्यान्तव भोग नैतिकता के नियमों को सिर्फ उमी तरह देखते रहते हूँ जिस तरह आवाग क तारों को दया जाता है तब उन्होंने उन्हें मुद धपन जीवन में ही कार्य-रूप में परिष्कृत नहीं किया लेकिन दूसरों से भी कराया।

पहली हाँ उन्होंने कपटी और बर्नी में कोई एक नहीं रखा। उन्होंने सिद्ध कर लिया कि दुनिया किसी क शर्तों से प्रभावित नहीं होती पर कहम वामा धपना जीवन किम तरह बना रहा है उगम प्रभावित होती है। दूसरों को गान्धी देने क पहलु स्वयं क धन्य करण में प्रभाव की

जन्म है।

पहला ही कोई कर्म विचारक जाना है और कोई नहीं जाना। गणधारी में जोना गुण समान रूप में विद्यमान है। कुछ लोग मरणा ठाक।

श्रीमान् फिर तो उनका दुनियाँ पर इस प्रभाव का एक कारण और भी है।

तीर्थयात्री क्या ?

श्रीमान् उठते हैं यह स्वयंसेवता पहिला हाथ में और दुनियाँ का एक नया बात बताया कि जो माहम धर्म का न माहम स्वयंसेवता की शक्ति रचना है वह बड़ा-से बड़ा काम का भी हृदय परिवर्तन कर देता है।

दूसरी इस समय मारी दुनियाँ हिमा में प्रथम है। यह पहिला में भी एक मरणात्मक विषय जो मरणात्मक है यह भी तो उन्होंने दुनियाँ का लिया है।

श्रीमान् ही लिया में जीवने एक मरणात्मक का उनका नाम का एक नया नाम बताया है।

कुछ लोग विचित्र ठाक।

पहली और सब धर्म में स्वयंसेवता का उद्देश्य मरणात्मक का है। तब मरणात्मक का ही हिन्दू-मुस्लिम धर्म का धर्म जीवन का एक नया धर्मदान कर रहा है।

दूसरी विचित्र धर्म है विचित्र।

कुछ धर्म-धर्मियाँ (एक साथ) धर्म-धर्म धर्म-धर्म।

[नेपाल में बहुत धर्म धर्म धर्म है।]

दूसरी ही स्वयंसेवता का उद्देश्य एक ही है। इस धर्म का

महारमा हैं नहीं । अब तो यह उत्सव देखें ।

कुछ युवक-युवतियाँ (एक साथ) हाँ-हाँ हाँ-हाँ ।

[सबका प्रस्थान । अब सफेद चादर पर निम्नलिखित वृत्त बिरापी बैसे ह—

उस समय का वाइसरिंगस साँच जो उसी दिन गबनमेष्ट हाउस हुआ, और अब राष्ट्रपति भवन, उसका बाहरी भाग बीकता है, फिर उसी का दरबार हास, जिसमें सासी भीड़ कुतियों पर बठी है, इन्हीं में प्रमुख रूप से सविधान सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद और भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू बीसते ह । मध्य पर स्वतन्त्र भारत के पहल गवर्नर-जनरल लार्ड माउण्टबेटन को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डा० कानिया गवर्नर-जनरल पर की शपथ दिला रहे ह ।

यह वृत्त बरसकर उस समय का कीसिस हाउस, और इस समय के ससब भवन का बाहरी भाग बीकता है । अपार भीड़ है । इस भीड़ से साँच माउण्टबेटन की चार घोड़ों वाली पोस्ट-सिपम बग्यी फिर गयी है । जवाहरलाल नेहरू भीड़ को घोरते हुए बड़ी कठिनाई से उस बग्यी तक पहुँचत ह और बड़ी कठिनाई से साँच माउण्टबेटन, सेडो माउण्टबेटन आदि को बग्यी से उतारकर भवन के भीतर से जाने ह ।

यह वृत्त बरसकर भवन के भीतर का वृत्त बिरापी बीता है जहाँ भी कुतियों पर भारी भीड़ है । मध्य पर साँच माउण्टबेटन बठे ह और डा० राजेन्द्रप्रसाद भारतीय स्वतन्त्रता की लुगी में घाये हुए भिन्न भिन्न बेशों के सम्मेश पड़ रहे ह ।

यह दृश्य बरसकर कीसिल-हाउस पर स्वतंत्र भारत का  
 मण्डल चहुराता हुआ दिखायी देता है और भारत का राष्ट्रीय  
 गीत जन-गण-मन सुनायी पड़ता है । ]

गीत

जन-गण मन घडिनायक जय ह  
 भारत माय विधाना ।

पञ्चान विष गुजगत मराठा  
 द्राविड उन्वम बंग

विन्ध्य हिमालय यमुना गंगा  
 उच्छल जनघि-भरग ।

तव दून नाम जाग  
 तव वाम घागिग मागि  
 गाणे तव जय-गाथा ।

जन-गण मगम दायक जय ह  
 भारत माय-विधाना ।

जय ह ! जय ह ! जय ह !  
 जय जय जय जय ह !

[ यह दृश्य बरसकर गन् ४७ की १५ घण्टा की हिस्सी  
 की रात्रि की रोगनी के घनक दृश्य होय पड़त ह । ]

सद्य यवनिरा

## पाँचवाँ बुध

स्नान नवी दिवसी में बिड़मा भवन का वह चौगाव जहाँ  
गान्धीजी प्रार्थना करते थे

समय मग्न्या

[एक तख्त पर गान्धीजी मग्न्या की प्रार्थना में बठे हुए  
हैं। सामने एक झण्डी-जाती भीड़ इकट्ठा है। प्रार्थना खत्म हो  
चुकी है। प्रार्थना के बाद तुलसीदास रामायण का नीचे लिखा  
अथ गान्धीजी का रहा है।]

## गीत

सुनहु जगत्त वह कृपा-निधाना ।  
वेहि जम होइ, सो स्पन्दन धाना ॥  
सौरज धीरज तेहि रथ थाका ।  
सत्य सीस दृढ ध्वजा पठाका ॥  
अस बिबेक दम पर-हित मोरे ।  
छमा कृपा समठा रजु जोरे ॥  
ईस भजन सारथी सुजाना ।  
बिरति अर्म सन्तोष कृपाना ॥  
दान परमु बुधि मक्ति प्रबण्डा ।  
अर-बिम्बान बठिन बो दण्डा ॥  
अमम अक्षय मन जोन समाना ।  
मम जम नियम सिसीमुग्न नाना ॥  
बकष अमद बिप्र-गुरु-पूजा ।  
एहि मम बिजय-उपाय न दूजा ॥

सुखा भ्रम मय भ्रम रथ जाके ।

जीवन बहै न बनहुँ गिपु ताक ॥

महा धरप सुमार-गिपु जीति मयदु सो वीर ।

जाके भ्रम रथ होइ दुइ मुनहुँ मग्ना मनि धीर ॥

[गीत समाप्त होमे पर रामधुन होती है ।]

महाम्मा (रामधुन समाप्त होने पर) बहनो घोर नाइयो ।

आज भग घण्टमग्ना का म-दिन है । मधेरे मे घब तब मुझे

म बगगाँठ पर बघाट्या हा बघाट्या मिन रही । मकिन

बघाटि क टन मग्ना की बगट इम बार तो मुझ मबेना क

मदेन मिनन पाहिण थ । मेरे जीवन की मबम बड़ी माप

मिन्दुमान की मबनना ता पूरी हो गयी मकिन मिए

मबननिक मबनना म तो हमारग काम ममन बाया नहीं

है । मिए यह मबनना मिन मरह म घायी उमम् मुझे म्गी

नहीं है । देन के टुका हा । मन घाबाने की मगिन छापी

पर मग्ना मग देन का मिमामन भी मरह मग मिया । पर

मुझ उग्नीद भी कि मबक बा तो मिनू घोर मुगलमान

मगीमी मग्ना के ममान मेम म सुमरुबक मग्ना । मगी यह

घागा भी पूरी मने हूँ । मिनन ही मग्नामियर घाग

भदरी घोर मग बहा । उम घाग का ठरी मग्ने क मिन

म मिनमरह मोगमानी मिनर मबनना घागि मोगा

माग ममा । पर घाग म म मीमी ममिनननी है । मिनना

मने का मग्ना हो मग्ना था । म मगी के म्मार्य के मरुबने

क मरुकीक मिनो मिनननी मग्ना म मग्ना मग्ना मिननना

मग्ना मुगल मिन क मग्ना मग्ना मग्ना मग्ना मग्ना मग्ना

## पौषर्षी बुद्धय

स्नान नवी दिल्ली से बिडला मन्न का बह पीपान वहाँ

गांधीजी प्राथमा करने के

समय मन्थ्या

[एक तख्त पर गांधीजी सम्भ्या की प्रार्थना में बंठे हुए हैं। सामने एक झण्डा-सासी भीड़ इकट्ठा है। प्राथमा क्षम ही चुकी है। प्राथना के बाद तुलसीदास रामायण का मोर्चे सिला अक्ष गाया जा रहा है।]

गीत

सुनहु सदा कह कृपा-निधाना ।  
 जोहि अथ होइ सो स्थन्दन शाना ॥  
 सौरज धीरज सेहि रम पाका ।  
 सरथ सीस बुढ़ ध्वजा पठाका ॥  
 बल बिबेक वम पर-हित धोरे ।  
 छमा कृपा समठा रजु जोरे ॥  
 ईम मजन साग्धी सुबाना ।  
 बिरति अमं सस्तोय कृपाना ॥  
 दान परमु बुधि मक्ति प्रबुद्धा ।  
 बर-बिग्यान कठिन को दण्डा ॥  
 अमस अमस मन त्रोग समाना ।  
 मम जम नियम मिनीमुग्य नाना ॥  
 कवथ अमद बिप्र-भुग्त-पूजा ।  
 एहि मम बिजय-उपाय न पूजा ॥

सखा धम मय धम रथ जाव ।

जीतन बहूँ न कतहूँ रिपु ताव ॥

महा धजय समार-रिपु जीति मकट गा वीर ।

जाव धम रथ हाइ दूढ़ मुनहु मग्गा मनि धीर ॥

[गीत समाप्त होने पर रामधूम होता है ।]

महाम्मा (रामधुन समाप्त होने पर) कहना घोर भाट्या !

घात भरा घटहूसरबी जन्म तिन है । मयेंर म धव तब मुभ  
 दम वर्षगांठ पर बघाण्यो ही बघाण्यो मिन र्नी ह मनिन  
 बघा क इन मन्त्रों की जगह न्य बाव ता मुभ मयेंना व  
 मदेग मिनन आहिण थ । मरे जीवन की मयग रही गाय  
 हिन्दुस्थान की स्वतंत्रता का पूरी हा लयी मनिन गिर्त  
 गवतनिक स्वतंत्रता म ता हमारा वाम धमन बाधा नही  
 है । फिर यह स्वतंत्रता त्रिग मरह म घायी उगम मुभे गणी  
 नगी है । दग बे टुपट हुए । मम घात्रानी की गागिर छापी  
 पर पय्यर न्य दग का बिभाजन भी मरूर वर मिया । पर  
 मुभ उम्मा क बी न्य व बाव ता रिम्ह घोर मुगममान  
 गणीगा भाण्यो व ममान प्रम म मुगगुपव ग्गेर । मरी वर  
 घागा भी पूरी मही हूँ । रित्रुम ही माग्ग्यापिक घाग  
 भरी घोर मर वग । उग घाग को टंटी वरन व गिग  
 म तिम मरह मोघागामी बिगार वनवगा धर्नि में माग  
 माग यमा ह य घात म ग निर्मा ग लिंगा मरी है । गिग  
 मने का गरह हा गया था । म घरी व हमार्व व मरवर  
 व नरनीव मिया गिगत्रो वर्य म म्या कर्णिया निर्णया  
 म्या पुगत बिा व मर्य म म्या गिगत्र वर्य में



में गमा और भी बर्हा-कहाँ गया। बर्हा-बर्हा से कितने लोग मेरे पास आये। दिल्ली की आग को शान्त करने के लिए मुझे फिर स अनशन करना पड़ा।

एक व्यक्ति क्या हिन्दू धर्म बुरे काम करने वाले को मारने की आज्ञा नहीं देता ?

महात्मा सय धर्म दरधर्म एक ही हैं। तब सवाल उठ सकता है कि फिर वे धर्म धर्म क्या ? जिस तरह आत्मा एक है पर शरीर धर्म धर्म उमी तरह। हम सब शरीरों को एक नहीं कर सकते पर सब शरीरों में एक आत्मा को देख सकते हैं, वही बात धर्मों के सम्बन्ध में भी है। हर आदमी अपनी दृष्टि से सही बात कहता है इसलिए सहिष्णुता की जरूरत है। सहिष्णुता स ही हमें वह आत्मिक दृष्टि मिलती है जिस से धर्मांधता का भेरेरा दूर हो सके जान का प्रकाश मिलता है। सहिष्णुता का यह अर्थ नहीं है कि हम सही और गलत तथा अच्छे और बुरे का भेद न करें। सके अध्ययन और अनुभव के बाद में इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि सय धर्म अच्छे हैं। सचिन सभी धर्मों में कुछ बुराईयाँ भी ह। बुराई छाड़ अच्छाई में सना यही हमारा फल है। एक बुरा काम करने वाला दूसरे बुरा फल करने वाले को सजा नहीं दे सकता। सजा देना काम है सरकार का जनता का नहीं। (कुछ रुककर) मेरी इच्छा थी सबा को सान और धारण की और सुनियी की गवा करने की। पर जहाँ पूजा और िगा का बायुमण्डल है वहाँ स र्म जो सजता है ? सने पर भी सतान् धारणावारी होन की वजह स स

मवया निराग नही हुआ है । अहिंसा या उमूल अमपन  
 नही हुआ है । सम्पूर्ण जीवन में उमका उपयोग नहीं हो रहा  
 है और जब तक यह महा हागा मानवता का दुर्गो में प्राण  
 पाना गर-मुमकिन है । मरी अहिंसा कवल दाननिक अहिंसा  
 नही है यह ता व्यावहारिक अहिंसा है । म आप मबस  
 प्रायना करता है अपन इस जम-दिन का प्रायना करता  
 है इस पागलपन का छाडिए । म ईश्वर में प्रायना करता  
 है कि या तो यह इस बचरता पा यनी पी जनता के दिव  
 ग उगाए पर या मूम ही म दुनियाँ में उठा म । स्वराज्य  
 ता हम मिन गया पर अभा रामराज्य पा पायम करना  
 है । मगा राज्य अिममें घुजा न हा गिगा न हा मव  
 सम्प्रदाय का अ आपम में मुहम्वन गगत इए नियाम  
 करें । म्ना और पुण्य के गमान एक हा । गरीब म गरीब  
 धार्मी भी यह मामुम कर नि या म्ना मरा है और इमके  
 गंगठन में मर मर की भी कामन है । ऊँचा अना और नार्थी  
 अगो म्ना मरु का अगिपी न हों । अगुव्यता नाम की  
 का म्ना न रहे । म्ना-दृश्य गगय अगि का मामा  
 निगत न हा । ईश्वर में काया में है न पागा में है  
 वह पर पर में हर मिन में मोडू है । ईश्वर में अतग  
 अतग मम अतन मवान के अतग अतग कमरा के मानि  
 बनाए है और के मर्भी पबित्र है । म म्ना कम मान गगता  
 है कि मरे पडोगा का मम मुमग नापा है और उम मरा  
 ममे अतग करना पाणि । म्ना म्ना दानन का म्ना म यनी  
 प्रायना कर गगता है कि हर अहिंसा अतग अतने म्ना

में पूर्ण बने। फिर मेरे लिए वह घर्म घम ही नहीं है जिस का सम्बन्ध जीवन के हर क्षेत्र और हर पहलू से न हो। (कुछ दबकर) मैं एक मिनट के लिए भी भगवान् को नहीं भूमता क्योंकि मैं उसे इन कारोड़ों दरिद्रों के हृदयों में देखता हूँ और इसलिए उन दरिद्रनारायण कहता हूँ। इनकी सबा ही मैं उसकी सच्ची सेवा मानता हूँ। ईश्वर मेरे सामन गढ़ा है। यही ममभ्रतर मैं सब काम करता हूँ। मर पास राम-नाम के सिवा और कोई ताकत नहीं। यही मरा एक आमरा है और उगी राम-नाम के महारे में यह उम्मीद करता हूँ कि जिस तरह अहिंसा के एग नय रास्ते से इस देश न आजादी ली उसी तरह अहिंसा का अपना सत्य रज इस देश में रामराज्य की स्थापना हागी।

एक व्यक्ति वह कभी होगी भी ?

महात्मा मेरे जीवन का कार्य है हर भारतीय को चाहे वह हिन्दू हो मुसलमान हा या और कोई भी यहाँ तक कि अश्वेत भी और आगिर में तमाम दुनिया को अहिंसा में दीक्षित करना, जिसमें यह ममार राजमनिक आर्थिक और सामाजिक सारे मामला का अहिंसा में निपटा मय। मेरे इस जन्म-दिबस के प्राथना के दिन में भगवान् मैं इमी के लिए प्रार्थना करता हूँ उन भगवान् मे जिमने बिना मैं एक मिनट भी जीवित नहीं रह सपता चाहे मैं पानी और हवा के बिना भी जिन्दा रह सपूँ। ईश्वर ही जीवन है सत्य है प्रमाण है। वही प्रेम है वही उच्चतम अश्वार्थ है। और प्राथना का मैं जीवन में सबम यड़ी बीज मानता

है । यह इसलिये कि मुझ महसूस होता है कि जिनसे हमें  
 वनाया है उससे नजारा हम इना प्रायना के जरिये जाकर  
 उगवा घाणायो प्रायन कर मवत ह । प्रायना मन को वह  
 हानन बनाता है जिनसे घाता घममयता घोर भगवान्  
 परपूरा मार पर निभरता रहता है । मुझ प्रायना से विद्वान्  
 है । जिस तरह धरत को न धान से प्रायणिक मन्दुग्मना  
 मगरा जाता है वही तरह धरत प्रायना से हृदय न घाया  
 जायता जाति म्याग्द विगता है । यदि हम प्रायन  
 मपय वा पर गामा पर हा ल जाती है घोर कभी-कभी  
 गाम मरत के मोता ल पर वह हम घमकन कर ता  
 है मतिन रदा की कार ल नहा है । जब ल गत्य हो  
 जाता है घोर प्रायन से मित मयग मयता है उस वक्त  
 हम धडा हा बनानी है घोर घा हम उस घधर से रदन  
 से मता है । मार मपय मार भर थडा न रदन के नकार  
 है । धडा मगातार मवन घोर घन्वाय से पना जाता है ।  
 फिर उस रदा मगा ताता जाता है यदि मगा मार  
 जाता जाता है । प्रा ना ममा धडा पर निभर रहता है । वह  
 मन का गित्त मता है मम म्याग की भावना मयता है ।  
 जिसके बिना कुल भी नया मित मरता । न ल घयरा  
 से मन धनी बिना मिय प्रायना करन रदन घोर यदा  
 प्रायना न ल घयरा के नाराता का मयया का उग  
 वडा ल कर मरता । मारन से म्यापीयता के घाणामक  
 मयदादा मगाता से । उन प्रायना के बिना बना  
 रहता मता है । प्रायना बिना मरत के मित मंग मंगता

में पूष बने। फिर मेरे लिए वह घम घम ही नहीं है जिस का सम्बन्ध जीवन के हर क्षण और हर पहलू से न हो। (कुछ दबकर) मैं एक मिनट के लिए भी भगवान् को नहीं भूलता क्योंकि मैं उसे इन करोड़ों दृष्टियों के हृदयों में देखता हूँ और इसीलिए उसे दरिद्रनागयण कहता हूँ। इनकी सेवा ही मैं उसकी मन्त्री सेवा मानता हूँ। ईश्वर मेरे सामन गड़ा है। यही समझकर मैं सब काम करता हूँ। मेरे पास राम-नाम के सिवा और कोई ताकत नहीं बही मगर एक आसरा है और उमी राम-नाम के महारे में यह उम्मीद करता हूँ कि जिस तरह अहिंसा के एक नये रास्ते से इस देश न आजादी ही उमी तरह अहिंसा को अपना सत्य रज इस देश में रामराज्य की स्थापना होगी।

एक व्यक्ति यह क्यों हागी भी ?

महात्मा मेरे जीवन का कार्य है हर भारतीय को चाहे वह हिन्दू हो मुसलमान हा या और कोई भी यहाँ तक कि अंग्रेज भी और आगिर में समान दुनिया को अहिंसा में दीक्षित करना, जिसमें यह ममार राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक सारे मामलों को अहिंसा से निपटा सके। मेरे इस आत्म दिवस के प्रार्थना के दिन में भगवान् मे इसी के लिए प्रायना करता हूँ उम भगवान् मैं जिसके बिना मैं एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता चाहे मैं पानी और हवा के बिना भी जिंदा रह सकूँ। ईश्वर ही जीवन है गत्य है प्रकाश है। बड़ा प्रेम है यही उच्चतम अर्थ है। और प्रायना को मैं जीवन में सबसे यही चीज मानता

हैं। यह इमनिण बि मुक्त महमूम हाता है कि जियन हमें बनाया है उसर नजगर हम रमा प्रायना क जगिय जावर उगवा घागार्या प्राण करे मरन ह। प्रायना मन की बहु हानन यताता है जियम घाना घममयना घार भगवान् परपुगना पर निभग्ना रहता है। मभ प्रायना म विन्वास है। जिय तरु गगर का न घान म घागीगिय तन्तुग्नी गगय हाता है उमा तरु घगर प्रायना म हुन्व न घाया जाय मा हागि म्याग्घर बिगता है। बडि हम जावन मपय वा एक माम गर हा य जाता है घोर कभा-नभी गाम मरु न माका तर पर घर हम घमरन कर रमी है नछिन थडा वा वा र मरा है। जय तर गम्प हा जाता है घोर जायन म मिर अपरा हायता है म बरत

मही है, वह आत्मा की उच्चतम अभिलाषा है। प्रार्थना में भावनाओं को तो महत्व है ही लेकिन उसी के साथ शब्दों का भी महत्व है। दीर्घकाल से उन शब्दों का प्राथना में प्रयोग करने साथ पवित्रता को जोड़ देता है। हमीसिए सस्कृत के पुराने मंत्र पुरान की धायतें बाइबिल के बचन इन सबकी प्रार्थना में बहुत घड़ी जगह ह लेकिन उम्हें तोने के मुताबिक रटना नहीं चाहिए। उन्हें समझने की जरूरत है। फिर आधम की प्रार्थनाओं में जो भजन गाये जाते ह उनका भी अपनी जगह है क्योंकि उनके पीछे एक इतिहास है। वे शारीरिक और मामसिक दोषों से मुक्त करत हे। सफवा घामिक आदमी किसी एक जाति और मुन्क का नहीं रहता वह तमाम दुनियाँ का हो जाता है। वह तमाम दुनियाँ की भलाई चाहता है। अपने दंग और दंग निवासियों की सेवा ससार और ससार का मानवा की सेवा का मोड़ियाँ ह। इन सीढ़िया पर चढ़ते चढ़ते और दुनियाँ की भलाई करते-करत ही आत्मी गुद भी मोन पा जाता है। ग उस उमूस को नहीं मानता जिनमें ज्यादा-म-ज्यादा आत्मियाँ की ज्यादा म ज्यादा भलाई बर्ही गयी है। मे गयकी भलाई चाहता हूँ। इसलिए मैं अपने गिदालन का सर्वोत्थम करता हूँ। सर्वोत्थम में वही म सग्न हो सकता है जिनके हृदय पर प्रेम का माघ्राय हो और जो गयभूत हिन का लिए गयभूता से प्रेम कर उनके हिन में मर मिटन का तयार हा। इसके लिए आत्म-संयम और चाय समय ज्यादा जरूरी ह और यह बिना

अथ्यात्म की नीव व मुमकिन नही है । धात्रवत समाजवाद  
 धीर साम्यवाद की बारी घषा है । तबिन यग-मधय मे  
 गाम्यया या समाजया कायन नही हा मरता । क्यारि  
 समाजया धार साम्यवाद का मरत ना मधया मुग मय  
 में प्रम धीर गान्ति है । मयिण वह भी अहिनर माधना म  
 गवोदय द्वाग ही कायम हा मरता है । जम ह्म पानी का  
 ठग करना था ना उम धाग पर रगवर ठाहा नहा कर  
 मरत हीउ उमा मरत अरत हन गान्ति पाते ना पना  
 धार मरत भरा वा प्रगार कर हम उमहामित मही कर  
 मरत । अरत अरत म उजाना निरम मरता है ना धृताम  
 प्रेम । हिन्दुत्वान में अरती पानना धात्रना गीव म ररत ह



## उपसंहार

स्थान एक सफेद चारर

समय एक सायंकाल ग म घनेक दिन

[एक सफेद चारर पर निम्नलिखित दृश्य बिन्न पड़ते हैं—

बिड़सा मंत्र के चीगान में गांधीजी सायंकाल को प्रायना-स्वप्न पर धा रहे ह। वे उषोही प्रार्थना के तस्त पर पड़ते ह भीड़ में से माधुराम गोडसे नामक एक व्यक्ति गांधी जी की ओर बढ़ता है। गांधीजी की पीथी मनु गांधी यह समझ कि यह गांधीजी के पर छूने धा रहा है उसे रोकने की कोशिश करती ह, पर वह मनु गांधी को भब्रता बेकर धाग जाता है। मनु गांधी के हाथ में कुछ धोजें ह जो इस धबके के कारण गिर पड़ती ह। अथ मनु गांधी उन चीजों की उठा रही ह उसी समय गोडसे तीन गोतियाँ खताता है जो गांधीजी को लगती ह। ओर वे "हे राम" कह धरानायी होते हैं। ये सब बातें कुछ सचिण्डों में होती ह। सारी प्रायना सभा में एब्रम अयत पुषत मब जाती है। गोडसे पकड़ लिया जाता है।

यह दृश्य सुप्त होकर गांधीजी की धर्यों का दृश्य बितायो पड़ता है। अघार भीड़।

यह दृश्य सुप्त होकर राजघाट पर गांधीजी की बिता का दृश्य दिग् पड़ता है।

यह दृश्य सुप्त होकर प्रयाग में गांधीजी की अस्थि बिसजन का जुसूस दिखायी देता है । अपार जन समूह ।

यह दृश्य सुप्त होकर धनक तीर्थ स्थलों में गांधीजी की जो अस्थि बिसजन की गयी थी उससे कई दृश्य दिखायी देते हैं ।

प्रयाग में गांधीजी के अस्थि बिसजन दृश्य से लेकर इन दृश्यों में 'रघुपति राघव राजा राम' की रामपुत्र और राष्ट्रपिता की जय के मारे भी मृत पड़ते हैं । परन्तु इस रामपुत्र और इन जय-अपहार के मारों के बावजूब ये सारे दृश्य अक्षन्त चारणिक हैं । ]

धनिक

ममान

## उपसंहार

स्मान एक सफेद चादर

समय एक सायंकाल स म अनेक दिन

[एक सफेद चादर पर निम्नलिखित दृश्य चित्र पड़ते हैं—

बिड़सा भवन के चौगान में गान्धीजी सायंकाल को प्रायना-स्यस पर आ रहे ह। वे ज्योंही प्रायना के तहत पर चढ़ते ह भीड़ में से मामूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति गान्धी जी को धार चढ़ता है। गान्धीजी की पौत्री मनु गान्धी यह समझ कि यह गान्धीजी के पैर छून आ रहा है, उसे रोकने की कोशिश करती ह पर वह मनु गान्धी को घबरा बेकर धागे जाता है। मनु गान्धी क हाथ में कुछ चीजें ह जो इस घबके के कारण गिर पड़ती ह। जब मनु गान्धी उन चीजों को उठा रही ह उसी समय गोडसे तीन गोसियाँ बसाता है सो गान्धीजी को सगती ह। और वे "हे राम" कह धराशापी होते ह। ये सब बातें कुछ सकिण्डों में होती ह। सारी प्रायना सभा में एकदम उपस-पुधस मच जाती है। गोडसे पकड़ लिया जाता है।

यह दृश्य सुप्त होकर गान्धीजी की धर्यों का दृश्य चित्रायो पड़ता है। धपार भीड़।

यह दृश्य सुप्त होकर राजघाट पर गान्धीजी की चिता का दृश्य चित्र पड़ता है।

यह दृश्य सुप्त होकर प्रयाग में गांधीजी की अस्ति विस  
जन का जुलूस दिखायी देता है । अपार जन समूह ।

यह दृश्य सुप्त होकर अमर तीर्थ-स्थलों में गांधीजी की  
जा मम्म विसर्जन की गयी थी उसका कई दृश्य दिखायी देता है ।

प्रयाग में गांधीजी के अस्ति विसर्जन दृश्य से लेकर इन  
दृश्यों में 'रघुपति राघव राजा राम' की रामधुन और राष्ट्र-  
पिता की जय के मारे भी सुन पड़ता है । परन्तु इस रामधुन और  
इन जय-जयकार के मारों के बावजूद ये मार दृश्य अत्यन्त  
कारणिक है । ]

मधनिषा

ममाण